



भारत का राजपत्र The Gazette of India

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 28] नई दिल्ली, शनिवार, जुलाई 9, 1977/आषाढ़ 18, 1899
No. 28] NEW DELHI, SATURDAY, JULY 9, 1977/ASADHA 18, 1899

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके
Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (ii)

PART II—Section 3—Sub-section (ii)

(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और (संघ राज्य क्षेत्र प्रशासनों को छोड़कर)
केन्द्रीय प्राधिकारियों द्वारा जारी किये गए सांविधिक आदेश और अधिसूचनाएं

Statutory Orders and Notifications issued by the Ministries of the Government of India
(other than the Ministry of Defence) by Central Authorities
(other than the Administrations of Union Territories)

भारत निर्वाचन आयोग

शुद्धि पत्र

नई दिल्ली, 20 जून, 1977

का० प्र० 2225.—भारत निर्वाचन आयोग की तारीख 25 मई, 1977 की अधिसूचना सं० 154/गुज०/77 में "मन्त्रि," के पश्चात् आने वाले शब्द "गृह विभाग" के स्थान पर, "शिक्षा विभाग" शब्द रखे जायेंगे।

[सं० 154/गुज०/77]

वी० नागसुब्रमण्यन, मन्त्रि

परीध, न्याय और कम्पनी कार्य मंत्रालय

(कम्पनी कार्य विभाग)

नई दिल्ली 23 जून, 1977

का० प्र० 2226.—एकाधिकार एवं निरन्धनकारी व्यापार प्रथा अधिनियम, 1969 (1969 का 51) की धारा 26 की उपधारा (3) के अनुसरण में, केन्द्रीय सरकार एतद्वारा कथित अधिनियम के अन्तर्गत संसद अधिनियम सं० कम्पनी लिमिटेड के पंजीकरण (पंजीकरण प्रमाणपत्र संख्या 43/70) के निरस्तकरण को अधिसूचित करती है।

[संख्या 9/94/70-एम० II]

सी० खुशालदास, उप-मन्त्रि

ELECTION COMMISSION OF INDIA

CORRIGENDUM

New Delhi, the 20th June, 1977

S.O. 2225.—In the Election Commission of India Notification No. 154/GJ/77, dated the 25th May, 1977, the words "Home Department" occurring after the words "Secretary to Government", may be substituted by the words "Education Department".

[No. 154/GJ/77]

V. NAGASUBRAMANIAN, Secy.

MINISTRY OF LAW, JUSTICE & COMPANY AFFAIRS

(Department of Company Affairs)

New Delhi, the 23rd June, 1977

S.O. 2226.—In pursuance of sub-section (3) of Section 26 of the Monopolies and Restrictive Trade Practices Act, 1969 (54 of 1969), the Central Government hereby notifies the cancellation of the Registration of M/s. Assam Match Co. Limited under the said Act (Certificate of Registration No. 43/70).

[F. No. 9/94/70-M. II]

C. KHUSHALDAS, Dy. Secy.

(न्याय विभाग)

नोटिस

नई दिल्ली, 24 जून, 1977

का० प्रा० 2227.—इसके द्वारा, लेख्य प्रमाणक नियम (नोटरीज रूलस) 1956 के नियम 6 के अनुसार, सक्षम प्राधिकारी द्वारा सूचना दी जाती है कि उक्त प्राधिकारी को श्री ओ० पी० चौधरी, एडवोकेट, बी-25, पार्लियामेंट स्ट्रीट, नई दिल्ली-1 ने उक्त नियमों के नियम 4 के अधीन, दिल्ली संघ शासित क्षेत्र में लेख्य प्रमाणक (नोटरी) का काम करने की नियुक्ति के लिये आवेदन-पत्र भेजा है।

उक्त व्यक्ति की लेख्य प्रमाणक के रूप में नियुक्ति के बारे में यदि कोई आपत्तियाँ हों, तो वे इस नोटिस के प्रकाशित होने के चौदह दिन के अन्दर नीचे हस्ताक्षर करने वाले को लिख कर भेज दिये जायें।

[सं० 22/35/77-न्यायिक-(बी)]

(Department of Justice)

NOTICE

New Delhi, the 24th June, 1977

S.O. 2227.—Notice is hereby given by the Competent Authority in pursuance of rule 6 of the Notaries Rules, 1956, that application has been made to the said Authority, under rule 4 of the said Rules, by Shri O. P. Chaudhry, Advocate, B-25 Parliament Street New Delhi-I for appointment as a Notary to practise in the Union territory of Delhi.

2. Any objection to the appointment of the said person as a Notary may be submitted in writing to the undersigned within fourteen days of the publication of this Notice.

[No. F. 22/35/77-Judl. (B)]

नोटिस

नई दिल्ली, 29 जून, 1977

का० प्रा० 2228.—इसके द्वारा, लेख्य प्रमाणक नियम (नोटरीज रूलस) 1956 के नियम 6 के अनुसार, सक्षम प्राधिकारी द्वारा सूचना दी जाती है कि उक्त प्राधिकारी को श्री अजित कुमार दत्ता, एडवोकेट, 74/1 आचार्य जगदीश बोस रोड, कलकत्ता ने उक्त नियमों के नियम 4 के अधीन, कलकत्ता में लेख्य प्रमाणक (नोटरी) का काम करने की नियुक्ति के लिये आवेदन पत्र भेजा है।

उक्त व्यक्ति की लेख्य प्रमाणक के रूप में नियुक्ति के बारे में यदि कोई आपत्तियाँ हों तो वे इस नोटिस के प्रकाशित होने के चौदह दिन के अन्दर नीचे हस्ताक्षर करने वाले को लिख कर भेज दिये जायें।

[संख्या 22/36/77-न्याय]

भार० वासुदेवन, सक्षम प्राधिकारी

NOTICE

New Delhi, the 29th June, 1977

S.O. 2228.—Notice is hereby given by the Competent Authority in pursuance of rule 6 of the Notaries Rules, 1956, that application has been made to the said Authority, under rule 4 of the said Rules, by Shri Ajit Kumar Datta, Advocate 74/1 Acharya Jagadish Bose Road, Calcutta for appointment as a Notary to practise in Calcutta.

2. Any objection to the appointment of the said person as a Notary may be submitted in writing to the undersigned within fourteen days of the publication of this Notice.

[No. 22/37/77-Jus.]

R. VASUDEVAN, Competent Authority

गृह मंत्रालय

नई दिल्ली, 24 जून, 1977

का० प्रा० 2229.—केन्द्रीय विनियम कर अधिनियम, 1956 (1956 का 74) की धारा 8 की उप-धारा (5) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार एन० द्वारा भारत सरकार, गृह मंत्रालय की ता० 17-6-75 की अधिसूचना सं० एस० प्रा० 1991 में निम्नलिखित संशोधन करती है, अर्थात् :—

उक्त अधिसूचना में "उक्त संगठन के किसी अधिकारी द्वारा जारी किया गया प्रमाण-पत्र" शब्दों के स्थान पर "उक्त संगठन द्वारा इस संबंध में प्राधिकृत अधिकारी द्वारा जारी किया गया प्रमाण-पत्र" शब्द प्रतिस्थापित किये जायेंगे।

[सं० यू-15034/20/76-दिल्ली]

प्रभात कुमार, निदेशक

MINISTRY OF HOME AFFAIRS

New Delhi, the 24th June, 1977

S.O. 2229.—In exercise of the powers conferred by sub-section (5) of section 8 of the Central Sales Tax Act, 1956 (74 of 1956), the Central Government hereby makes the following amendment in the notification of the Government of India in the Ministry of Home Affairs No. S.O. 1991 dated the 17th June, 1975, namely :—

In the said notification, for the words "a certificate issued by any of the officers of the said organisation", the words "a certificate issued by an officer authorised in this behalf by that organisation" shall be substituted.

[No. U. 15034/20/76-Delhi]

PRABHAT KUMAR, Director

विज्ञान मंत्रालय

(राजस्व और वीक्षण विभाग)

(राजस्व पत्र)

नई दिल्ली, 5 अप्रैल, 1977

प्राय-कर

का० प्रा० 2230.—सर्वसाधारण की जानकारी के लिये यह अधिसूचना किया जाता है कि विहित प्राधिकारी—मजिब, विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, नई दिल्ली ने प्राय-कर अधिनियम, 1961 की धारा 35 की उप-धारा (2क) के प्रयोजनों के लिये निम्नलिखित वैज्ञानिक अनुसंधान कार्यक्रम को नीचे विनिर्दिष्ट अवधि के लिये अनुमोदित किया है।

वैज्ञानिक अनुसंधान कार्यक्रम :—धारा में लुटि का पता लगाने और उसे निकालने के लिये वस्त्र विसर्पण यंत्र के लिये धागा निकालने का इलेक्ट्रॉनिक यंत्र
मैसर्स किनावीवाला भार० जे० के० इंडस्ट्रीज
मिकोला मोकटाई ताका के निकट, अग्निम
स्टार्च के पान, अहमदाबाद

प्रारम्भ की तारीख :—अक्तूबर, 1976

पूर्ण होने की अनुमानित तारीख :—मार्च, 1979

अनुमानित व्यय :—35,000 रु०

अहमदाबाद वस्त्र उद्योग अनुसंधान संगठन, जहाँ उक्त कार्यक्रम का प्रायोजित किया गया है, प्राय-कर अधिनियम, 1922 की धारा 10(2) (13) के अधीन अधिसूचना सं० 211, तारीख 10 अप्रैल, 1948 द्वारा अनुमोदित है।

[सं० 1712(का० सं० 203/39/77-आई० टी० ए०-II)]

MINISTRY OF FINANCE
(Department of Revenue & Banking)

(Revenue Wing)

New Delhi, the 5th April, 1977

INCOME-TAX

S.O. 2230.—It is hereby notified for general information that the following Scientific Research Programme has been approved for the period specified below for the purposes of sub-section (2A) of section 35 of the Income-tax Act, 1961, by the prescribed authority, Secretary, Department of Science & Technology, New Delhi.

Scientific Research Programme.—Electronic yarn clearing device for textile winding machine to detect and eliminate faults in the yarn.

Sponsored by.—M/s. Kinavivala RJK Industries near Nicola Octroi Naka behind Anil Starch, Ahmedabad.

Date of Commencement.—October, 1976.

Anticipated date of completion.—March, 1979.

Estimated expenditure.—Rs. 35,000.

Ahmedabad Textile Industry's Research Association where the above programme has been sponsored stands approved u/s. 10(2)(xiii) of the Income-tax Act, 1922 by notification No. 211 dated 10th April, 1948.

[No. 1712/(F. No. 203/39/77-ITA. II)]

नई दिल्ली, 30 अप्रैल, 1977

आय-कर

का० आ० 2232.—सर्वसाधारण की जानकारी के लिये अधिसूचित किया जाता है कि विहित प्राधिकारी, अर्थात् भारतीय समाज विज्ञान अनुसंधान परिषद् ने निम्नलिखित संस्था को आय-कर अधिनियम, 1961 की धारा 35 की उप-धारा (1) के खंड (ii) के प्रयोजनों के लिये निम्नलिखित शर्तों पर अनुमोदित किया है, अर्थात् :—

- (i) इस छूट के अधीन सौराष्ट्र विश्वविद्यालय, राजकोट द्वारा संगृहीत निधियों का उपयोग केवल सामाजिक विज्ञान की प्रगति में अनुसंधान के लिये ही किया जायेगा।
- (ii) यह कि उक्त विश्वविद्यालय छूट के अधीन संगृहीत निधियों का हिस्सा पुश्तक से रखेगा।
- (iii) सौराष्ट्र विश्वविद्यालय, भारतीय समाज विज्ञान अनुसंधान परिषद् नई दिल्ली को छूट के अधीन संगृहीत निधि दक्षित करते हुए और वह रीति दक्षित करते हुए जिसमें निधियों का उपयोग किया गया है कि एक वार्षिक रिपोर्ट भेजेगा।

संस्था

सौराष्ट्र विश्वविद्यालय, राजकोट।

यह अधिसूचना 1 अप्रैल, 1977 से प्रभावी है।

[सं० 1749 (का० सं० 203/21/77-आइ० टी० ए-II)]

New Delhi, the 30th April, 1977

INCOME TAX

S.O. 2231.—It is hereby notified for general information that institution mentioned below has been approved by Indian Council of Social Science Research, the prescribed authority for the purposes of clause (iii) of sub-section (1) of Section 35 of the Income-tax Act, 1961, subject to the following conditions :—

- (i) The funds collected by Saurashtra University, Rajkot, under this exemption will be utilised exclusively for promotion of research in Social Sciences.
- (ii) That the University shall maintain separate accounts of the funds collected by them under the exemption.
- (iii) That the Saurashtra University shall send an Annual Report to the Indian Council of Social Science Research, New Delhi, showing the funds collected under the exemption and the manner in which the funds were utilised.

INSTITUTION

SAURASHTRA UNIVERSITY, RAJKOT.

This notification is effective from 1st April, 1977.

[No. 1749/F. No. 203/21/77-ITA. II]

का० आ० 2232.—सर्वसाधारण की जानकारी के लिये अधिसूचित किया जाता है कि विहित प्राधिकारी अर्थात् भारतीय समाज विज्ञान अनुसंधान परिषद् ने निम्नलिखित संस्था को आय-कर अधिनियम, 1961 की धारा 35 की उप-धारा (1) के खंड (ii) के प्रयोजनों के लिये निम्नलिखित शर्तों पर अनुमोदित किया है, अर्थात् :—

- (i) इस छूट के अधीन दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय, सूरत द्वारा संगृहीत निधियों का उपयोग केवल सामाजिक विज्ञान की प्रगति में अनुसंधान के लिये ही किया जायेगा।
- (ii) यह कि उक्त विश्वविद्यालय छूट के अधीन संगृहीत निधियों का हिस्सा पुश्तक से रखेगा।
- (iii) दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय भारतीय समाज विज्ञान अनुसंधान परिषद् नई दिल्ली को छूट के अधीन संगृहीत निधि दक्षित करने हुए और वह रीति दक्षित करते हुए जिसमें निधियों का उपयोग किया गया है, एक वार्षिक रिपोर्ट भेजेगा।

संस्था

दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय, सूरत

यह अधिसूचना 1 अप्रैल, 1977 से प्रभावी है।

[सं० 1751 (का० सं० 203/104/76-आइ० टी० ए-II)]

S.O. 2232.—It is hereby notified for general information that the University mentioned below has been approved by the Indian Council of Social Science Research, the prescribed authority for the purposes of clause (iii) of sub-section (1) of Section 35 of the Income-tax Act, 1961, subject to the following conditions :—

- (i) The funds collected by the South Gujarat University, Surat, under this exemption will be utilised exclusively for promotion of research in Social Sciences.
- (ii) That the University shall maintain separate accounts of the funds collected by them under the exemption.
- (3) That the South Gujarat University, Surat, shall send an Annual report to the Indian Council of Social Science Research, New Delhi, showing the funds collected under the exemption and the manner in which the funds were utilised.

INSTITUTION

THE SOUTH GUJARAT UNIVERSITY, SURAT.

The notification takes effect from 1st April, 1977.

[No. 1751 (F. No. 203/104/76-ITA. II)]

का० आ० 2233.—इस विभाग की अधिसूचना 1641 (का० सं० 203/11/77-आइ० टी० ए-II) तारीख 21 जनवरी, 77, के अनुसरण में सर्वसाधारण की जानकारी के लिये यह अधिसूचित किया जाता है कि निम्नलिखित संस्था को, विहित प्राधिकारी अर्थात् भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् द्वारा आय-कर अधिनियम, 1961 की धारा 35 की उप-धारा

(1) के खंड (ii) के प्रयोजनार्थ अनुमोदित किया गया है। यह अधिसूचना 1 अप्रैल, 1976 से प्रभावी है।

संस्था

राष्ट्रीय डेरी विकास बोर्ड, आनन्द।

[सं० 1739 (फा० सं० 203/11/77 आ० क० अ० II)]

S.O. 2233.—In continuation of this Department's Notification No. 1641 (F. No. 203/11/77-ITA.II) dated 28th January, 1977, it is hereby notified for general information that the institution mentioned below has been approved by Indian Council of Agricultural Research, the prescribed authority for the purposes of clause (ii) of sub-section (1) of section 35 of the Income-tax Act, 1961. This notification is effective from 1st April 1976.

INSTITUTION

NATIONAL DAIRY DEVELOPMENT BOARD, ANAND.

[No. 1739 (F. No. 203/11/77-ITA.II)]

का० आ० 2234—सर्वसाधारण की जानकारी के लिये अधिसूचित किया जाता है कि विहित प्राधिकारी, अर्थात् भारतीय समाज विज्ञान अनुसंधान परिषद् ने निम्नलिखित संस्था को आय-कर अधिनियम, 1961 की धारा 35 की उप-धारा (1) के खंड (iii) के प्रयोजनों के लिये निम्नलिखित शर्तों पर अनुमोदित किया है, अर्थात्:—

- (i) इस छूट के अधीन सागर विश्वविद्यालय, सागर द्वारा संगृहीत निधियों का उपयोग केवल सामाजिक विज्ञान की प्रगति में अनुसंधान के लिये ही किया जायेगा।
- (ii) यह कि उक्त विश्वविद्यालय छूट के अधीन संगृहीत निधियों का हिमाव पृथक् से रखेगा।
- (iii) सागर विश्वविद्यालय, भारतीय समाज विज्ञान अनुसंधान परिषद् नई दिल्ली, की छूट के अधीन संगृहीत निधि दर्शित करने हुए और वह रीति दर्शित करने हुए जिसमें निधियों का उपयोग किया गया है, एक वार्षिक रिपोर्ट भेजेगा।

संस्था

सागर विश्वविद्यालय, सागर म०प्र०

यह अधिसूचना 1 अप्रैल, 1977 से प्रभावी है।

[सं० 1750 (फा० सं० 203/57/77-आई० टी० ए० II)]

S.O. 2234.—It is hereby notified for general information that the institution mentioned below has been approved by the Indian Council of Social Science Research the prescribed authority for the purposes of clause (iii) of sub-section (1) of section 35 of the Income-tax Act, 1961, subject to the following conditions:—

- (1) The funds collected by the Saugar University, Saugar under this exemption will be utilised exclusively for promotion of research in Social Sciences;
- (2) That the University shall maintain separate accounts of the funds collected by them under the exemption;
- (3) That the Saugar University, shall send an Annual report to the Indian Council of Social Science Research, New Delhi, showing the funds collected under the exemption and the manner in which the funds were utilised.

INSTITUTION

SAUGAR UNIVERSITY, SAUGAR, M.P.

This notification takes effect from 1st April, 1977.

[No. 1750 (F. No. 203/57/77-ITA.II)]

का० आ० 2235—इस विभाग की अधिसूचना सं० 730 (फा० सं० 203/64/73-आई० टी० ए०-2), तारीख 3 अक्टूबर, 1974 के अनुक्रम में सर्वसाधारण की जानकारी के लिये यह अधिसूचित किया जाता है कि निम्नलिखित संस्था को, विहित प्राधिकारी अर्थात् भारतीय समाज विज्ञान अनुसंधान परिषद् द्वारा, आय-कर अधिनियम, 1961 की धारा 35 की उप-धारा (1) के खंड (iii) के प्रयोजनार्थ अनुमोदित किया गया है। यह अधिसूचना 1 अप्रैल, 1977 से प्रभावी है।

संस्था

सावर श्रम सम्बन्ध संस्थान, जमशेदपुर।

[सं० 1740 (फा० सं० 203/116/76-आ० क० अ०-II)]

जे० पी० शर्मा, उप-सचिव

S.O. 2235.—In continuation of this Department's notification No. 730 (F. No. 203/64/73-ITA II) dated 3rd October, 1974, it is hereby notified for general information that the institution mentioned below has been approved by the Indian Council of Social Science Research, the prescribed authority for the purposes of clause (iii) of sub-section (1) of Section 35 of the Income-tax Act, 1961. This notification is effective from 1st April, 1977.

INSTITUTION

XAVIER LABOUR RELATIONS INSTITUTE, JAMSHEDPUR.

[No. 1740 (F. No. 203/116/76-ITA II)]

J. P. SHARMA, Dy. Secy.

वैकिंग पक्ष

नई दिल्ली, 21 जून, 1977

का० आ० 2236—1 जून, 1977 को कारोबार बन्द हो जाने के बाद से, स्वयं अपने अनुरोध पर श्री जे० सी० लूथर के भारतीय रिजर्व बैंक के उप गवर्नर का पदभार छोड़ देने के परिणाम स्वरूप, उनकी सेवाएं केन्द्रीय प्रत्यक्ष बोर्ड (राजस्व पक्ष), नई दिल्ली को फिर से सौंप दी गयीं।

[संख्या एक० 7/2/76-बी० ओ०-I]

बलदेव सिंह, संयुक्त सचिव

(Banking Wing)

New Delhi, the 21st June, 1977

S.O. 2236.—Consequent on the relinquishment, at his own request, of the charge of his office as Deputy Governor in the Reserve Bank of India, as at the close of business on 1st June, 1977, the services of Shri J.C. Luther, were replaced at the disposal of the Central Board of Direct Taxes, (Revenue Wing), New Delhi.

[No. F. 7/2/76-BO.I]

BALDEV SINGH, Jt. Secy.

भारतीय रिजर्व बैंक

(निवेशो मुद्रा नियंत्रण विभाग)

बम्बई, 9 जून, 1977

(केन्द्रीय कार्यालय)

का० आ० 2237—भारत सरकार के वित्त मंत्रालय की दिनांक 25 मितम्बर, 1958 की अधिसूचना सं० एफ आई (67)/ई सी/57 के अनुगण में भारतीय रिजर्व बैंक एतद्वारा यह निदेश देता है कि दिनांक 4 दिसम्बर, 1958 की उसकी अधिसूचना सं० एफ ई आर ए 168/58-प्रारम्भी में निम्नलिखित संशोधन किया जाए (इसके बाद से "उक्त अधिसूचना" के रूप में उल्लेख किया जाये) अर्थात्—

उक्त अधिसूचना की अनुसूची में "इंडियन ओवरसीज बैंक" की प्रविष्टि के बाद "कर्नाटक बैंक लि०" प्रविष्टि का सन्निवेश किया जाए।

[अधिसूचना सं० एफ ई आर ए-44/77-आरबी]

पी० आर० नांगिया, उप-गवर्नर

RESERVE BANK OF INDIA

(Foreign Trade Control Deptt.)

CENTRAL OFFICE

Bombay, the 9th June, 1977

S.O. 2237.—In pursuance of the Notification of the Government of India in the Ministry of Finance No. F.I. (67)EC/57 dated 25th September 1958, the Reserve Bank of India hereby directs that the following amendments shall be made in its Notification No. FERA. 168/58-RB dated 4th December, 1958 (hereinafter referred to as "the said Notification") namely :

In the schedule to the said Notification after the entry "Indian Overseas Bank" the entry "Karnataka Bank Ltd." shall be inserted.

[Notification No. FERA-44/77-RB]

P. R. NANGIA, Dy. Governor.

कार्यालय प्रायकर आयुक्त, दिल्ली (केन्द्रीय), नई दिल्ली

नई दिल्ली, 22 जून, 1977

क्रा० प्रा० 2238.—प्रायकर अधिनियम (1961 की 43) की धारा 287 के अनुसार, भारत सरकार जिन संज्ञात्मक (राजस्व तथा बीमा विभाग) नई दिल्ली के आदेश एफ सं० 385/83/73-आई० टी० बी० दिनांक 5-7-1974, के अंतर्गत केन्द्रीय सरकार द्वारा अधिभूत तथा निर्दिष्ट निम्नलिखित निर्धारितियों, जिनका दिनांक वर्ष 1975-76 के दौरान निर्धारण हुआ है, के नाम तथा उनसे संबंधित अन्य विवरणों को एन्र द्वारा प्रकाशित किया जाता है।

- (1) व्यष्टियों या हि० अ० कुटुम्बों के रूप में, जिनका एक लाख से अधिक की आय पर निर्धारण हुआ है।
- (2) कम्पनियों के रूप में, जिनका दस लाख से अधिक की आय पर निर्धारण हुआ है।
- (अ) सभी व्यष्टियों तथा हिन्दु अधिभूत कुटुम्बों के नाम जिनका वित्तीय वर्ष 1975-76 के दौरान एक लाख रुपये या अधिक की आय पर निर्धारण हुआ है।
- (क) प्राप्ति 'व्यष्टि' व्यक्ति को प्रकट करना है, 'हि० अ० कु०' हिन्दु अधिभूत कुटुम्ब को प्रकट करना है। व 'क०' कम्पनियों को प्रकट करना है।
- (ख) निर्धारण वर्ष को प्रकट करता है।
- (ग) विवरणों में दिखाई गई आय को प्रकट करता है।
- (घ) निर्धारित आय को प्रकट करता है।
- (ङ) देय कर को प्रकट करता है।
- (च) अदा किये गये कर को प्रकट करता है।

- (1) श्री ए० एच० डालमिया, 4-सिधिया हाउस, नई दिल्ली।
(क) 'व्यष्टि' (ख) 1973-74 (ग) 104590 (घ) 114117 (ङ) 44277 (च) 41994
- (2) श्री अनुग डालमिया, 4-सिधिया हाउस, नई दिल्ली। -
(क) 'व्यष्टि' (ख) 1975-76 (ग) 180240 (घ) 180240 (ङ) 105540 (च) 105540
- (3) श्रीमती बेला डालमिया, 4-सिधिया हाउस, नई दिल्ली।
(क) 'व्यष्टि' (ख) 1975-76 (ग) 121820 (घ) 121820 (ङ) 61444 (च) 61444

- (4) सेठ देवेन्द्र कुमार मोदी मोदीनगर (यू० पी०)।
(क) 'व्यष्टि' (ख) 1975-76 (ग) 104420 (घ) 128330 (ङ) 35127 (च) 35127
- (5) श्रीमती गायत्री देवी मोदी, मोदीनगर (यू० पी०)।
(क) 'व्यष्टि' (ख) 1973-74 (ग) 119010 (घ) 171100 (ङ) 34230 (च) 34230
- (6) श्रीमती गिन्नी देवी मोदी, मोदीनगर (यू० पी०)।
(क) 'व्यष्टि' (ख) 1973-74 (ग) 81250 (घ) 109660 (ङ) 21390 (च) 21390
- (7) श्रीमती इन्दु डालमिया, 4-सिधिया हाउस, नई दिल्ली।
(क) 'व्यष्टि' (ख) 1975-76 (ग) 181085 (घ) 181085 (ङ) 101079 (च) 101079
- (8) श्री जे० एच० डालमिया, 4-सिधिया हाउस, नई दिल्ली।
(क) 'व्यष्टि' (ख) 1973-74 (ग) 105820 (घ) 112420 (ङ) 36901 (च) 36901
- (9) श्री जे० सी० खोमना, द्वारा मै० के० जी० खोमना एंड क० प्रा० लि०, 1-देशबन्धु गुप्ता रोड, नई दिल्ली।
(क) 'व्यष्टि' (ख) 1973-74 (ग) 117070 (घ) 132445 (ङ) 46888 (च) 46888
- (10) श्री जगदीश प्रसाद द्वारा मै० ईस्टर्न आई कारपोरेशन, आसफ अली रोड, नई दिल्ली।
(क) 'व्यष्टि' (ख) 1973-74 (ग) 124561 (घ) 153350 (ङ) 111412 (च) 119600
- (11) श्री कृष्ण कुमार मोदी, मोदीनगर, (यू० पी०)
(क) 'व्यष्टि' (ख) 1973-74 (ग) 137190 (घ) 138050 (ङ) 60272 (च) 58981
- (12) श्री के० जी० खोमना (एम० डी०) मै० के० जी०, खोमना, एंड क० प्रा० लि०, 1- देशबन्धु गुप्ता रोड, नई दिल्ली।
(क) 'व्यष्टि' (ख) 1973-74 (ग) 169960 (घ) 171138 (ङ) 67356 (च) 67356
- (13) श्री के० के० चौधरी, एफ०- 36, लाहा मंडी, नारायणा, नई दिल्ली।
(क) 'व्यष्टि' (ख) 1972-73 (ग) 132646 (घ) 143550 (ङ) 131823 (च) शून्य
(ख) 1974-75 (ग) 110000 (घ) 115720 (ङ) 104035 (च) 5036
- (14) श्री कैलाश लाम्बा द्वारा मै० कन्टीनेन्टल फार्मीशर्स, पंचकुला रोड, नई दिल्ली।
(क) 'व्यष्टि' (ख) 1973-74 (ग) 116508 (घ) 128880 (ङ) 88338 (च) 92000
- (15) श्री कैलाश लाम्बा, द्वारा मै० कन्टीनेन्टल फार्मीशर्स, पंचकुला रोड, नई दिल्ली।
(क) हि० प्रा० कु० (ख) 1973-74 (ग) 164703 (घ) 180360 (ङ) 75256 (च) 75256
- (16) सेठ मनमोहन मोदी, मोदीनगर, (यू० पी०)।
(क) 'व्यष्टि' (ख) 1973-74 (ग) 115110 (घ) 145950 (ङ) 15598 (च) 15598
- (17) सेठ एम० एल० मोदी, मोदी नगर (यू० पी०)।
(क) 'व्यष्टि' (ख) 1973-74 (ग) 122190 (घ) 165188 (ङ) 79647 (च) 79647
- (18) श्री एम० एच० डालमिया, 4-सिधिया हाउस, नई दिल्ली।
(क) 'व्यष्टि' (ख) 1973-74 (ग) 127000 (घ) 133132 (ङ) 36826 (च) 36826

- (19) श्री मदन लाम्बा, द्वारा मै० बोलगा रेस्टोरेन्ट, 10-बी, कनाट-प्लेस, नई दिल्ली ।
(क) 'व्यष्टि' (ख) 1973-74 (ग) 451715 (घ) 330670 (ङ) 286010 (च) 272488
- (20) श्री एम० एच० डालमिया, 4-सिंधिया हाउस, नई दिल्ली ।
(क) 'व्यष्टि' (ख) 1975-76 (ग) 136260 (घ) 137180 (ङ) 28994 (च) 28994
- (21) श्री एन० एच० डालमिया, 4-सिंधिया हाउस, नई दिल्ली ।
(क) 'हि० प्र० कु०' (ख) 1975-76 (ग) 105715 (घ) 105715 (ङ) 52383 (च) 52383
- (22) श्री पराग डालमिया, 4-सिंधिया हाउस, नई दिल्ली ।
(क) 'व्यष्टि' (ख) 1975-76 (ग) 254955 (घ) 251955 (ङ) 191782 (च) 191782
- (23) श्री पृथ्वी राज, 12-सिंधिया लार्ड्स, अयपुर ।
(क) 'व्यष्टि' (ख) 1971-72 (ग) 136448 (घ) 137990 (ङ) 58215 (चापस देने योग्य) (च) 148860
(ख) 1972-73 (ग) 160360 (घ) 262020 (ङ) 25037 (चापस देने योग्य) (च) 140287
- (24) श्री प्रार० एच० डालमिया, 4-सिंधिया हाउस, नई दिल्ली ।
(क) 'व्यष्टि' (ख) 1975-76 (ग) 302100 (घ) 302100 (ङ) 191782 (च) 191782
- (25) सेठ मतीश कुमार मोदी, मोदीनगर (यू० पी०) ।
(क) 'व्यष्टि' (ख) 1973-74 (ग) 79170 (घ) 107720 (ङ) 25194 (च) 25194
- (26) सेठ सुरेश कुमार मोदी, मोदीनगर (यू० पी०) ।
(क) 'व्यष्टि' (ख) 1973-74 (ग) 151430 (घ) 169810 (ङ) 73838 (च) 73838
- (27) सेठ सुधीर कुमार मोदी, मोदीनगर (यू० पी०) ।
(क) 'व्यष्टि' (ख) 1973-74 (ग) 117280 (घ) 140810 (ङ) 41453 (च) 41453
- (28) श्रीमती उषा डालमिया, 4-सिंधिया हाउस, नई दिल्ली ।
(क) 'व्यष्टि' (ख) 1975-76 (ग) 205480 (घ) 205480 (ङ) 123494 (च) 123494
- (29) श्री बी० एच० डालमिया, 4-सिंधिया हाउस, नई दिल्ली ।
(क) 'व्यष्टि' (ख) 1975-76 (ग) 156190 (घ) 156190 (च) 39211 (घ) 39211
- (30) श्रीमती विद्यावती, द्वारा मै० बोलगा रेस्टोरेन्ट, 19-बी, कनाट-प्लेस, नई दिल्ली ।
(क) 'व्यष्टि' (ख) 1973-74 (ग) 102639 (घ) 107550 (ङ) 74221 (च) 62229
- (31) सेठ योनेन्द्र कुमार मोदी, मोदीनगर (यू० पी०)
(क) 'व्यष्टि' (ख) 1973-74 (ग) 80240 (घ) 108650 (ङ) 25225 (च) 25225
- (32) श्री आई० एच० डालमिया, 4-सिंधिया हाउस, नई दिल्ली ।
(क) 'व्यष्टि' (ख) 1973-74 (ग) 114080 (घ) 124680 (ङ) 53882 (च) 51420
- (ब) कंपनियों के नाम जितका वित्तीय वर्ष 1975-76 के दौरान वस लाख रुपये या अधिक की आय पर निर्धारण हुआ है ।

- (1) मै० भारत निधि लि०, 7-बहादुर शाह जफर मार्ग, नई दिल्ली ।
(क) 'क०' (ख) 1974-75 (ग) 1376167 (घ) 1375790 (ङ) 326644 (च) 326644

- (2) मै० राविपूज लि०, 34-मोखला इन्डस्ट्रियल एस्टेट, नई दिल्ली
(क) 'क०' (ख) 1973-74 (ग) 3790610 (घ) 3819544 (ङ) 2205784 (च) 2205784

[एफ० सं० एस० आई०/पब०(1)/सी/76-77]
एन० एम० राववत, आयुक्त

OFFICE OF THE COMMISSIONER OF INCOME-TAX

CALCUTTA, NEW DELHI

New Delhi, the 22nd June, 1977

S.O. 2238.—As authorised and directed by the Central Government vide Government of India, Ministry of Finance (Department of Revenue & Insurance), New Delhi's Order F. No. 385/83/73-IT(B) dated 5-7-1974, in terms of section 287 of the Income tax Act, 1961 (43 of 1961), the names and other specified particulars relating to assessee :—

- (1) being Individuals or Hindu undivided Families who have been assessed on an income of more than one lakh of rupees,

- (2) being Firms Association of Persons or Companies who have been assessed on an income of more than ten lakhs of rupees,

assessed during the financial year 1975-76 are hereby published.

- (I) Names of all Individuals and HUFs who have been assessed on an income of rupees one lakh or more during the financial year 1975-76.

- (i) Indicates Status — 'I' for Individuals, 'H' for Hindu undivided Families and 'C' for Companies.

- (ii) Indicates — Assessment year.

- (iii) Indicates — Income returned.

- (iv) Indicates — Income assessed.

- (v) Indicates — Tax payable; and

- (vi) Indicates — Tax paid.

- (1) Sh. A. H. Dalmia, 4-Scindia House, New Delhi.

- (i) 'I' (ii) 1973-74 (iii) 104590 (iv) 114117 (v) 44277 (vi) 41994

- (2) Sh. Anurag Dalmia, 4-Scindia House, New Delhi.

- (i) 'I' (ii) 1975-76 (iii) 180240 (iv) 180240 (v) 105540 (vi) 105540

- (3) Smt. Bela Dalmia, 4-Scindia House, New Delhi.

- (i) 'I' (ii) 1975-76 (iii) 121820 (iv) 121820 (v) 61444 (vi) 61444

- (4) Seth Devendra Kumar Modi, Modi Nagar (U.P.).

- (i) 'I' (ii) 1973-74 (iii) 104420 (iv) 128330 (v) 35127 (vi) 35127

- (5) Smt. Gaytri Devi Modi, Modi Nagar (U.P.).

- (i) 'I' (ii) 1973-74 (iii) 119010 (iv) 171100 (v) 34230 (vi) 34230

- (6) Smt. Ginni Devi Modi, Modi Nagar (U.P.).

- (i) 'I' (ii) 1973-74 (iii) 81250 (iv) 109660 (v) 21390 (vi) 21390

- (7) Smt. Indu Dalmia, 4-Scindia House, New Delhi.

- (i) 'I' (ii) 1975-76 (iii) 181085 (iv) 181085 (v) 101079 (vi) 101079

- (8) Sh. J. H. Dalmia, 4-Scindia House, New Delhi.
(i) 'I' (ii) 1973-74 (iii) 105820 (iv) 112420 (v) 36901 (vi) 36901
- (9) Sh. J. C. Khosla C/o M/s. K. G. Khosla & Co. (P) Ltd., 1-Deshbandhu Gupta Road, New Delhi.
(i) 'I' (ii) 1973-74 (iii) 117070 (iv) 132445 (v) 46888 (vi) 46888
- (10) Sh. Jagdish Prasad C/o M/s. Eastern Art Corporation, Asaf Ali Road, New Delhi.
(i) 'I' (ii) 1973-74 (iii) 124561 (iv) 153350 (v) 111442 (vi) 119600
- (11) Sh. Krishan Kumar Modi, Modinagar (U.P.)
(i) 'I' (ii) 1973-74 (iii) 137190 (iv) 138050 (v) 60272 (vi) 58981
- (12) Sh. K. G. Khosla (M.D.) of M/s. K. G. Khosla & Co. (P) Ltd., 1-Deshbandhu Gupta Road, New Delhi.
(i) 'I' (ii) 1973-74 (iii) 169960 (iv) 171138 (v) 67356 (vi) 67356
- (13) Sh. K. K. Chopra, X-56, Loha Mandi, Naraina, New Delhi.
(i) 'I' (ii) 1972-73 (iii) 132646 (iv) 143550 (v) 131823 (vi) Nil.
(ii) 1974-75 (iii) 110000 (iv) 115720 (v) 104035 (vi) 5036.
- (14) Sh. Kailash Lamba, C/o M/s. Continental Furnishers, Panchkuia Road, New Delhi.
(i) 'I' (ii) 1973-74 (iii) 116508 (iv) 128880 (v) 88338 (vi) 92000
- (15) Sh. Kailash Lamba, C/o M/s. Continental Furnishers, Panchkuia Road, New Delhi.
(i) 'H' (ii) 1973-74 (iii) 164703 (iv) 180360 (v) 75256 (vi) 75256
- (16) Seth Man Mohan Modi, Modinagar (U.P.)
(i) 'I' (ii) 1973-74 (iii) 115110 (iv) 145950 (v) 15598 (vi) 15598
- (17) Seth M. L. Modi, Modinagar (U.P.)
(i) 'I' (ii) 1973-74 (iii) 122190 (iv) 165188 (v) 79647 (vi) 79647
- (18) Sh. M. H. Dalmia, 4-Scindia House, New Delhi.
(i) 'I' (ii) 1973-74 (iii) 127000 (iv) 133132 (v) 36826 (vi) 36826
- (19) Sh. Madan Lamba, C/o M/s. Vogla Restaurant, 10-B, Connaught Place, New Delhi.
(i) 'I' (ii) 1973-74 (iii) 451715 (iv) 330670 (v) 286010 (vi) 272488
- (20) Sh. N. H. Dalmia, 4-Scindia House, New Delhi.
(i) 'I' (ii) 1975-76 (iii) 136260 (iv) 137180 (v) 28994 (vi) 28994
- (21) Sh. N. H. Dalmia, 4-Scindia House, New Delhi.
(i) 'H' (ii) 1975-76 (iii) 105715 (iv) 105715 (v) 52383 (vi) 52383
- (22) Sh. Parag Dalmia, 4-Scindia House, New Delhi.
(i) 'I' (ii) 1975-76 (iii) 254955 (iv) 254955 (v) 191782 (vi) 191782
- (23) Sh. Prithvi Raj, 12-Civil Lines, Jaipur.
(i) 'I' (ii) 1971-72 (iii) 136448 (iv) 137990 (v) 58215 (Refundable) (vi) 148860
(ii) 1972-73 (iii) 160360 (iv) 262020 (v) 25037 (Refundable) (vi) 140287
- (24) Sh. R. H. Dalmia, 4-Scindia House, New Delhi.
(i) 'I' (ii) 1975-76 (iii) 302100 (iv) 302100 (v) 191782 (vi) 191782

- (25) Seth Satish Kumar Modi, Modinagar (U.P.)
(i) 'I' (ii) 1973-74 (iii) 79170 (iv) 107720 (v) 25194 (vi) 25194
- (26) Seth Suresh Kumar Modi, Modinagar (U.P.)
(i) 'I' (ii) 1973-74 (iii) 151430 (iv) 169810 (v) 73838 (vi) 73838
- (27) Seth Sudhir Kumar Modi Modinagar (U.P.)
(i) 'I' (ii) 1973-74 (iii) 117280 (iv) 140810 (v) 41453 (vi) 41453
- (28) Smt. Usha Dalmia, 4-Scindia House, New Delhi.
(i) 'I' (ii) 1975-76 (iii) 205480 (iv) 205480 (v) 123494 (vi) 123494
- (29) Sh. V. H. Dalmia, 4-Scindia House, New Delhi.
(i) 'I' (ii) 1975-76 (iii) 156190 (iv) 156190 (v) 39211 (vi) 39211
- (30) Smt. Vidyawanti C/o M/s. Volga Restaurant, 19-B, Connaught Place, New Delhi.
(i) 'I' (ii) 1973-74 (iii) 102639 (iv) 107550 (v) 74221 (vi) 62229
- (31) Seth Yogendra Kumar Modi, Modinagar (U.P.)
(i) 'I' (ii) 1973-74 (iii) 80240 (iv) 108650 (v) 25225 (vi) 25225
- (32) Sh. Y. H. Dalmia, 4-Scindia House, New Delhi.
(i) 'I' (ii) 1973-74 (iii) 114080 (iv) 124680 (v) 53882 (vi) 51420

(II) Names of Companies who have been assessed on an income of more than ten lakhs of rupees—during the financial year 1975-76.

- (1) M/s. Bharat Nidhi Ltd., 3-Bahadur Shah Zafar Marg, New Delhi.
(i) 'C' (ii) 1974-75 (iii) 1376167 (iv) 1375790 (v) 326644 (vi) 326644.
- (2) M/s. Sharpedge Ltd, 34-Chkhla Industrial Estate, New Delhi.
(i) 'C' (ii) 1973-74 (iii) 3790610 (iv) 3819544 (v) 2205784 (vi) 2205784

[F. No. SI/Pub. (I)/C/76-77]

N. S. RAGHAVAN, Commissioner.

(अध्यक्ष विभाग)

नई दिल्ली, 2 जून, 1977

का० प्रा० 2239—राष्ट्रपति, संविधान के अनुच्छेद 308 के परन्तुक तथा अनुच्छेद 148 के खंड (5) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए और भारतीय सेवा परीक्षा और सेवा विभाग में सेवा कर रहे व्यक्तियों के संबंध में नियंत्रक महालेखा परीक्षक से परामर्श करने के पश्चात् केन्द्रीय सिविल सेवा (पेंशन) नियम, 1972 में और प्रागे संशोधन करने के लिए निम्नलिखित नियम बनाते हैं, अर्थात् :—

- (1) इन नियमों का नाम केन्द्रीय सिविल सेवा (पेंशन) (बीया संशोधन) नियम 1977 है।
- (2) ये 1 जून, 1972 से प्रवृत्त हुए समझे जाएंगे।
- केन्द्रीय सिविल सेवा (पेंशन) नियम, 1972 के नियम 19 में, उप-नियम (1) में, खण्ड (ख) के स्थान पर निम्नलिखित द्वारा प्रतिस्थापित की जाएगी, अर्थात् :—

“(ख) अपनी पेंशन लेना बंद कर देता है या उपदान, जिसमें मृत्यु तथा सेवा-निवृत्ति उपदान भी सम्मिलित है, यदि कोई हो, को लौटाना बंद कर देता है और पिछली सैनिक सेवा की

अनुकूला सेवा के रूप में गणना करना है तो ऐसी घणा में वह सेवा जिसकी इस प्रकार गणना करने की अनुमति दी गई है, भारत में अथवा अन्यत्र उस कर्मचारी की युनिट या विभाग के भीतर या बाहर ऐसी सेवा तक निबन्धित रहेगी जिसके लिए संघर्ष भारत की मरमेकन निधि में से किया जाता है या जिसके लिए पेंशन का अंशदान सरकार द्वारा प्राप्त हो चुका है और बीच में ही गई पेंशन का वापस नहीं किया जाएगा लेकिन पेंशन के जिस अंश को पुनर्नियोजन पर बतन का नियतन करने के लिए हिमाव में नहीं लिया गया था, लौटा दिया जाएगा।”

व्याख्यात्मक आपन

केन्द्रीय सिविल सेवा (पेंशन) नियम, 1972 के नियम 19 के उप-नियम (1) के विद्यमान उपबंध पुनः नियोजित किए गए सैनिक पेंशन-भोगियों की, जिन्होंने सिविल पेंशन के लिए सैनिक सेवा की गणना करने का विकल्प दिया था, अत्यायी मित्र हो रहे थे। उनको उस अवधि के लिए भी पेंशन के अंश को लौटाना पड़ता था जिसके दौरान सरकार के अधीन उन्होंने किसी पद पर काम नहीं किया था। यह धारणा नहीं थी लेकिन धारणा उपर्युक्त उप-नियम में ठीक तरह से प्रतिबिम्बित नहीं की गई थी जिसके परिणाम-स्वरूप पुनः नियोजित पेंशन-भोगियों ने उस अवधि की पेंशन लौटा दी जिसके लिए नहीं लौटाया जाना था। संशोधित उप-नियम के अर्धन सही स्थिति सम्मिलित कर दी गई है और विभिन्न प्रशासनिक प्राधिकारियों को पिछले मामले की समीक्षा करने के लिए अलग से अनुरोध किया जा रहा है, ताकि पेंशन का जो अंश लौटा दिया गया था और जिसे लौटाया जाना जरूरी नहीं था, संबंधित व्यक्तियों को वापस लौटा दिया जाए। 1 जून, 1972 से भूतलक्षी प्रभाव दिए जाने से, किसी भी सरकारी कर्मचारी पर इन नियमों का प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ेगा लेकिन दूसरी ओर प्रभावित व्यक्तियों को पेंशन के अंश की अभावों के लिए पात्र बना दिया गया है जिनको लौटाने की जरूरत नहीं थी।

[सं० फा० 3 (9)-संस्थापन V (ए)/76]

एस० एस० एल० मल्होत्रा, अधर सचिव

(Department of Expenditure)

New Delhi, the 2nd June, 1977

S.O. 2239.—In exercise of the powers conferred by the proviso to article 309 and clause (5) of article 148 of the Constitution and after consultation with the Comptroller and Auditor-General in relation to persons serving in the Indian Audit and Accounts Department, the President hereby makes the following rules further to amend the Central Civil Services (Pension) Rules, 1972, namely :—

1. (1) These rules may be called the Central Civil Services (Pension) (Fourth Amendment) Rules, 1977.

(2) They shall be deemed to have come into force on the 1st day of June, 1972.

2. In rule 19 of the CCS (Pension) Rules, 1972, in sub-rule (1), for clause (b), the following clause shall be substituted namely :—

“(b) to cease to draw his pension or refund the gratuity including death-cum-retirement; if any, and count the previous military service as qualifying service, in which case the service so allowed to count shall

be restricted to a service within or outside the employee's unit or department in India or elsewhere, which is paid from the Consolidated Fund of India or for which pensionary contribution has been received by the Government and the pension intermediately drawn shall not be required to be refunded but the element of pension which was not taken into account for fixation of pay on re-employment shall be refunded.”

EXPLANATORY MEMORANDUM

The existing provisions of sub-rule (1) of rule 19 of the CCS (Pension) Rules, 1972 were proving iniquitous to the re-employed military pensioners who opted for counting military service for civil pension. They were required to refund the element of pension even in respect of the period during which they did not hold any post under Government. This was not the intention but the intention was not correctly reflected in the aforesaid sub-rule with the result that re-employed pensioners refunded the pension in respect of the period for which no refund was called for. Under the amended sub-rule the correct position has been incorporated and various administrative authorities are being requested separately to review the past cases, so that the element of pension which was refunded and for which no refund was necessary, should be paid back to the persons concerned. No Government servant is likely to be adversely affected by the rules being given retrospective effect from 1-6-1972 but on the other hand the affected persons have been made eligible to the payment of the element of pension which was not required to be refunded.

[No. F. 3(9)-EV(A)/76]

S. S. L. MALHOTRA, Under Secy.

केन्द्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड

आय-कर

नई दिल्ली, 30 अप्रैल, 1977

का० प्रा० 2240.—सर्वसाधारण की जानकारी के लिए यह अधिसूचना किया जाता है कि निम्नलिखित प्रविष्टानों को, केन्द्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड द्वारा, आय कर अधिनियम, 1961 की धारा 35-घ की उप-धारा (2) के खण्ड (क) के प्रयोजनार्थ तकनीकी तथा इंजीनियरी पंक्षी परामर्श के क्षेत्र में अनुमोदित किया गया है।

संस्था

श्री ए० सी० पालिट, कंसल्टिंग इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियर, कलकत्ता।
यह अनुमोदन 6 नवम्बर, 1975 से प्रभावी है।

[सं० 1741 (फा० सं० 203/169/75 आ० क० प्र II)]

जी० पी० शर्मा, सचिव

CENTRAL BOARD OF DIRECT TAXES

New Delhi, the 30th April, 1977

INCOME TAX

S.O. 2240.—It is hereby notified for general information that the concern mentioned below has been approved by the Central Board of Direct Taxes for the purpose of clause (a) of sub-section (2) of section 35D of the Income-tax Act, 1961, in the field of Technological and Engineering Consultancy.

INSTITUTION

Shri A. C. Palit, Consulting Electronics Engineer, Calcutta.
The approval takes effect from 6th November, 1975.

[No. 1741 (F. No. 203/169/75-ITA.II)]

J. P. SHARMA, Secy.

बाणिज्य मंत्रालय

संयुक्त मुख्य निर्यातक, आयात-निर्यात का कार्यालय, केंद्रीय लाइसेंस क्षेत्र,
नई दिल्ली

नई दिल्ली, 15 अप्रैल, 1977

रद्द करने का आदेश

का० घ्रा०—2241 सर्वश्री एन० के० ओवरसीज ट्रेडर्स सी-30, ग्रेटर कैलाश नई दिल्ली को लाइसेंस में संलग्न सूची के अनुसार अनुमति प्राप्त वस्तु (बच्चे के दाँत और बड़े दाँत) तथा अन्य वस्तुओं का आयात करने के लिए 1,50,000 रुपए मात्र का प्रारम्भिक लाइसेंस संख्या पी/डब्ल्यू/2698390 दिनांक 25-3-75 प्रदान किया गया था। उन्होंने आयात व्यापार नियंत्रण नियम तथा क्रियाविधि पुस्तक 1976-77 के परिशिष्ट 8 के साथ पड़ी जाने वाली कांशिका 320 के अन्तर्गत यथा अपेक्षित एक शपथ-पत्र दाखिल किया है जिसके अन्तर्गत उन्होंने बताया है कि पूर्वोक्त लाइसेंस की सीमा-शुल्क प्रति सीमा शुल्क कार्यालय बम्बई में पंजीकृत कराने के पश्चात् और 90,000 रुपए मात्र की धनराशि का उपयोग करना शेष रहने हुए आंशिक रूप में उपयोग कर लेने के बाद अस्थानस्थ हो गई है तथा उपयोग न की गई शेष धनराशि 90,000 रुपए के लिए सीमा शुल्क प्रति की अनुलिपि प्रति जारी करने के लिए आवेदन किया है।

मैं सन्तुष्ट हूँ कि 1,50,000 रुपए मात्र के लिए जारी किए गए आयात लाइसेंस संख्या पी/डब्ल्यू/2698390, दिनांक 25-3-75 की मूल सीमा शुल्क प्रति अस्थानस्थ हो गई है।

इस लिए अद्यतन यथा संशोधित आयात व्यापार नियंत्रण आदेश 1955, दिनांक 7-12-55 की उप-धारा 9(सी) द्वारा प्रदत्त अधिकारों का प्रयोग कर 1,50,000 रुपए मात्र के लिए आयात लाइसेंस संख्या पी/डब्ल्यू/2698390, दिनांक 25-3-75 की सीमा शुल्क प्रति एतद् द्वारा रद्द की जाती है जिसके लिए लाइसेंस की अनुलिपि प्रति का आवेदन किया है।

90,000 रुपए मात्र की उपयोग न की गई शेष धनराशि के लिए लाइसेंस संख्या पी/डब्ल्यू/2698390, दिनांक 25-3-75 की अनुलिपि प्रति अलग से जारी कर दी गई है।

[संख्या आई एन आई/ई एच/205/एएम-75/एस सी-6/सीएल ए/244]

के० धार० धीर, उप-मुख्य निर्यातक,

हृते संयुक्त मुख्य निर्यातक

MINISTRY OF COMMERCE

(Office of the Joint Chief Controller of Imports & Exports)

Central Licensing Area

New Delhi, the 15th April, 1977

CANCELLATION ORDER

S.O. 2241.—M/s. N. K. Overseas Traders, C. 30 Greater Kailash, I, New Delhi were granted Initial licence No. P/W/2698390, dated 25-3-75 for Rs. 1,50,000/- only for import Ivory unmanufactured (Baby tusks and full tusks) etc. and other items as per list attached. They have filed an affidavit as required under para 320 read with appendix 8 of the ITC Hand Book of Rules & Procedure, 1976-77 wherein they have stated that customs copy of the aforesaid licence has been misplaced after having been registered with Bombay Customs House and utilised partly leaving a balance of Rs. 90,000/- only and have applied for Duplicate of the Customs copy for the unutilised balance of Rs. 90,000/-.

I am satisfied that the original customs copy of licence No. P/W/2698390, dated 25-3-1975 for Rs. 1,50,000 only has been misplaced.

Therefore, in exercise of the power conferred under sub-clause 9-C in the ITC Order 1955, dated 7-12-1955 amended upto date the said Customs copy of licence No. P/V/47 GI/77—2

2698390, dated 25-3-1975 for Rs. 1,50,000 only is hereby cancelled for which a duplicate licence has been applied for.

Duplicate Customs copy of licence No. P/W/2698390 dated 25-3-1975 for the unutilised amount of Rs. 90,000/- only has been issued separately.

[No. INI/EH/205/AM. 75/SC. VI/CLA/244]

K. R. DHEER, Dy. Chief Controller.

for Jt. Chief Controller

मुख्य निर्यातक, आयात-निर्यात का कार्यालय

आदेश

नई दिल्ली, 27 अप्रैल, 1977

का० घ्रा०—2242 सर्वश्री आइवान मिलुटोनीविक-पी० आई० एम०, कलकत्ता की सामान्य मुद्रा क्षेत्र से ला० की संलग्न सूची के अनुसार उपस्कर एवं फालतू पुर्जों का आयात करने के लिए 1,11,50,000 रुपये के लिए सीमा-शुल्क निकासी परमिट संख्या पी/जे/2373194 दिनांक 24-11-1970 प्रदान किया गया था।

2. उन्होंने उक्त सीमा-शुल्क निकासी परमिट की अनुलिपि प्रति जारी करने के लिए इस आधार पर आवेदन किया है कि उनसे मूल सीमा-शुल्क निकासी परमिट खो गया है/अस्थानस्थ हो गया है। लाइसेंसधारी ने आगे यह भी बताया है कि लाइसेंस में बिना उपयोग में लाई गई धनराशि 99,67,333 रुपये शेष हैं। सीमा-शुल्क निकासी परमिट सीमा-शुल्क प्राधिकारी, बम्बई के पास पंजीकृत कराया गया था।

3. अपने तर्कों के समर्थन में आवेदक ने एक शपथ-पत्र दाखिल किया है। अधोहस्ताक्षरी संतुष्ट है कि मूल सीमा-शुल्क निकासी परमिट खो गया है अथवा अस्थानस्थ हो गया है और इसलिए निर्देश देता है कि आवेदक को सीमा-शुल्क निकासी परमिट की अनुलिपि प्रति जारी की जानी चाहिए। मूल सीमा-शुल्क निकासी प्रति एतद् द्वारा रद्द की जाती है।

4. उक्त सीमा निकासी परमिट की अनुलिपि प्रति अलग से जारी की जा रही है।

[सं० 17/कण्ट/70-71/एम० एल० 2/247]

एस० के० बता, उप-मुख्य निर्यातक,

हृते मुख्य निर्यातक

OFFICE OF THE CHIEF CONTROLLER OF**IMPORTS AND EXPORTS****ORDER**

New Delhi, the 27th April, 1977

S.O. 2242.—Ivan Milutonic-PIM, Calcutta were granted a C.C.P. No. P/J/2373194, dated 24-11-1970 for import of equipments and spare parts as per list attached to it valued at Rs. 1,11,50,000/- from G.C.A.

2. They have requested for the issue of duplicate copy of the above C.C.P. on the ground that the original C.C.P. has been lost or misplaced by them. It has been further reported by the licensee that the C.C.P. had an unutilised balance of Rs. 99,67,333. The CCP was registered with Custom authorities, Bombay.

3. In support of their contention, the applicant has filed an affidavit. The undersigned is satisfied that the original CCP No. P/J/2373194 dated 24-11-1970 has been lost or misplaced and hence directs that duplicate CCP should be issued to the applicant. The original CCP is hereby cancelled.

4. The duplicate CCP of the said CCP is being issued separately.

[File No. 17/Cont/70-71/ML. II/247]

S. K. BATTI, Dy. Chief Controller

for Chief Controller

नई दिल्ली, 10 जून, 1977

क्रा० प्र० 2243.—भारतीय व्यापार मेला प्राधिकरण के संस्था के अंतर्नियमों के नियम 59(7) के अधीन प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए राष्ट्रपति, वाणिज्य मंत्रालय के विदेश व्यापार विभाग में तत्कालीन सचिव श्री पी० सी० एलेक्जेंडर को, जो इस समय वाणिज्य सचिव एवं भारतीय मेला प्राधिकरण के प्रशासनिक निदेशक हैं, 29 मार्च 1977 से प्राधिकरण के निदेशक मंडल के अध्यक्ष के रूप में नियुक्त करते हैं।

[सं० 3/77/(1/1/77)]

New Delhi, the 10th June, 1977

S.O. 2243.—In exercise of the powers conferred under Article 59(7) of the Articles of Association of the Trade Fair Authority of India, the President is pleased to appoint Dr. P. C. Alexander, the then Secretary, Department of Foreign Trade, Ministry of Commerce, and now Commerce Secretary, and part-time Director of the Trade Fair Authority of India as the Chairman of the Board of Directors of the Authority, with effect from 29th March 1977.

[No. 3/77(1/1/77)]

क्रा० प्र० 2244.—भारतीय व्यापार मेला प्राधिकरण संस्था के अंतर्नियम के नियम 59(2) के अधीन प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए राष्ट्रपति, वाणिज्य मंत्रालय के विदेश व्यापार विभाग में तत्कालीन सचिव श्री पी० सी० एलेक्जेंडर को, जो इस समय वाणिज्य सचिव हैं, 29 मार्च, 1977 से भारतीय व्यापार मेला प्राधिकरण के प्रशासनिक निदेशक के रूप में नियुक्त करते हैं।

[सं० 4/77 (1/1/77)]

S.O. 2244.—In exercise of the powers conferred under Article 59(2) of the Articles of Association of the Trade Fair Authority of India, the President is pleased to appoint Dr. P. C. Alexander, the then Secretary, Department of Foreign Trade, Ministry of Commerce and now Commerce Secretary, as a part-time Director of the Trade Fair Authority of India, New Delhi, with effect from the 29th March, 1977.

[No. 4/77(1/1/77)]

क्रा० प्र० 2245.—भारतीय व्यापार मेला प्राधिकरण के संस्था के अंतर्नियमों के नियम 59(2) के अधीन प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए राष्ट्रपति निम्न अधिकारियों को 8-6-77 से भारतीय मेला प्राधिकरण के प्रशासनिक निदेशकों के पद पर नियुक्त करते हैं —

क्रम संख्या	नाम	पदनाम
1. श्री आर० के० जेरेथ	संयुक्त सचिव (आर्थिक प्रभाग)	विदेश मंत्रालय, नई दिल्ली
2. श्री हित प्रकाश	संयुक्त सचिव (योजना एवं समन्वय), सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय,	नई दिल्ली।
3. श्री सी० वेंकटरमन	संयुक्त सचिव एवं वित्तीय सलाहकार,	वाणिज्य मंत्रालय, नई दिल्ली।
4. श्री पी० रामादोराय	प्रबंधक निदेशक, हस्तशिल्प एवं	हथकरघा नियति निगम, लोक कल्याण भवन, नई दिल्ली।
5. श्री के० रामानुजम	संयुक्त सचिव, वाणिज्य मंत्रालय,	नई दिल्ली।

[सं० 5/77 (1/1/77)]

S.O. 2245.—In exercise of the powers conferred under Article 59(2) of the Articles of Association of the Trade Fair Authority of India, the President is pleased to appoint the following persons as part-time Directors of the Trade Fair Authority of India with effect from 8-6-1977:—

S. No.	Name	Designation
1.	Shri R.K. Jerath.	Joint Secretary (Economic Divn.) Ministry of External Affairs, New Delhi.
2.	Shri Hit Prakash.	Joint Secretary (Planning & Co-ordination), Ministry of Information & Broadcasting, New Delhi.
3.	Shri C. Venkataraman.	Joint Secretary & Financial Adviser, Ministry of Commerce, New Delhi.
4.	Shri C. Venkataraman	Managing Director, Handicrafts & Handloom Exports Corporation, Lok Kalyan Bhavan, New Delhi.
5.	Shri K. Ramanujam.	Joint Secretary, Ministry of Commerce, New Delhi.

[No. 5/77(1/1/77)]

क्रा० प्र० 2246.—भारतीय व्यापार मेला प्राधिकरण के संस्था के अंतर्नियम के अनुच्छेद 59(2) के अधीन प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, तथा अध्यक्ष से परामर्श करके राष्ट्रपति श्री ए० सी० बनर्जी को 1-6-77 से भारतीय व्यापार मेला प्राधिकरण के निदेशक के पद पर नियुक्त करते हैं। अध्यक्ष से परामर्श करके तथा भारतीय व्यापार मेला प्राधिकरण के संस्था के अंतर्नियम के अनुच्छेद 59(7) के अधीन, राष्ट्रपति श्री ए० सी० बनर्जी को उपर्युक्त तिथि से प्रबंध निदेशक के रूप में भी नियुक्त करते हैं।

[सं० 6/77 (1/1/77)]

के० रामानुजम, संयुक्त सचिव

S.O. 2246.—In exercise of the powers conferred under Article 59(2) of the Articles of Association of the Trade Fair Authority of India, and in consultation with the Chairman, the President is pleased to appoint Shri A. C. Banerjee as Director of the Trade Fair Authority of India with effect from 1/6/1977. In consultation with the Chairman and under Article 59(7) of the Articles of Association of the Trade Fair Authority of India, the President is further pleased to appoint Shri A. C. Banerjee as Managing Director with effect from the aforesaid date.

[No. 6/77(1/1/77)]

K. RAMANUJAM, Jt. Secy.

मुख्य निर्यातक, आयात निर्यात का कार्यालय

प्रादेश

नई दिल्ली, 20 जून, 1977

क्रा० प्र० 2247.—महेश्वरी गुडइयर इंडिया लिमिटेड, नई दिल्ली को मुक्त विदेशी मुद्रा के अन्तर्गत संयुक्त राज्य से 560-13 आकार के 3 नम्बर टायर के सांच का ऋण के अन्तर्गत पर प्राप्ति करने के लिए 20951 रुपये (बीस हजार नौ सौ इक्यावन रुपये मात्र) के मूल्य का प्राप्ति लाइसेंस संख्या बी/सी/2068335/सी/××/48/एच/37-48, दिनांक 10-9-73 प्रदान किया गया था। फर्म ने ऊपर उल्लिखित लाइसेंस की सीमाशुल्क प्रयोजन प्रति की अनुमति प्रति जारी करने के लिए इस आधार पर आवेदन किया है कि लाइसेंस की मूल सीमाशुल्क प्रयोजन प्रति खो गई है।

आगे यह भी बताया गया है कि लाइसेंस की सीमाशुल्क प्रयोजन प्रति दिल्ली पत्तन के साथ पंजीकृत की गई थी और सीमाशुल्क प्रयोजन प्रति को पूर्णतः उपयोग में लाया जा चुका है। फर्म को 31-10-79 तक मांचे को रखने की अनुमति दी गई है।

2. अपने तर्क के समर्थन में लाइसेंसधारी ने नोटरी पब्लिक के सामने विधिवत शपथ लेकर स्टाम्प पेपर पर एक शपथ पत्र दाखिल किया है। तदनुसार मैं संतुष्ट हूँ कि आयात लाइसेंस संख्या पी/सी/2068335 दिनांक 10-9-73 की मूल सीमाशुल्क प्रयोजन प्रति फर्म से खो गई है। अतः यथा संशोधित आयात (नियंत्रण) अधिनियम, 1955 विनॉक 7-12-1955 की उप-धारा 9(सी सी) के अधीन प्रदत्त अधिकारों का प्रयोग करते हुए सर्वश्री गुडयियर इंडिया लिमिटेड, नई दिल्ली को जारी की गई उक्त मूल सीमाशुल्क प्रयोजन प्रति संख्या पी/सी/ जी०/ 2068335 दिनांक 10-9-73 एतद्वारा रद्द की जाती है।

3. उक्त लाइसेंस की सीमाशुल्क प्रयोजन प्रति की अनुलिपि प्रति पार्टी को अलग से जारी की जा रही है।

[संख्या 30(12)/73-74/सी० जी० I/1421]

जी० एस० ग्रेवाल, उप-मुख्य नियंत्रक

OFFICE OF THE CHIEF CONTROLLER OF
IMPORTS & EXPORTS
ORDER

New Delhi, the 20th June, 1977

S.O. 2247.—M/s. Goodyear India Ltd., New Delhi were granted import licence No. P/C/2068335/C/XX/48/H/37-38 dated 10-9-73 for Rs. 20,951 (Rupees Twenty thousand nine hundred and fiftyone only) for the import of 3 Nos. tyre moulds size 560-13 on loan basis from U.K. against free foreign exchange. The firm have applied for issue of Duplicate copy of Customs Purposes copy of above mentioned licence on the ground that the original customs purposes copy of the licence has been lost. It has further been stated that the customs purpose copy of the licence was registered with Delhi Port, and value of the customs purpose copy has been fully utilised. The firm has been allowed retention of the moulds upto 31-10-79.

2. In support of their contention, the licensee have filed an affidavit on stamped paper duly sworn before a Notary Public, Delhi. I am accordingly satisfied that the original customs purposes copy of import licence No. P/C/2068335 dated 10-9-73 has been lost by the firm. Therefore, in exercise of the powers conferred under sub-clause 9(cc) of the Import (Control) Order, 1955 dated 7-12-1955 as amended the said original customs purposes copy No. P/CG/2068335 dated 10-9-73 issued to M/s. Goodyear India Ltd., New Delhi is hereby cancelled.

3. A duplicate customs purposes copy of the said licence is being issued to the party separately.

[No. 30(12)/73-74/CG. I/1421]

G. S. GREWAL, Dy. Chief Controller

आदेश

का० प्रा० 2248.—सर्वश्री राजस्थान रोलर फ्लोर मिल्स (प्रा०) लिमिटेड, माला रोड, कोटा-2 ने यह सूचित किया है कि उनकी गेट्स के उत्पाद के विनिर्माण के लिए मशीन क्लोथ सिलक बोस्टिंग क्लोथ (आयात 60 (साठ) मीटर मात्र तक प्रतिबंधित है) और लाइट स्टील प्लेटिड बायर मेज का आयात करने के लिए 3,333 रुपये (तीन हजार तीन सौ तैसी रुपये मात्र) के मूल्य का प्रदान किया गया आयात लाइसेंस संख्या पी/सी/2193756/सी/XX/48/एच/35-36 दिनांक 13-7-1973 पूर्णतः उपयोग में लाए जाने के बाव अस्थानस्थ हो गया है/खो गया है।

2. अपने तर्क के समर्थन में सर्वश्री राजस्थान रोलर फ्लोर मिल्स कोटा ने एक शपथ पत्र दाखिल किया है। अधोहस्ताक्षरी संतुष्ट है कि विषयाधीन मूल आयात लाइसेंस (सीमाशुल्क प्रयोजन एवं विनिर्माण नियंत्रण प्रयोजन प्रति) अस्थानस्थ हो गई/खो गई है और निदेश देता है कि आयात लाइसेंस (दोनों प्रतियाँ) की अनुलिपि प्रति उनको जारी की जानी चाहिए। एतद्वारा मूल आयात लाइसेंस को अनुलिपि प्रति के साथ रद्द किया जाता है।

3. दो प्रतियाँ में आयात लाइसेंस अलग से जारी किया जा रहा है।

[सं० फ्लोर/70/1/72-73/आर० एम०-5]

एन० ए० कोहली, उप-मुख्य नियंत्रक

ORDER

S.O. 2248.—It has been reported by M/s. Rajasthan Roller Flour Mills (P) Limited, Mala Road, Kota-2, that their import licence No. P/D/2193756/C/XX/48/H/35-36 dated 13-7-1973 granted to them for Rs. 3,333 (Rupees three thousand three hundred and thirty three only) for import of Machine cloth—Silk Bolting cloth (import is restricted to 60 (sixty) meters only) & Light Steel Plated Wire Mesh for the manufacture of wheat products has been misplaced/lost having utilised fully.

2. In support of this contention M/s. Rajasthan Roller Flour Mills, Kota have given an affidavit. The undersigned is satisfied that the original import licence (customs purposes & exchange control purposes copies) in question has been misplaced/lost and direct that a duplicate import licence (both copies) should be issued to them. The original import licence in duplicate is hereby cancelled.

3. An import licence in duplicate is being issued separately.

[No. Flour/70/1/72-73/RM. 5]

N. A. KOHLY, Dy. Chief Controller

आदेश

नई दिल्ली, 25 जून, 1977

का० प्रा० 2249.—सर्वश्री वि इन्डस्ट्रियल एण्ड एमीकलवरल इन्जीनियरिंग कं० (कलकत्ता) लिमिटेड, 19 राजेन्द्रनाथ मुखर्जी रोड, वी०बी० बी० बाग, कलकत्ता को, कलकत्ता पत्तन में पंजीकृत किये जाने वाले लाइसेंस अवधि अप्रैल 1975 मार्च 1976 के लिए संयुक्त राष्ट्र अमरीका ने स्वतंत्र स्रोतों के अधीन इन्धन माडल सी०एच, 16 फ्लैट और सिलिन्ड्रिकल सैपिंग मशीन, उप-साधक एवं विद्युतीय साधनों का आयात करने के लिए 56,691 रुपये (छप्पन हजार छः सौ इक्यानवे रुपये मात्र) मूल्य के लिए आयात लाइसेंस संख्या जी०ओ० 2421134/सी/एक्सएक्स/60/एच/41-42, दिनांक 23-8-76 प्रदान किया गया था। अब लाइसेंसधारी ने लाइसेंस की अनुलिपि प्रतियाँ (सीमाशुल्क और मुद्रा विनिर्माण नियंत्रण की दोनों प्रतियाँ) जारी करने के लिए इस कार्यालय को इस आधार पर आवेदन किया है कि मूल आयात लाइसेंस (दोनों प्रतियाँ) खो गयीं/अस्थानस्थ हो गई हैं। उन्होंने आगे यह भी बताया है कि मूल आयात लाइसेंस किसी भी सीमाशुल्क प्राधिकारी के पास पंजीकृत नहीं कराया गया और यह पूर्णतः अप्रयुक्त है।

2. अपने तर्क के समर्थन में आवेदक ने स्टाम्प पेपर पर एक शपथ पत्र दाखिल किया है। अधोहस्ताक्षरी संतुष्ट है कि आवेदक के मूल आयात लाइसेंस संख्या जी०ओ० 2421134/सी/एक्सएक्स/60/एच/41-42 दिनांक 23-8-76 (दोनों प्रतियाँ) खो गईं/अस्थानस्थ हो गई हैं और अतः निदेश देता है कि उपर्युक्त लाइसेंस की अनुलिपि आयात लाइसेंस (दोनों प्रतियाँ) उनको जारी किया जाना चाहिए। मूल आयात लाइसेंस संख्या जी०ओ०/2421134/सी/एक्सएक्स/60/एच/41-42, दिनांक 23-8-76, (दोनों प्रतियाँ) एतद्वारा रद्द किया जाता है।

[संख्या-3.मार्ड/कोट/76-77/जी एल एस/347]

एल० प्रसाद, उप-मुख्य नियंत्रक

ORDER

New Delhi, the 25th June, 1977

S.O. 2249.—M/s. The Industrial & Agricultural Engineering Co. (Calcutta) Ltd., 19 Rajendranath Mukherjee Road, B.B.D. Bagh, Calcutta were granted an import licence No. G/O/2421134/C/XX/60/H/41.42 dated 23-8-1976 for the import of Doall Model—Ch. 16 Flat and Cylindrical lapping machine, accessories and electricals for Rs. 56,691 (Rupees fifty six thousand six hundred and ninety one only) under free resources from U.S.A. for the licensing period April 1975-March 1976 to be registered at Calcutta port. Now the licensee has requested this office for the issue of duplicate copies of import licence (both Customs and Exchange Control Purposes copies) on the ground that the original import licence (both copies) has been lost/misplaced. They have further stated that the original import licence has not been registered with any Customs Authority and it remains fully unutilised.

2. In support of their contention, the applicant has filed an affidavit on stamped paper. The undersigned is satisfied that the original import licence No. G/O/2421134/C/XX/60/H/41.42 dated 23-8-1976 (both copies) has been lost/misplaced by the applicant and therefore directs that duplicate import licence (both copies) of the said licence should be issued to them. The original import licence (both copies) No. G/O/2421134/C/XX/60/H/41.42 dated 23-8-76 is hereby cancelled.

V. SRINIVASAN, Dy. Secy.

[No. 3. I/Cont/76-77/GLS/347]

L. PRASAD, Dy. Chief Controller.

नागरिक पूर्ति और सहकारिता मंत्रालय

नई दिल्ली, 27 जून, 1977

क्रा०प्रा० 2250.—केन्द्रीय सरकार, ग्रामिण संविदा (विनियमन) अधिनियम, 1952 (1952 का 74) की धारा 5 के अधीन ग्रैन, राइस एन्ड आयलसीड्स मर्चेंट्स एसोसिएशन, बम्बई द्वारा मान्यता के नवीकरण के लिए किये गये आवेदन पर वायदा बाजार आयोग के परामर्श से विचार करके और यह समाधान हो जाने पर कि ऐसा करना व्यापार के हित में और लोकहित में भी होगा, एनद्द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 6 के द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए उक्त एसोसिएशन को मूंग-फली की गिरी की ग्रामिण संविदाओं के बारे में, 10 अगस्त, 1977 से 9 अगस्त, 1978 तक (जिसमें ये दोनों दिन भी सम्मिलित हैं) की एक की प्रतिरिक्त कालावधि के लिए मान्यता प्रदान करती है।

2. एनद्द्वारा प्रदत्त मान्यता इस शर्त के अधीन है कि उक्त एसोसिएशन ऐसे निदेशों का अनुपालन करेगा जो वायदा बाजार आयोग द्वारा समय-समय पर दिये जायें।

[मिनिम संख्या 12/(6)-आई० टी०/77]

बे० श्रीनिवासन, उप सचिव

MINISTRY OF CIVIL SUPPLIES & COOPERATION

New Delhi, the 27th June, 1977

S.O. 2250.—The Central Government, having considered in consultation with the Forward Markets Commission, the application for renewal of recognition made under Section 5 of the Forward Contracts (Regulation) Act, 1952 (74 of 1952) by the Grain, Rice and Oilseeds Merchants, Association, Bombay and being satisfied that it would be in the interest of the trade and also in the public interest so to do, hereby grants, in exercise of the powers conferred by Section 6 of the said Act, recognition to the said Association for a further period of one year from the 10th August, 1977 to the 9th August, 1978 (both days inclusive) in respect of forward contracts in groundnut kernels.

2. The recognition hereby granted is subject to the condition that the said Association shall comply with such direc-

tions as may, from time to time, be given by the Forward Markets Commission.

[F. No. 12(6)-IT/77]

नौवहन और परिवहन मंत्रालय

(परिवहन पक्ष)

प्रादेश

नई दिल्ली, 9 मई, 1977

क्रा०प्रा० 2251.—यतः केन्द्रीय सरकार ने व्यापार पोत (अन्न की दुलाई) नियम, 1974 के अन्तर्गत—

(क) सभी भारतीय जहाज, और

(ख) भारतीय जहाजों से भिन्न जहाज, यथा:—

(i) भारत में किसी पत्तन या स्थान में या भारत के क्षेत्रीय समुद्र के भीतर अनाज से लदे हुए जहाजों, या

(ii) भारत में किसी पत्तन या स्थान में प्रवेश करने वाले या अनाज से लदे हुए भारत के क्षेत्रीय समुद्र के भीतर आने वाले जहाजों के द्वारा अनुपालन के लिए व्यापार पोत अधिनियम, 1958 (1958 का 44) की धारा 332 के प्रयोजनों के लिए कतिपय जुड़नारों और व्यवस्थाओं की "आवश्यक एवं उचित एहनियात" निर्धारित किया है।

और यतः केन्द्रीय सरकार की अन्यथा संतुष्टि है कि इंटर गवर्नेमेंटल मेरी टाइम कमलटेटिव आर्गनाइजेशन द्वारा संस्तुत और इस प्रादेश के परिशिष्ट I व II में उल्लिखित जुड़नार या व्यवस्थाएं उतनी प्रभावी हैं, जितना कि व्यापार पोत (अन्न की दुलाई) नियम, 1974 में अपेक्षित हैं;

और यतः केन्द्रीय सरकार यह समीचीन समझती है कि इस प्रादेश के उक्त परिशिष्ट I और II में निर्धारित वैकल्पिक जुड़नार या व्यवस्थाएं पूर्वोक्त जहाजों में भी लगाये या बनाई जा सकती हैं।

अतः, अब, व्यापार पोत अधिनियम, 1958 (1958 का 44) की धारा 454-क द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार एनद्द्वारा निम्नलिखित प्रादेश बनाती है, अर्थात्:—

(1) संक्षिप्त नाम और प्रारम्भ:—इस प्रादेश का नाम व्यापार पोत (अन्न की दुलाई के लिए समतुल्य व्यवस्थाएं) प्रादेश, 1977 है।

(2) ये राजपत्र में प्रकाशन की तारीख को प्रवृत्त होगा।

2. अन्न की दुलाई के लिए समतुल्य व्यवस्थाएं:—

ऐसा जहाज जिस पर व्यापार पोत (अन्न की दुलाई) नियम, 1974 लागू होते हैं, उक्त नियमों की अपेक्षाओं की अनुपालना करने की बजाय, इस प्रादेश के परिशिष्ट I या II में विनिर्दिष्ट अपेक्षाओं का अनुपालन करे:

परन्तु यह कि ऐसा कोई जहाज उक्त नियमों में विनिर्दिष्ट अपेक्षाओं का तथा उक्त दोनों परिशिष्टों में से किसी एक में निर्दिष्ट अपेक्षाओं का आंशिक अनुपालन नहीं कर सकेगा।

(ii) अंशतः उक्त परिशिष्ट I में निर्दिष्ट और अंशतः उक्त परिशिष्ट II में निर्दिष्ट अपेक्षाओं का अनुपालन।

परिशिष्ट-I

वाणिज्य नौवहन (अनाज वहन) 1974 में विहित व्यवस्थाओं के सम व्यवस्थाएं

परिभाषाएं

1. इस परिशिष्ट में जब तक कि अन्यथा संदर्भ न हो, निम्न अधिव्यक्तियों के क्रमशः निम्न अर्थ होंगे:

“कक्ष”	से फल या स्थौरा जगह जो प्रत्येक निरे पर पात भीतों से परिवद्ध हो और जिसके ऊपर और नीचे डैक हो, अभिप्रेत है।
“भरा हुआ कक्ष”	से कोई कक्ष जिसमें अनाज भरने और समतल करने के बाद खुले अनाज का स्तर यथामाध्य उच्चतम होता है, अभिप्रेत है।
“ग्रन्थतः भरा हुआ कक्ष”	से कोई कक्ष जो खुले अनाज से पूर्ण भरा न हो, अभिप्रेत है।
“अनाज”	के अन्तर्गत गेहूँ, मक्का, जई, राई, जौ, चावल, दालें और बीज हैं।
“व्यव केन्द्री ऊँचाई”	से अनुप्रस्थ चल केन्द्र (एम) और मुख्य केन्द्र (जी) के बीच की वह दूरी अभिप्रेत है जो टंकियों में द्रव के मुक्त सतहों के परिणामों से शुद्धकृत है।
“रोक तख्ती”	से इस परिशिष्ट के (ख) भाग 1, अनुसूची 2 में विनिर्दिष्ट अपेक्षाओं के अनुसार सन्निमित्त रोक तख्ती है।

समतलन

2. (क) अनाज स्थानान्तरण का प्रभाव कम करने के लिए सभी आवश्यक और उचित समतलन किया जायेगा। किसी कक्ष में, जो खुले अनाज से भरा है, इस प्रकार समतलन किया जायेगा कि डैक और फलकों के आवरणों के नीचे की सभी जगहें संभाव्य अधिकतम सीमा तक भर दी जाये।

(ख) नौभरण के पश्चात् ग्रन्थतः भरे कक्षों में सभी खुला अनाज समतलन किया जायेगा और पात समुद्र में जाते समय सीधा होगा। अविकल स्थिरता अपेक्षाएं

3. (क) खुला अनाज वहन करने वाले किसी पात की अविकल स्थिरता विशेषताएं, पूरी यात्राएं अनुसूची 1 में विनिर्दिष्ट पद्धति से अनाज स्थानान्तरण से उत्पन्न नति धूर्ण को ध्यान में रखकर कम से कम निम्न प्रमाण की पूर्ति करने वाली होगी :

- (1) अनाज स्थानान्तरण से उत्पन्न नति का कोण 12 अंशों से अधिक हो।
- (2) स्थायिक स्थिरता आरेख में, स्थिरक भुजा दो ब्रकों के कर्णों के मध्य के अधिकतम अंतर के नति कोण तक या 40 अंश या आप्लावन कोण* जो भी कम हो, नौभरण की सभी स्थितियों से, नति भुजा वक्र तथा स्थिरक भुजा वक्र के मध्य का निचल या अवशिष्ट क्षेत्र 0.075 मीटर-रेडियन से अत्युन हो; और
- (3) प्रारंभिक चलकेन्द्री ऊँचाई, टंकियों में द्रव्य के खुरी सतह प्रभावों के लिए शुद्धिकरण के बाद 0.30 मीटरों से अत्युन होगी।

अनुलम्ब प्रभाग और तश्तरियाँ

4. (क) दोनों, “पूर्ण भरे” और “भागतः भरे” कक्षों में, अनुलम्ब प्रभाग, अनाज स्थानान्तरण के प्रतिकूल झुकाव प्रभाव को कम करने को या अनाज सतह प्राप्त करने के लिए प्रयुक्त स्थौरा की गहराई सीमित

*झुकाव कोण जहाँ खोखु के द्वार, डैकधरों के ऊपरी बांधे जो जलरोक बांध नहीं किये जाते, दूबते हैं। इस परिभाषा को लागू करते समय, छोटे मुख जिनसे वर्धमान आप्लावन नहीं हो सकता, द्वारा नहीं समझा जायेगा।

करने की युक्ति के रूप में लगाये जायेंगे। ऐसे प्रभाग अन्तरोक होंगे और अनुसूची 2 के भाग 1 के उपबन्धों के अनुसार सन्निमित्त होंगे।

(ख) “पूर्ण भरे” कक्षों में, प्रभाव, यदि लगाया हो डैक या फलका आवरणों के निचली बाजू से डैक रेखा के नीचे 4 म. से कम कक्ष की अधिकतम चौड़ाई के 1/8 दूर तक नीचली और विस्थापित होगा। तिनहन के मामलों के सिवाय फलका मुख्य के नीचे अवलम्ब प्रभाग के बने बोरो में बांध अनाज या अन्य उचित स्थौरा की तश्तर, रखी जायेगी। ऐसी तश्तरी अनुसूची 2 के भाग 1 में विहित पद्धति के अनुसार बंसी होगी।

(ग) “भागतः भरे” कक्ष में, प्रभाग, यदि लगाया हो, अनाज स्तर के पृष्ठ भाग के ऊपर कक्ष की अधिकतम चौड़ाई के 1/8 दूर तक तथा अनाज सतह के नीचे उतने ही अंतर तक विस्थापित हो। जब सुरक्षितता के लिए प्रयुक्त स्थौरा की गहराई सीमित करने के लिए उपयोग किया जाता है, सब मध्य रेखा प्रभाग की ऊँचाई अनाज सतह के ऊपर 0.61 से अत्युन हो।

(घ) और, अनाज स्थानान्तरण से उत्पन्न प्रतिकूल झुकाव प्रभाव, कक्ष की बगलों और शिरों के पाम बोरो में बन्द अनाज या स्थानान्तरण पर्याप्त रूप में रोकने वाला अन्य उचित स्थौरा वृद्धि रखकर कम किया जाये।

सुरक्षितता :

5. (क) इन उपबन्धों के अनुसार अनाज स्थानान्तरण से उत्पन्न प्रतिकूल झुकाव प्रभाव को देखों में लिये बिना, किसी भी “भागतः भरे” हुए कक्ष में खुले अनाज का पृष्ठभाग समतलन किया जायेगा और ऊपर बोरो में बन्द अनाज दृढ़ता से लगा कर और खुले अनाज का पृष्ठभाग की चौड़ाई 1/16 से अत्युन की ऊँचाई या 1.22 मीटर, जो भी अधिक हो, तक बढ़ाकर ऊपरी सतह बांध की जायेगी। बोरो में बांध अनाज के बदले, अन्य उचित स्थौरा जो कम से कम उतना ही दाब दे सके प्रयोग में लाया जा सकेगा।

(ख) बोरो में बांध अनाज या अन्य उचित स्थौरा अनुसूची 2 के भाग 2 में उपवर्णित पद्धति से आलक्षित किया जायेगा। विकल्पतः खुला अनाज पृष्ठभाग पट्टियों या रस्तीयों से जैसे अनुसूची 2 के भाग 2 में उपवर्णित है, सुरक्षित किया जायेगा।

संभरक और या ट्रंक

6. यदि संभरक और/या ट्रंक फिट किये हों, अनुसूचित 1 के भाग 3 में उपवर्णित पद्धति से नीति धूर्ण परिकलन करते समय उनके प्रभाओं पर उचित ध्यान किया जायेगा। ऐसे संभरकों की सीमायें परिवद्ध करने वाले प्रभागों का सब अनुसूचित 2 के भाग 1 के उपबन्ध के अनुरूप होगा।

सम्मिलित व्यवस्थाएं

7. निम्न फलके और उनके मार्ग की दूरीन डैक जगहें एक कक्ष के रूप में नौभरित की जायेंगी, बशर्ते कि, नीति धूर्ण परिचालन करते समय, निम्न जगहों में अनाज के बहाव की उचित गणना ध्यान में ली गयी हो।

अनुसूची—1

गृहीत नति धूर्ण का परिकलन

भाग 1	असमतल अनाज सतह के गृहीत नमून और अटूट स्थिरता के परिकलन की रीति का विवरण।
भाग 2	नौभरित कक्ष के गृहीत आयतनी नति धूर्ण का निर्धारण।
भाग 3	संभरक और ट्रंक।
भाग 4	भागतः नौभरित कक्ष।
भाग 4	असमतल अनाज सतह के गृहीत नमून और अटूट स्थिरता के परिकलन की रीति का विवरण।

(घ) साधारण

(क) खुला अनाज वहन करने वाले पोतों की स्थिरता परिकल्पन करने के लिए यह माना जायेगा कि—

(1) फलकों की बाजू के 500 और 600 मि० मी० के मध्य की गहराई के गड्ढे वाले पोतों के नौभारित कक्षों में, डेक के नीचे के रिक्त स्थान (vd) की सामान्य गहराई 460 मि०मी० है।

(2) जब फलको बाजू के गड्ढे की गहराई 500 और 600 मि०मी० के मध्य नहीं होती, रिक्त स्थान की औसत गहराई निम्न सूत्र के आधार पर परिकल्पित की जायेगी :

$$vd = vd_1 + 0.75 (d - 600) \text{ मि०मी०}$$

जहाँ vd_1 औसत रिक्त स्थान गहराई मि०मी० में

vd_2 मानक रिक्त स्थान गहराई निम्न सारणी।

vd निश्चित गड्ढे मि०मी० में 1 किसी भी दशा में vd

100 मि०मी० से कम नहीं होगी।

सारणी 1

फलके सिरे या बाजू से कक्ष की सीमा तक का अंतर	मानक रिक्त स्थान गहराई
1	2
मीटर	मि०मी०
0.5	570
1.0	530
1.5	500
2.0	480
2.5	450

कुल अनाज विचलन से

उत्पन्न नति कोण

स्थिरक भुजा

1	2
3.0	440
3.5	430
4.0	430
4.5	430
5.0	430
5.5	450
6.0	470
6.5	490
7.0	520
7.5	550
8.0	590

(3) उन मतलों के नीचे जिसका क्षैतिज श्रुकाय 30 अंग या अधिक हो रिक्त स्थान नहीं होंगे।

(4) नौभारित फलकों के मध्य, फलके आवरण के निचले भाग से अनाज मतल तक औसत रिक्त स्थान गहराई 75 मि०मी० होती है। यदि फलका मुख पूर्णतः भरा न हो, तो गृहीत नति धूर्ण परिकल्पित करते समय यह रिक्त स्थान किसी अन्य अधूरे भरे फलके के रिक्त स्थान के संयोजन में लिया जायेगा।

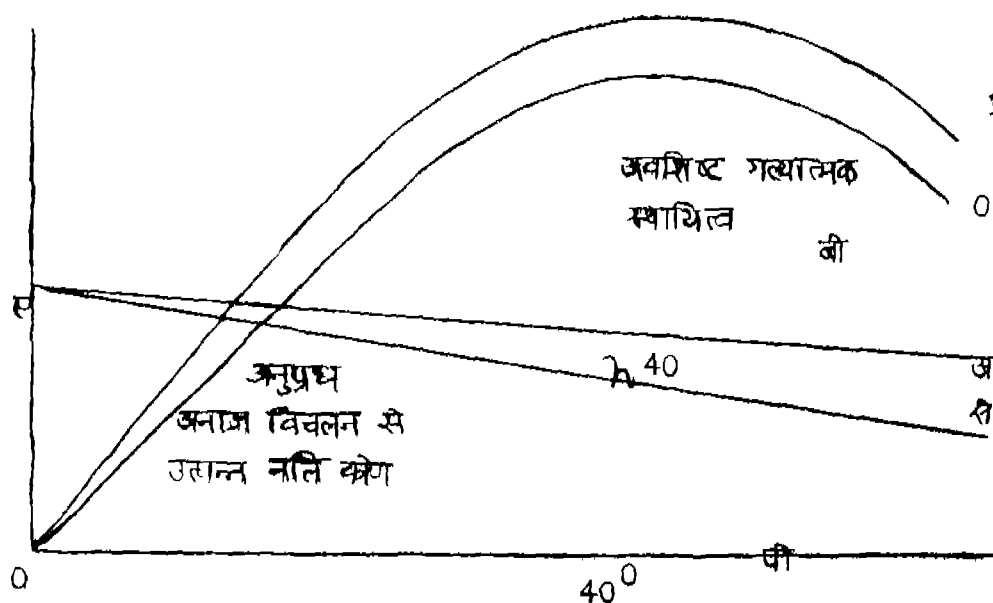
(ख) पोत स्थिरता संगणनायें इस आधार पर निर्धारित होंगी कि स्थोरा का गुरुत्वकेन्द्र संपूर्ण स्थोरा जगह के आयतनी केन्द्र के पास हो, और ऐसे मामलों में केवल अनुप्रस्थ अनाज स्थानान्तरण से उत्पन्न प्रतिकूल नति धूर्ण परिकल्पित करना आवश्यक होगा। तथापि, पोत का स्थिरक भुजा वक्र परिकल्पित करते समय, डेक के नीचे से विद्यमान रिक्त स्थानों से उत्पन्न पोत के उर्ध्वधर गुरुत्व केन्द्र की कमो को लेखे में लेना यदि आवश्यक समझा गया, तो अनाज के उर्ध्वधर संघटक स्थानान्तरणों के निबल परिणामों को भी कुछ गृहीत नति धूर्ण वक्र में जोड़ दिया जायेगा।

(माकृति 1 देखिए)

स्थिरक भुजा वक्र (डेक के नीचे रिक्त स्थानों के लिए समंजित स्थोरा का गुरुत्वकेन्द्र स्थिरक भुजा वक्र (स्थोरा जगह के आयतनी केन्द्र के पास स्थोरा का गुरुत्वकेन्द्र)

के पास स्थोरा का गुरुत्वकेन्द्र
कै०) उर्ध्वधर ओर
अनुप्रस्थ

अनाज विचलन से
0.66 उत्पन्न कुल नति धूर्ण
वक्र



नति कोण (अंश)

आकृति -1

$n_0 = \frac{\text{अनुप्रस्थ विचलन से उत्पन्न गृहीत आयतनी धूर्ण}}{\text{नौभरण गुणांक} \times \text{विस्थापन}}$

नौभरण गुणांक \times विस्थापन

$$n_0 = 0.80 \times n_0$$

$\times = \frac{\text{ऊर्ध्वाधर विचलन से उत्पन्न गृहीत आयतनी नति धूर्ण}}{\text{अनाज म्थोरा के प्रत्येक एकक वजन का घनफल}}$

विस्थापन = पान्ट हजन, नाजा मानी, मंझार इत्यादि और म्थोरा का वजन,

कुल गृहीत नति धूर्ण एक ए और बी जिनके भुजमान निम्न प्रकार हैं,

$$\text{ओए} = 7.66 \text{ मण: और पीबी} = (40 + 0.666)$$

के मध्य सीधी रेखा द्वारा लगभग प्रतिदर्शित किया जा सकता है।

भाग--2 नौभारित कक्ष के गृहीत आयतनी नति धूर्ण का निर्धारण,

(ध) साधारण :

(क) हममें उपवर्णित प्रणालियों गृहीत आयतनी नति धूर्ण प्रति एकक लंबाई के लिए निर्धारित करने के लिए प्रयुक्त की जाये।

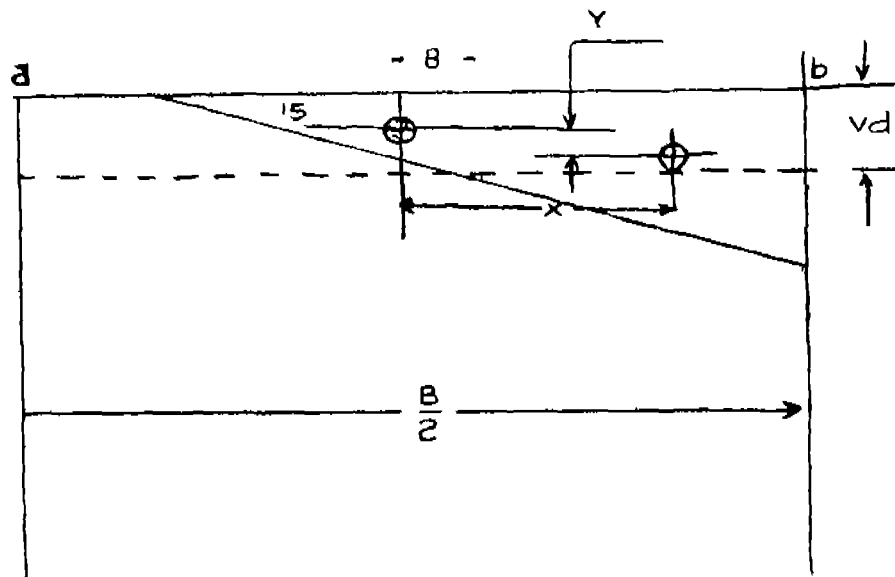
(ख) अंका में धूर्ण रिकन स्थानों का आकार और/या स्थिति में बदलानुसार परिकल्पित किये हैं।

(ग) खुले अनाज (या वेज कोण) की मसह विचलन का कोण 15 अंश माना गया है।

टिप्पणी : जब रिकन स्थान का अंतिम परिकेन्द्र उसके मूल परिकेन्द्र से अधिक या कमी होता है, तब ऊर्ध्वाधर आयतनी नति धूर्ण श्रमण: कम किया जायेगा/जोड़ दिया जायेगा।

(ब) फलका मुख के आगे ओर पीछे

(क) मध्य रेखा विभाजन सहित (आकृति 2 देखिए)



आकृति - 2

गृहीत क्षैतिज आयतनी नति धूर्ण = A XXX2 दोनों बाजुओं के लिए गृहीत ऊर्ध्वाधर आयतनी नति धूर्ण = AXYX2 दोनों बाजुओं के लिए जहाँ

जहाँ X = आकार बदलने से उत्पन्न रिकन स्थान के केन्द्र का अनुप्रस्थ विचलन, और

Y = आकार बदलने से उत्पन्न रिकन स्थान के केन्द्र का ऊर्ध्वाधर विचलन

(ख) मध्यरेखा विभाजन के बिना (आकृति 3 देखिए)

(1) यदि डेक के नीचे के अनुलंब गाईरों का परिणाम गणना में लेना है, तो धूर्ण आकृति 3 में दर्शित अनाज प्रसमतलन के नमूने के अनुसार परिकल्पित किये जायेंगे।

सूत्र :

$$(1) = (AB \times VD) - V_r, \text{ जहाँ } V_r = \frac{d^3}{2 \tan 15^\circ}$$

$$(2) = (BC \times VD) - V_r$$

$$(3) = CD \times VD$$

गृहीत क्षैतिज आयतनी नति धूर्ण = [(1)XX1] + [2XX2] + [3XX3]

गृहीत ऊर्ध्वाधर आयतनी नति धूर्ण = [(1)XY1] + [(2)XY2] + [(3)XY3]

(2) यदि अनुलंब गाईरों का परिणाम गणना में लेना नहीं है, तो धूर्ण उसी पद्धति से, जैसे उपर्युक्त (ब) (क) में उपवर्णित है, परिकल्पित किया जायेगा जहाँ B/2 गणनाओं में B हो जाता है।

(क) फलका मुख के पंक्ति में :

(ब) जब फलकामुख में मध्यरेखा विभाजन होता है (आकृति देखिए)

$$\text{सूत्र : (1) } = (AB \times VD) - V_r, \text{ जहाँ } V_r = \frac{d^3}{2 \tan 15^\circ}$$

$$(2) = CD \times VD$$

$$(3) = (4) = \frac{1}{2} \times BC \times VD$$

(1) फलकामुख के निम्न बाजु के अंतिम रिकन स्थान के परिकेन्द्र में परिवर्तित होता है।

(3) फलका मुख के निम्न बाजु के अंतिम रिकन स्थान के परिकेन्द्र में परिवर्तित होता है।

(2) (4) आयतकार से त्रिभुजीय आकारों में परिवर्तित होते हैं।

केस 1 (घ) (क) (iv) देखिए

इस व्यवस्था में रिक्त स्थानों का स्थानान्तरण निम्न प्रकार हुआ है ऐसा माना जायेगा :

- (1) खुले डैक फलका आवरण के नीचे अंतिम रिक्त स्थान के परिकेन्द्र में स्थानान्तरित होता है;
- (2) खुले डैक के नीचे उच्च बाजू पर अंतिम रिक्त स्थान के परिकेन्द्र में स्थानान्तरित होता है;
- (3) का 1/2 खुले डैक फलका आवरण के नीचे अंतिम रिक्त स्थान में स्थानान्तरित होता है;
- (3) का 1/4 उच्च बाजू पर खुले डैक फलका आवरण के नीचे अंतिम रिक्त स्थान में स्थानान्तरित होता है;
- (3) का 1/4 द्वितीय डैक के नीचे, उच्च बाजू पर अंतिम रिक्त स्थान में स्थानान्तरित होता है;
- (4) द्वितीय डैक के नीचे उच्च बाजू पर अंतिम रिक्त स्थान के परिकेन्द्र में स्थानान्तरित होता है;
- (5) खुले डैक फलका आवरण के नीचे अंतिम रिक्त स्थान के परिकेन्द्र में स्थानान्तरित होता है;

जहाँ :

$$(1) = AB \times Vd_1 - Vr^1, \text{ जहाँ } Vr^1 = \frac{d_1^2}{2 \tan 15^\circ}$$

$$(2) = VD \times Vd_1$$

$$(3) = (EF \times Vd_2) - Vr^2, \text{ जहाँ } Vr^2 = \frac{d_2^2}{2 \tan 15^\circ}$$

$$(4) = GH \times Vd_2$$

$$(5) = BC \times Vd_0$$

खुले डैक फलका आवरण के नीचे अंतिम रिक्त स्थान का आयतन होगा ।

(5)+(1)+(3) का 1/2 और उसका परिकेन्द्र तदनुसार स्थित होगा ।

खुले डैक उच्च बाजू के नीचे अंतिम रिक्त स्थान का आयतन होगा ।

(2)+(3) का 1/4 और उसका परिकेन्द्र तदनुसार स्थित होगा ।
द्वितीय डैक उच्च बाजू के नीचे अंतिम रिक्त स्थान का आयतन होगा ।

(4)+(3) का 1/4 और उसका परिकेन्द्र तदनुसार स्थित होगा ।

(iii) क्षीण डैक मध्य रेखा विभाजन सहित दो डैक व्यवस्था (आकृति 6 देखिए)

इस व्यवस्था में रिक्त स्थानों का स्थानान्तरण, आकृति 8 में निविष्ट, जो उपर्युक्त (ब) (घ) (ii) में प्रारोक्षित सिद्धांतों का अनुसरण करता है के अनुसार हुआ है ऐसा माना जायेगा सिवाय कि मध्यरेखा विभाजन की उपस्थिति (1) और (3) का भागतः अनुप्रस्थ स्थानान्तरण कम करे ।

(iv) क्षीण डैक व्यवस्था । (आकृति 7 देखिए)

इस व्यवस्था में रिक्त स्थानों का स्थानान्तरण निम्न प्रकार हुआ है ऐसा माना जायेगा :

- (1) खुले डैक फलका आवरण के नीचे अंतिम रिक्त स्थान के परिकेन्द्र में स्थानान्तरित होता है;
- (2) खुले डैक के नीचे उच्च बाजू पर अंतिम रिक्त स्थान के परिकेन्द्र में स्थानान्तरित होता है;
- (3) का 1/2 खुले डैक फलका आवरण के नीचे अंतिम रिक्त स्थान में स्थानान्तरित होता है;
- (3) का 1/4 खुले डैक के नीचे उच्च बाजू पर अंतिम रिक्त स्थान में स्थानान्तरित होता है;
- (3) का 1/4 द्वितीय डैक के नीचे उच्च बाजू पर अंतिम रिक्त स्थान में स्थानान्तरित होता है;
- (4) द्वितीय डैक के नीचे उच्च बाजू पर अंतिम रिक्त स्थान के परिकेन्द्र में स्थानान्तरित होता है ।
- (5) का 1/2 खुले डैक फलका आवरण के नीचे अंतिम रिक्त स्थान में स्थानान्तरित होता है;
- (5) का 1/4 खुले डैक के नीचे उच्च बाजू पर अंतिम रिक्त स्थान में स्थानान्तरित होता है;
- (5) का 1/4 द्वितीय डैक के नीचे उच्च बाजू पर अंतिम रिक्त स्थान में स्थानान्तरित होता है;
- (5) का 1/4 तृतीय डैक के नीचे उच्च बाजू पर अंतिम रिक्त स्थान में स्थानान्तरित होता है;
- (6) तृतीय डैक के नीचे उच्च बाजू पर अंतिम रिक्त स्थान के परिकेन्द्र में स्थानान्तरित होता है;
- (7) खुले डैक फलका आवरण के नीचे अंतिम स्थान के परिकेन्द्र में स्थानान्तरित होता है ;

जहाँ :—

$$(1) = (AB \times Vd_1) - Vr^1, \text{ जहाँ } Vr^1 = \frac{d_1^2}{2 \tan 15^\circ}$$

$$(2) = CD \times Vd_1$$

$$(3) = (EF \times Vd_2) - Vr^2, \text{ जहाँ } Vr^2 = \frac{d_2^2}{2 \tan 15^\circ}$$

$$(4) = GH \times Vd_2$$

$$(5) = (JK \times Vd_3) - Vr^3, \text{ जहाँ } Vr^3 = \frac{d_3^2}{2 \tan 15^\circ}$$

$$(6) = LM \times Vd_3$$

$$(7) = BC \times Vd_0$$

खुले डैक फलका आवरण के नीचे अंतिम रिक्त स्थान का आयतन होगा (7)

(7)+(1)+(3) का $1/2(5)$ का $1/4$ और तदनुसार उसका परिकेन्द्र स्थित होगा।

खुले डैक के नीचे उच्च बाजू पर अंतिम रिक्त स्थान का आयतन होगा (2)+(3) का $1/4+(5)$ और तदनुसार उसका परिकेन्द्र स्थित होगा।

द्वितीय डैक के नीचे उच्च बाजू पर अंतिम रिक्त स्थान का आयतन होगा।

(4)+(3) का $1/4+(5)$ और तदनुसार उसका परिकेन्द्र स्थित होगा।

तृतीय डैक के नीचे उच्च बाजू पर अंतिम रिक्त स्थान का आयतन होगा।

(6)+(5) का $1/4$ और तदनुसार उसका परिकेन्द्र स्थित होगा।

(5) अतिरिक्त बहुचरण डैक व्यवस्थाएं:

ऐसी व्यवस्थाओं के लिए ऐसा माना जायेगा कि हर अनिश्चित डैक के नीचे निम्न बाजू के रिक्त स्थान उच्च बाजू के सभी रिक्त स्थानों में समान रूप से विभाजित किये जाते हैं। उदाहरणार्थ, यदि आकृति 7 में चतुर्थ डैक जोड़ दिया, तो उस डैक के नीचे निम्न बाजू के रिक्त स्थान उच्च

बाजू के पांच रिक्त स्थानों में (जैसे फलका मुख, खुला डैक, द्वितीय डैक, तृतीय डैक और चतुर्थ डैक क्रमशः) से प्रत्येक स्थान में समरूप से स्थानान्तरित हुए हैं ऐसा माना जायेगा।

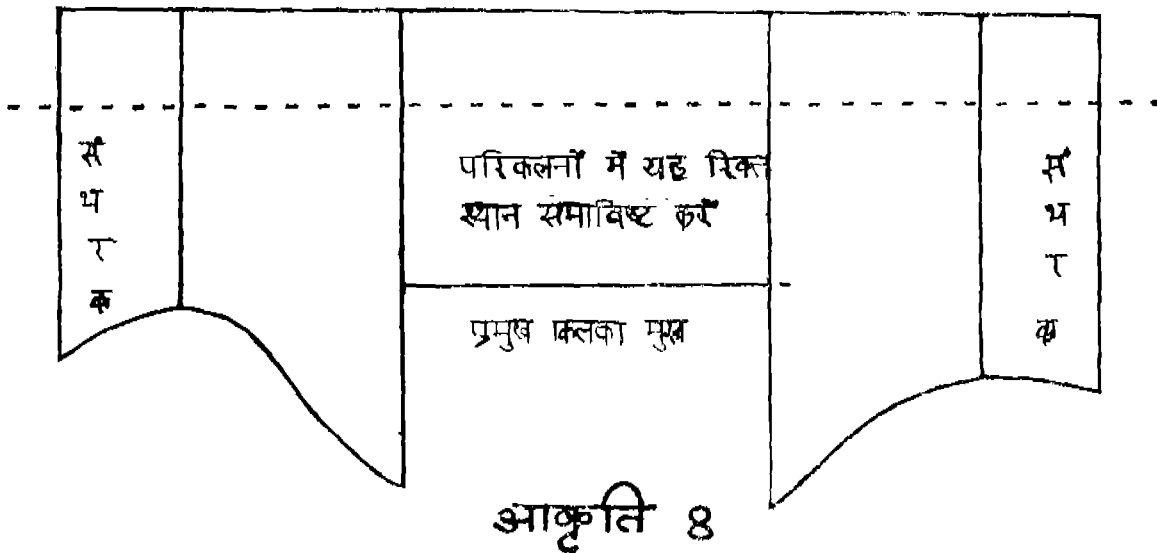
(ब) डैक छिद्रण सहित:

(1) जहाँ डैक छिद्रित होते हैं, ऐसे डैकों के नीचे के रिक्त स्थान मोभरण में कम होंगे। बाकी मूल रिक्त स्थानों की प्रतिशतता आकृति 12 से प्राप्त की जाये।

(2) पोत गति के प्रभाव में यह माना जायेगा कि ये रिक्त स्थान छिद्रणों के मध्य अनुप्रस्थ रूप से अन्त में पूर्णतः भरे हैं। विभाग का समाधान हो जाये कि ये छिद्रण डैक की अनुलंब सीमा के अन्त तक इस प्रकार बांटे गये हैं कि प्रभावकारी रिक्त स्थान मोभरण माध्य हो तब धूर्ण उपर्युक्त (अ) में उपर्युक्त पद्धति से, बड़े रिक्त स्थानों के आयतनों में वृद्धि और छिद्रक डैक के नीचे के कोई शेष रिक्त स्थानों की ओर उचित स्थान देकर परिकल्पित किये जायेंगे।

भाग-III संभरक और ट्रंक

(अ) सुस्थित पक्ष संभरक (आकृति 8 देखिए)



आकृति 8

यह माना जायेगा कि पोत गति के प्रभाव के अधीन डैक के नीचे के रिक्त स्थान अनुलंब संभरक के युग्म से अनाज प्रवाह द्वारा पूर्णतः भरे जायेंगे बशर्ते कि:

(1) संभरक डैक की पूरी लंबाई तक विस्थापित है और उनमें छिद्रण पर्याप्त दूरी पर है;

(2) प्रत्येक संभरक का आयतन डैक के नीचे के फलका बाजू के गार्डर और उसके अनुवर्ती के बाहरी रिक्त स्थान के आयतन के बराबर है।

(ब) प्रमुख फलका मुखों के ऊपर स्थित ट्रंक (आकृति 9 देखिए) इस व्यवस्था में रिक्त स्थानों का स्थानान्तरण निम्न प्रकार हुआ है ऐसा माना जायेगा:

(1) ट्रंक बाजू के पास अंतिम रिक्त स्थान के परिकेन्द्र में स्थानान्तरित होता है;

(2) खुले डैक के नीचे उच्च बाजू पर अंतिम रिक्त स्थान के परिकेन्द्र में स्थानान्तरित होता है;

(3) का $2/3$ मध्य रेखा पर ट्रंक के तल के पास स्थानान्तरित होता है;

(3) का $1/3$ द्वितीय डैक के नीचे उच्च बाजू पर रिक्त स्थान में स्थानान्तरित होता है।

(4) द्वितीय डैक के नीचे उच्च बाजू पर अंतिम रिक्त स्थान के परिकेन्द्र में स्थानान्तरित होता है।

जहां:

$$(1) = AB \times Vd_1$$

$$(2) = CD \times Vd_1$$

$$(3) = (EF \times Vd_2) - Vr^2, \text{ जहां } Vr^2 = \frac{d_2^2}{2 \tan 15^\circ}$$

$$(4) = GH \times Vd_2$$

द्वितीय डैक के नीचे उच्च बाजू पर अंतिम रिक्त स्थान का आयतन होगा (4)+(3) का $1/3$ और तदनुसार उसका परिकेन्द्र स्थित होगा।

स्वयं ट्रंक में नति घूर्ण यह माना जायेगा जो 25 अंश के पूर्ण बेज स्थानान्तरण से उत्पन्न होता है।

जहां ट्रंक निम्न ट्वीन डैकों के ऊपर स्थित है, रिक्त स्थान का गृहीत नमूना इस अनुसूची के भाग 2(ड)(अ)(2), (3) या (4) के सिद्धांतों के अनुसार स्थानान्तरित होता है।

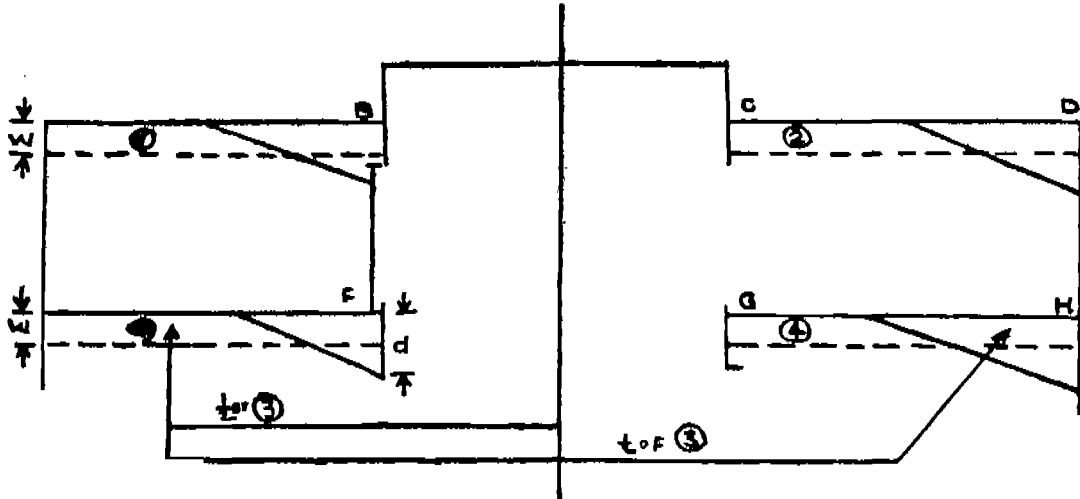
भाग—IV अंशतः भरे कक्ष

(अ) साधारण :

जब खुले अनाज को मुक्त सतह परिशिष्ट के भाग 5 के अनुसार सुरक्षित नहीं की गयी हो तब यह माना जायेगा कि सभी सतहों के ऊपर 25 अंश के सतह बिचलन (बेज कोण) को स्थानान्तरण होता है

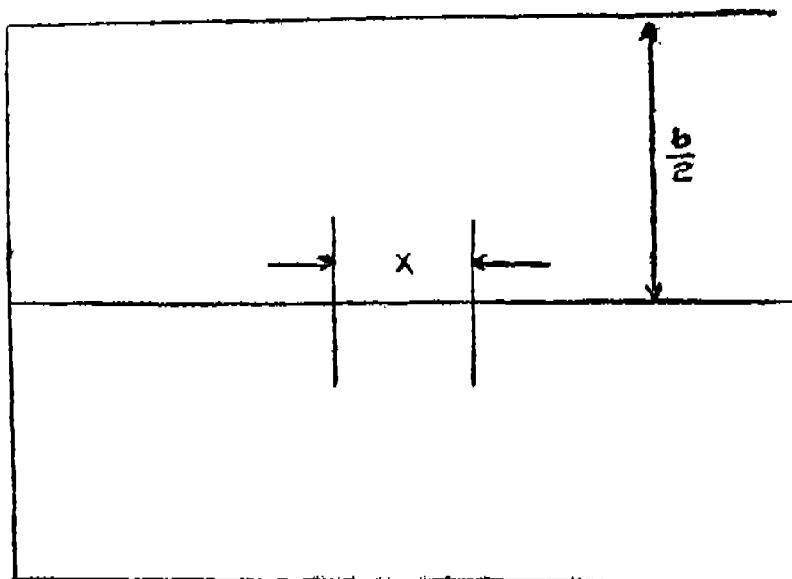
(ब) विच्छिन्न अनुलम्ब विभाजन :

कक्ष, जिसमें अनुलम्ब विभाजन अनुप्रस्थ सीमाधों में विच्छिन्न है, में ऐसे किसी भी विभाजनों के ऊपर की लंबाई जो अनाज सतहों के पूर्ण चौड़ाई विच्छिन्नों को रोकने के लिए युक्तियों के रूप में प्रभावकारी होती हैं, विचाराधीन विभाजन के भाग को वास्तविक लंबाई च्छेद (—) विभाजन और संलग्न विभाजन या पोत बाजू के बीच की दो अनुप्रस्थ दूरियों में से बड़ी दूरी को दो बटा सात (2/7) (आकृति 10 और 11 देखिए) मानी जायेगी।



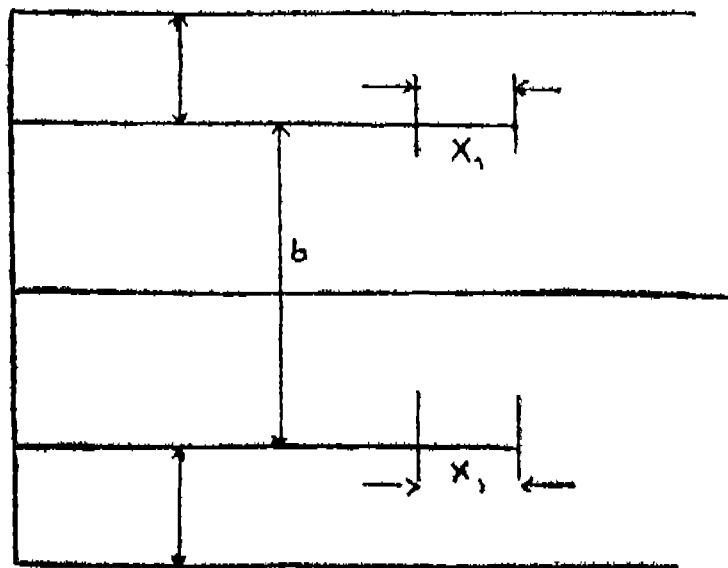
आकृति 9

आकृति 9 सभी अंतिम अनाज सतहों की दलाने 15° पर।



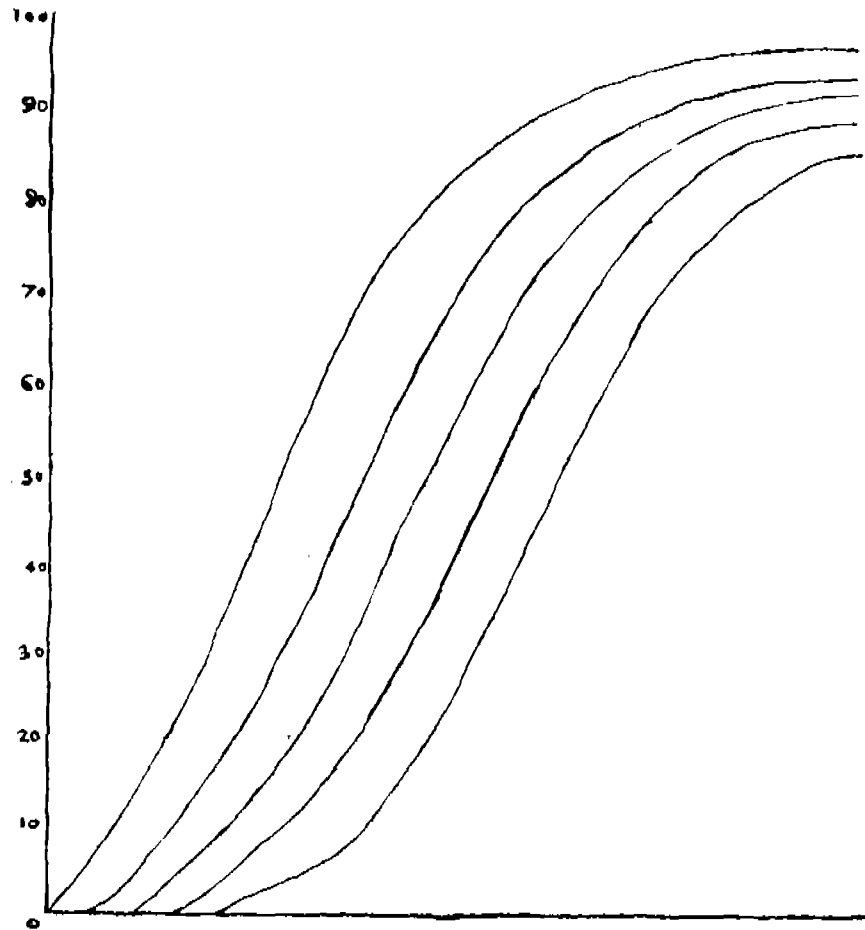
आकृति 10

कमी $x = 2/7 = x/6/2$ अर्थात् $6/7$ जहाँ $6 =$ फलके की चौड़ाई



आकृति 11

कमी $x_1 = 2/7$ (9 या 6 जो भी बड़ा हो)



घट्टों का अन्तर दूरी का अन्तर (केंद्र से केंद्र मीटरों में)

आकृति 12

अनुसूची-II

भाग --1 अनाज फिटिंग का बल

- (अ) साधारण (कार्यकारी प्रतिबल) सहित
- (ब) दोनों बाजूओं पर नौभरित प्रभाग
- (क) एक ही बाजू पर नौभरित प्रभाग
- (ङ) तन्तुबन्ध

भाग-II अनाज: भरे कक्षों की सुरक्षितता

- (अ) पट्टियों से बांधना या रस्मियों से बांधना
- (ब) व्यवस्थाएं सुरक्षित करने के निर्माण संबंधी विवरण
- (क) बोरो में बन्द अनाज

भाग 1 अनाज फिटिंग का बल

(अ) साधारण :

(क) काष्ठ-अनाज फिटिंग के लिए प्रयुक्त सभी काष्ठ अच्छे मजबूत धुने का और उस प्रकार और श्रेणी का होगा जो इस हेतु ममाधान कारक गिद्ध हुआ है। काष्ठ के वास्तविक लंबाई परमाणु इसके पञ्चात् इस अनुसूची में निर्दिष्ट परिमाणों के अनुसार होंगे। बाहरी बाजू का प्लायवुड

जलसह सरेम से जोड़ा होगा और इस प्रकार लगाया जायगा कि अग्रभाग से अनाज की दिशा आर्म्बित खड़े खंबों की अभिलंबीत होंगी या बाइन्डर का प्रयोग किया जाय बशर्ते कि उसका बल समुचित घटक बिरान के ठोस काष्ठ के तुल्य बल हो।

(ख) कार्यकारी प्रतिबल - एक ही बाजू पर नौभरित प्रभागों के परिमाण परिकल्पित करने समय इस अनुसूची के इस भाग के परिच्छेद (क), (घ) और (द) की सुपरणियों का उपयोग करने हुए निम्न कार्यकारी प्रतिबलों का प्रयोग किया जाए।

इस्पात के प्रभाग के लिए	2,000 कि० ग्रा०
हर वर्ग से० मी० काष्ठ के प्रभागों के लिए	160 कि० ग्रा०
हर वर्ग से० मी०	

(ग) अन्य धातु - काष्ठ या इस्पात से भिन्न धातु ऐसे प्रभागों के लिए अनुमोदित किये जा सकते हैं बशर्ते कि उनके यांत्रिक गुणधर्मों पर उचित ध्यान दिया गया है।

(घ) खड़े खंबे

(1) खड़े खंबों के सिरे उनके खोले से निकल न जाने का बंदोबस्त करने के उपाय जब तक नहीं किये गये हों, प्रत्येक खड़े खंबे

के हर सिरे के पास के छिद्र की गहराई 75 मि०मी० से कम नहीं होगी। यदि खड़ा खंबा सिरे पर सुरक्षित नहीं है, तो अन्युच्च धाम या रस्सी यथासाध्य उसके पास खगायी जायेगी।

- (2) खड़े खंबों की अनुप्रस्थ काट के भाग को हटाकर रोक तख्तों को निविष्ट करने के लिए की गयी व्यवस्थाएं ऐसी होंगी कि प्रतिबलों का स्थानीय स्तर अनुचित रूप से अधिक नहीं होगा।
- (3) एक बगल पर नौभरित प्रभाग को आलंब रूप से प्रयुक्त खड़े खंबे पर तथा अधिकतम नति धूर्ण सामान्यतः ऐसा मानकर परिकल्पित किया जाएगा कि खड़े खंबों के सिरे मुक्त रूप में आलंबित हैं। तथापि, यदि विभाग का समाधान हो गया है कि स्थाकृति स्थिरता की कोई भी डिक्की व्यवहार में लाई जाय, तो खड़े खंबों के सिरे के पास की स्थिरता की किसी डिक्की से उत्पन्न अधिकतम नति धूर्ण की किसी भी कमी को संगणना में लिया जाएगा।

(ङ) जोड़ खंड—जहां खड़े खंबे, बाइन्डर्स, या अन्य कोई बल घटक दो विभिन्न खंडों से बनते हैं, विभाजन के हर बगल पर एक एक और पर्याप्त दूरी पर आर पार बोल्टों द्वारा अंतर संयोजित होते हैं, वहां प्रभावी खंड मापांक दो भिन्न खंडों के मापांकों का जोड़ माना जायेगा।

(च) आंशिक प्रभाग : जहां प्रभाग संभरक की पूरी गहराई तक विस्तारित नहीं होने, वहां ऐसे प्रभाग और उनके उर्ध्वखंडे आलंबित या रस्सियों से बांधे जायें ताकि वे उन प्रभागों जो संभरक की पूरी गहराई तक विस्तारित होने हैं के समतुल्य सक्षम हों।

(ब) दोनों बगलों पर नौभरित प्रभाग

(घ) रोक तख्तों]

- (1) रोक तख्तों की मोटाई 50 मि०मी० से कम नहीं होगी और वे अनुच्छेद फिट किये जायेंगे और जहां आवश्यक हो वहां उर्ध्वखंबों से आलंबित होंगे।
- (2) विभिन्न मोटाई के रोक तख्तों के लिये अधिकतम आलंब रहित पाट निम्न प्रकार होंगे।

मोटाई	अधिकतम आलंबरहित पाट
50 मि०मी०	2.5 मीटर
60 मि०मी०	3.0 मीटर
70 मि०मी०	3.5 मीटर
80 मि०मी०	4.0 मीटर

यदि मोटाई इससे अधिक दी गयी हो तो अधिकतम आलंबरहित पाट मोटाई की अधिकता के अनुपात से प्रत्यक्ष बढ़ा जायेगा।

(3) सभी रोक तख्तों के सिरे न्यूनतम 75 मि०मी० जैवरिंग लंबाई के साथ सुरक्षित रूप से बँधायें जायेंगे।

(ब) अन्य धातु : आठ से अन्य धातु से निर्मित प्रभाग उपयुक्त (ब) (क) से निविष्ट गेज तख्तों की शक्ति के समतुल्य होंगे

(क) खड़े खंबे :

(1) दोनों बगलों पर नौभरित भागों के लिए आलंब रूप में प्रयुक्त इस्पात के उर्ध्वधर खंबे $W = aW_1$ द्वारा प्रदत्त खण्ड मापांक के होंगे।

जहां $W = 1$

$W =$ खण्ड मापांक से०मी०³ में;

$a =$ खड़े खंबों के बीच का क्षैतिज पाट मीटरों में।

परिच्छेद मापांक प्रति मीटर पाट W_1 सूत्र

$$W_1 = 14.8 (H_1 - 1.22 \text{ से०मी०}^3 \text{ प्रति मीटर}$$

द्वारा दिये गये मापांक से कम नहीं होगा ;

H_1 उर्ध्वधर आलंब रहित पाट मीटरों में है, और वह किसी दो संलग्न या धामों के बीच की या धाम और अर्धधर खंबे के किसी एक सिरे के बीच की दूरी का अधिकतम मूल्य माना जायेगा। जहां यह दूरी 2.44 मीटरों से कम है वहां उसका मापांक उसका वास्तविक मूल्य 2.44 मीटर मानकर ही परिकल्पित किया जायेगा।

(2) काष्ठ खड़े खंबों के मापांक संगत इस्पात खड़े खंबों के मापांकों को 12.7 से गुणा करके निर्धारित किये जायेंगे। यदि अन्य धातु प्रयुक्त किये गये हों तो उनके मापांक, कम के कम इस्पात के लिये अपेक्षित मापांक से इस्पात के लिये अनुसूची प्रतिबलों और प्रयुक्त धातु के प्रतिबलों के अनुपात के अनुसार बढ़ित होंगे। ऐसे मामले में प्रत्येक खड़े खंबे की मापेक्ष दृढ़ता की और भी यह निर्दिष्ट करने के लिए कि लुकाव अत्यधिक न हो, समुचित ध्यान दिया जायेगा।

(3) खड़े खंबों के बीच की क्षैतिज दूरी ऐसी होगी कि रोक तख्तों के आलंब रहित पाट, अनुसूची के इस भाग के परिच्छेद (अ) (2) में निविष्ट अधिकतम पाट से अधिक न हो।

(ड) धाम

(1) काष्ठ धाम, जब प्रयुक्त है, एक टुकड़े से निर्मित होंगे और प्रत्येक सिरे के पास सुरक्षित रूप से बँधायें जायेंगे तथा पोत के स्थायी ढांचे की ओर, सिवाय कि वे सीधे पोत की प्लेटिंग बाजू की ओर रखे न हों श्रुते होंगे।

(2) निम्न उप परिच्छेद (3) और (4) के उपबंधों के अधीन, काष्ठ धामों के न्यूनतम आकार निम्न प्रकार होंगे।

धाम की लंबाई मीटरों में	आयताकार	
	खण्ड मि०मी०	वृत्ताकार खण्ड का व्यास मि०मी०
3 मी० से अनधिक	150 × 100	140
3 मी० से अधिक परन्तु 4 मी० से अनधिक	150 × 150	165
5 मी० से अधिक परन्तु 6 मी० से अनधिक	150 × 150	180
6 मी० से अधिक परन्तु 7 मी० से अनधिक	200 × 150	190
7 मी० से अधिक परन्तु 8 मी० से अनधिक	200 × 150	200
8 मी० से अधिक	200 × 150	215

7 मीटर या अधिक के लंबाई के धाम लगभग आधी लंबाई पर सुरक्षितता से सेतुबन्धित किये जायेंगे।

(3) जब खड़े खंबों के बीच की क्षैतिज दूरी 4 मीटरों से महत्वपूर्ण रूप से बढ़ती है, तब धामों के जड़त्व अपूर्ण सीधे यमानुपात में बढ़ेंगे।

(4) जहां धाम का क्षैतिज से कोण 10 अंशों से अधिक हो जाता है, वहां इस परिच्छेद से उप-परिच्छेद (2) द्वारा अपेक्षित खड़े आकार का धाम उस धाम के आगे लगाया जायेगा परन्तु किसी

धाम और क्षैतिज के बीच का कोण किसी भी दिशा में 45
घणों से अधिक नहीं होगा।

- (इ) रस्मियाँ : जहाँ दोनों बगलों पर मौभरित प्रभागों के लिए
रस्मियाँ प्रालंब रूप में प्रयुक्त की गयी हैं, वहाँ वे क्षैतिजतः
लगायी जाएंगी या यथासाध्य उनके सन्निकट में, हर सिरे पर

(क) एकही बगल पर मौभरित प्रभाग

(घ) अनुलंब प्रभाग : प्रभाग की लंबाई की प्रति मीटर भार निम्न प्रकार होगा।

सारणी-1*

B(मी०)

1	2	3	4	5	6	7	8	10
1.5	850	900	1010	1225	1500	1770	2060	2645
2.0	1390	1505	1710	1985	2295	2605	2930	3590
2.5	1985	2160	2430	2740	3090	3435	3800	4535
3.0	2615	2845	3150	3500	3885	4270	4670	5480
3.5	3245	3525	3870	4255	4680	5100	5540	6425
4.0	3890	4210	4590	5015	5475	5935	6410	7370
4.5	4535	4890	5310	5770	6270	6765	7880	8315
5.0	5185	5570	6030	6530	7065	7600	8150	9280
6.0	6475	6935	7470	8045	8655	9265	9890	11150
7.0	7765	8300	8910	9560	10245	10930	11630	13040
8.0	9055	9665	10350	11075	11835	12595	13370	14930
9.0	10345	11030	11790	12590	13425	14260	15110	16820
10.0	11635	12395	13230	14105	15015	15925	16850	18710

h-प्रनाज की ऊँचाई मीटरों में**

B-बुले प्रनाज का अनुप्रस्थ विस्तार मीटरों में।

* उपरोक्त भार ब्रिटिश एककों (टन/फीट) में परिवर्तित करने के लिए 1 कि० ग्राम० प्रति मीटर लंबाई 0.0003 टन प्रति फुट लंबाई के बराबर माना जायेगा।

** जहाँ प्रभाग से संभरक या फलाकामुख तक का अन्तर 1 मीटर या उससे कम हो, तो ऊँचाई h उस फलकामुख या संभरक में प्रनाज के स्तर तक की मानी जाएगी। अन्य सभी मामलों में ऊँचाई प्रभागों के मार्ग के ऊपरी डैक तक मानी जाएगी।

h और/या B के अन्य मूल्यों के लिए भार यथावश्यक रेखीय अन्तर्बोध या बहुविक्षेप द्वारा निर्धारित किया जाएगा।

(ब) अनुप्रस्थ प्रभाग/प्रभागों का भार कि० ग्राम० में प्रति मीटर लंबाई निम्न प्रकार माना जायेगा :

सारणी-2

L(मी०)

h	1	2	3	4	5	6	7	8	10	12	14	16
1.5	670	690	730	780	835	890	935	1000	1040	1050	1050	1050
2.0	1040	1100	1170	1245	1325	1400	1470	1575	1640	1660	1660	1660
2.5	1460	1565	1675	1780	1880	1980	2075	2210	2285	2305	2305	2305
3.0	1925	2065	2205	2340	2470	2590	2695	2845	2925	2950	2950	2950
3.5	2425	2605	2770	2930	3075	3205	3320	3480	3570	3595	3595	3595
4.0	2950	3160	3355	3535	3690	3830	3950	4120	4210	4235	4240	4240
4.5	3495	3725	3940	4130	4295	4440	4565	4750	4850	4880	4885	4885
5.0	4050	4305	4535	4735	4910	5060	5190	5385	5490	5525	5530	5530
6.0	5175	5465	5720	5954	6135	6300	6445	6655	6775	6815	6825	6825
7.0	6300	6620	6905	7150	7365	7445	7700	7930	8055	8105	8115	8115
8.0	7425	7780	8090	8360	8590	8685	8950	9200	9340	9395	9410	9410
9.0	8550	8935	9275	9565	9820	9930	10205	10475	10620	10685	10705	10705
10.0	9680	10095	10460	10770	11045	11270	11460	11745	11905	11975	11997	11997

h-प्रनाज की ऊँचाई मीटरों में।

L-बुले प्रनाज का अनुलंब विस्तार मीटरों में

* उपरोक्त भार ब्रिटिश एककों (टन/फीट) में परिवर्तित करने के लिए 1 कि० ग्राम० प्रति मीटर लंबाई 0.0003 टन प्रति फुट लंबाई के बराबर माना जायेगा।

** जहाँ प्रभाग से संभरक या फलकामुख तक का अन्तर 1 मीटर है, वहाँ ऊँचाई h, उस फलकामुख या संभरक के प्रनाज के स्तर तक मानी जाएगी। अन्य सभी मामलों में ऊँचाई प्रभाग के मार्ग के ऊपरी डैक तक मानी जाएगी।

h और/या L के अन्य मूल्यांकों के लिए रेखीय अन्तर्बेशन या बहुर्वेशन द्वारा यथावश्यक भार निर्धारित किया जायेगा।

(क) भारों का उर्ध्वाधर वितरण : सारणी 1 और 12 में निविष्ट प्रभावों का प्रति एकक लम्बाई का कुल भार, यदि आवश्यक हो, ऊंचाई के समतुल्य वितरण के समान माना जायेगा। ऐसे मामले में उर्ध्वाधर घटक या खड़े खंभे के ऊपरी और निम्न सिरे के पास दाबभार प्रभाग नहीं होंगे। ऊपरी सिरे के पास दाब भार उर्ध्वाधर घटक या खड़े खंभे द्वारा आलम्बीन कुल भार की प्रतिशतताओं के रूप में अभिव्यक्त किया जायेगा जो कि सारणी 3 और 4 में निविष्ट है।

एक ही बाजू पर नीभरित अनुलम्ब प्रभाग

सारणी—3

बड़े खंभे के ऊपरी सिरे के पास बेयरिंग दाब भार प्रतिशतता के रूप में (सारणी—1)

B(मी०)

h (मी०)	2	3	4	5	6	7	8	10
1.5	43.3	45.1	45.9	46.2	46.2	46.2	46.2	46.2
2.0	44.5	46.7	47.6	47.8	47.8	47.8	47.8	47.8
2.5	45.4	47.6	48.6	48.8	48.8	48.8	48.8	48.8
3.0	46.0	48.3	49.2	49.4	49.4	49.4	49.4	49.4
3.5	46.5	48.8	49.7	49.8	49.8	49.8	48.9	49.8
4.0	47.0	49.1	49.9	50.1	50.1	50.1	50.1	50.1
4.5	47.4	49.4	50.1	50.2	50.2	50.2	50.2	50.2
5.0	47.7	49.4	50.1	50.2	50.2	50.2	50.2	50.2
6.0	47.9	49.5	50.1	50.2	50.2	50.1	50.1	50.2
7.0	47.9	49.5	50.1	50.2	50.2	50.2	50.2	50.2
8.0	47.9	49.5	50.1	50.2	50.2	50.2	50.2	50.2
9.0	47.9	49.5	50.1	50.2	50.2	50.2	50.2	50.2
10.0	47.9	49.5	50.1	50.2	50.2	50.2	50.2	50.2

β खुले अनाज का अनुप्रस्थ विस्तार

h और/या β के अन्य मूल्यांकों के लिए दाब भार यथा साध्य रेखीय अन्तर्बेशन या बहुर्वेशन द्वारा निर्धारित किया जायेगा।

एक ही बाजू पर नीभरित अनुप्रस्थ प्रभाग

सारणी—4

खड़े खंभे के ऊपरी सिरे के पास बेयरिंग दाब भार प्रतिशतता के रूप में (सारणी—2)

—(मी०)

h (मी०)	2	3	4	5	6	7	8	10	12	14	16
1.5	37.3	38.7	39.7	40.6	41.4	42.1	42.6	43.6	44.3	44.8	45.0
2.0	39.6	40.6	41.4	41.1	42.7	43.1	43.6	44.3	44.7	45.0	45.2
2.5	41.0	41.8	42.5	43.0	43.5	43.8	44.2	44.7	45.0	45.2	45.2
3.0	42.1	42.8	43.3	43.8	44.2	44.5	44.7	45.0	45.2	45.3	45.3
3.5	42.9	43.5	43.9	44.3	44.6	44.8	45.0	45.2	45.3	45.3	45.3
4.0	43.5	44.0	44.4	44.7	44.9	45.0	45.2	45.4	45.4	45.4	45.4
5.0	43.9	44.3	44.6	44.8	45.0	45.2	45.3	45.5	45.5	45.5	45.5
6.0	44.2	44.5	44.8	45.0	45.2	45.3	45.4	45.6	45.6	45.6	45.6
7.0	44.3	44.6	44.9	45.1	45.3	45.4	45.5	45.6	45.6	45.6	45.6
8.0	44.3	44.6	44.9	45.1	45.3	45.4	45.5	45.6	45.6	45.6	45.6
9.0	44.3	44.6	44.9	45.1	45.3	45.4	45.5	45.6	45.6	45.6	45.6
10.0	44.3	44.6	44.9	45.1	45.3	45.4	45.5	45.6	45.6	45.6	45.6

L—खुले अनाज का अनुलम्ब विस्तार

h और/या H के अन्य मूल्यों के लिए वाबभार यथावश्यक रेखीय अन्वेषण या बहिर्वेशन द्वारा निर्धारित किया जायेगा।

ऐसे उध्वधिर घटक या खड़े खंबों के अन्तिम संयोजनों का सामर्थ्य किसी भी मिरे के पास लावे रखने वाले अधिकतम भार के आधार पर परिकल्पित किया जायेगा। ये भार निम्न प्रकार है :—

शीर्ष पर अधिकतम भार	सारणी 1 में उचित कुल भार के 50%
अनुलम्ब प्रभाग	
तल पर अधिकतम भार	सारणी 1 में उचित कुल भार के 55%
शीर्ष पर अधिकतम भार	सारणी 11 में उचित कुल भार के 45%
अनुप्रस्थ प्रभाग	
तल पर अधिकतम भार	सारणी 11 में उचित कुल भार के 60%

क्षैतिज काष्ठ तन्तों की मोटाई भी उपर्युक्त सारणी 3 और 4 में निर्दिष्ट नौभरण के उध्वधिर वितरण की ओर ध्यान देकर निर्धारित की जा सकेगी और ऐसे मामलों में :

$$t = 10a \frac{\sqrt{P \times K}}{h \times 213.3}$$

जहां

t—तखने की मोटाई मि०मी०;

a—तखने का पैविज पाट, अर्थात् खड़े खंबों के बीच की दूरी मीटरों में;

h—अनाज की उपरी समूह के प्रभाग के तल तक मोटरों में;

P—कुल भार सारणी 1 या 2 से व्युत्पन्न प्रति एकक लम्बाई कि०ग्रा० में;

K—नौभरण के उध्वधिर वितरण पर आश्रित घटक।

जब नौभरण का उध्वधिर वितरण समरूप अर्थात् आयतनी है, ऐसा माना जाता है, तब K 1.0 के बराबर माना जायेगा।

समरूप वितरण के लिए

$$K = 1.0 - 0.06(50 - R)$$

जहां R सारणी 3 या 4 में लिया ऊपरी मिरे का बेयरिंग दाब है।

(इ) रस्सियां या बांस : रस्सियों या धातों के प्रकार इस प्रकार निर्धारित किये जायेंगे कि पूर्व परिच्छेद (अ) और ब में दिये सारणी 1 और 2 से व्युत्पन्न भार भजन भारों के 1/3 से अधिक नहीं होंगे।

(ऊ) तखतियां : जब तखतरी पूर्ण कक्ष में नति धूनों को कम करने के लिए प्रयुक्त की जाती है तब उसकी गहराई, तखतरी के तल से डेक रेखा तक नापने पर, निम्न प्रकार होगी :

9.14 मीटरों तक की मोल्डेड चौड़ाई के पोतों के लिए, 1.22 मीटरों से कम नहीं।

18.29 या उससे अधिक मोटरों की मोल्डेड चौड़ाई के पोतों के लिए, 1.83 मीटरों के कम नहीं।

9.14 मीटर और 18.29 मीटर के बीच की मोल्डेड चौड़ाई के पोतों के लिए तखतरी की न्यूनतम गहराई अन्वेषण द्वारा परिकल्पित की जायेगी।

यथासाध्य तखतरी की शीर्ष (मुख) फलकामुख के मार्ग अर्थात् फलक की बाजू के गड्ढे या अड़बाव और फलके के अन्तिम धरन में अवर डेक संरचना द्वारा बनाया गया हो। उपर्युक्त तखतरी और फलकामुख दोनों

में बन्द अनाज या अन्य यथाचित स्थायी पृथक्कारी कपड़े या उसके समतुल्य पर रखकर पूरा भर दिया जायेगा और संलग्न संरचनाएं तथा सुबांध फलकामुख धरनों, यदि वे उस स्थान में हों, के पास कमकर नौभरित किया जायेगा।

भाग ii—सुरक्षित करना या संशोधन, भरे कक्ष

(क) पट्टियों से या रस्सियों से बांधना

(अ) जब अनाज भरे कक्षों में नति धूनों को छटाने के लिए पट्टियों या रस्सियों से बांधना प्रयुक्त किया जाता है, तब सुरक्षितता निम्न प्रकार परिपूर्ण हो जायेगी :

(i) अनाज समतलित और पूरे विस्तार तक किश्ति उभरिता रूप में चौरस किया जायेगा और टाट पृथक्कारी कपड़ों टारपोलिनों या उसके समतुल्य से आच्छादित किया जायेगा।

(ii) पृथक्कारी कपड़े और/या टारपोलिन कम से कम 1.83 मीटर एक दूसरे पर खड़े हुए हों।

(iii) दो मजबूत 2.5 मि० मी० के काष्ठ फर्श जिसका ऊपरी फर्श अनुलंबी और निम्न फर्श में तिरछी रूप में कील किया गया हो विकल्पतः दो 2.5 मि० मी० के काष्ठ फर्शों के बदले एक 50 मि० मी० का काष्ठ फर्श अनुलम्बी और 50 मि० मी० के जिसकी चौड़ाई 150 मि० मी० से अत्युत्त हो, के तलधारक के शीर्ष पर कील किया गया हो, प्रयुक्त किया जा सकता है। तल-धारक कक्ष को पूरी चौड़ाई तक विस्तारित होंगे और 2.44 मीटरों से अधिक का दूरी पर लगाये होंगे। व्यवस्थाओं में भिन्न धातु प्रयुक्त किये हों और विभाग द्वारा पूर्ववर्ती के समतुल्य माने गये हो तो स्वीकृत होंगे।

(iv) इस्पात तार (19 मि० मी० व्यास या समतुल्य), दुहरी इस्पात पट्टियां (50 मि० मी० × 1.3 मि० मी०) या जंजीर, प्रत्येक की भंजन सामर्थ्य कम से कम 5,000 कि० ग्रा० की हो और 32 मि० मी० के मुड़े हुए बक-सूत्रों से मजबूत की गई हो, रस्सियों के लिए प्रयुक्त की जा सकेगी। जब इस्पात पट्टियों से बांधा जाता है तब 32 मि० मी० के मुड़े हुए बकसूत्रों के स्थान में पाशन बाजू के संयोजन में प्रयुक्त बिब कमने वाला प्रतिस्थापन किया जा सकेगा अर्थात् कि यथावश्यक लगाने के लिए यथाचित मरोड़ प्राप्त हो जब इस्पात पट्टियां प्रयुक्त की जाती हैं, तब मिरोड़ की सुरक्षितता के लिए तीन से अत्युत्त भार किनारे मोड़ कर मूडर की जायेगी। जब तार प्रयुक्त की जाती है, तब चार से अत्युत्त विलय रस्सियों में हाथे बनाने के काम प्रयुक्त किये जायेंगे।

(v) नौभरण की समाप्ति के पूर्व रस्मी फ्रेम से अन्तिम अपेक्षित अनाज समूह के नीचे लगभग 450 मि० मी० के स्थान पर 2.5 मि० मी० की जंजीर या उसके तुल्य-बल धरन बंध द्वारा निश्चित रूप में जोड़ी जायेगी।

(vi) रस्सियां 2.44 मीटरों से अधिक दूरी पर लगायी जायेंगी और प्रत्येक बायें और पीछे की छत पर के धारक कील से आश्रित की जायेंगी। यह धारक 2.5 मि० मी० × 150 मि० मी० से अत्युत्त काष्ठ का या उसके समतुल्य हो और कक्ष की पूरी चौड़ाई तक विस्तारित हो।

रक्षित व्यवस्थाओं के रचनात्मक विवरण

जहाँ बाँयों में बंद अनाज या अन्य यथोचित स्थौरा अंशतः भरे कक्षों की सुरक्षितता के उद्देश्य से रखा जाना है वहाँ खुले अनाज की ऊपरी सतह पृथक्कारी कपड़े या उसके समतुल्य हो और/या यथोचित प्लेटफार्म से आच्छादित किया जायेगा। ऐसे प्लेटफार्म 1.22 मीटरों से अधिक के अन्तराल पर लगाये काष्ठ धारकों और उस पर 100 मि० मी० से अधिक की दूरी पर रखे 25 मि० मी० के काष्ठ तलों से समाविष्ट हों। प्लेटफार्मे भिन्न धातुओं से गर्भित किये जा सकते हैं बशर्ते कि वे विभाग द्वारा तुल्यबल माने गये हैं।

(ग) बोरो में बंद अनाज

बोरो में बंद अनाज पूर्णतः भरे और सुरक्षितता से बन्द किये सज्जत बोरो में बन्द किया जायेगा।

परिशिष्ट-I

(खण्ड 2 देखिए)

वाणिज्य पोत परिवहन (अनाज बहन) नियम, 1974 में विहित किए गए इन्तजामों के समान इन्तजाम।

भाग-I**भाग-क-सामान्य उपबन्ध**

(1) लागू होगा: जब तक कि अभिव्यक्तनः अन्यथा उपबंधित न किया गया हो, यह परिशिष्ट, भाग क, ख और ग सहित, उन सभी पोतों द्वारा अनाज के बहन करने को लागू होता है जिन्हें वाणिज्य पोत परिवहन (अनाज बहन) नियम, 1974 लागू होता है।

(2) परिभाषाएं:—

(क) “अनाज” पद में गेहूँ, मक्का (धाने), जई, राई, जौ, चावल धाने, धोत्र तथा उनके ऐसे संसाधित रूप भी हैं जिनका गुणधर्म अनाज के उस मूल गुणधर्म के समान हैं जो कि उसका प्राकृतिक अवस्था में है,

(ख) “भरा हुआ कक्ष” पद ऐसे कक्ष का प्रति निर्देश करता है जिसमें पैर-3 की अपेक्षा के अनुसार लदान करने और व्यवस्थित करने के पश्चात् अनाज का ढेर अपना ऐसा उच्चतम स्तर प्राप्त कर लेता है जो संभव हो,

(ग) “भागतः भरा हुआ कक्ष” पद का निर्देश ऐसे कक्ष के प्रति है जिसमें इस पैरा के उप-पैरा (ख) में विहित रीति से अनाज के ढेर का लदान नहीं किया गया है,

(घ) “आप्लावन कोण” (Of) पद में पोत का ऐसा झुकाव कोण अभिप्रेत है जहाँ पर ऐसे हल के द्वारा, अधिरक्षता या डैक घर जो वर्षा रोकने के लिए बंद नहीं किये जा सकते हैं बंद जाते हैं। इस परिभाषा की अपनाने से उन छोटे द्वारों को जिन से वर्धमान आप्लावन नहीं हो सकता, खुला समझने की आवश्यकता नहीं है।

(3) अनाज का समतल करना: बिना अनाज वाली सतहों को एक स्तर पर लाने और अनाज के हटाए जाने के प्रभाव को कम करने के लिए सभी आवश्यक और युक्तियुक्त व्यवस्था करनी होगी।

(क) किसी “भरे हुए कक्ष” में अनाज के ढेर को इस प्रकार व्यवस्थित किया जाएगा कि डैक और बाधद्वारी के आवरणों के नीचे की सभी जगहें अधिकतम संभाव्य सीमा तक भर जाएँ।

(ख) लदान के पश्चात् भागतः भरे हुए कक्षों में बिना अनाज वाली सभी सतहें समतल में होंगी।

(ग) केन्द्रीय सरकार, समतल करने से उन मामलों में छूट दे सकेगी जहाँ डैक के नीचे के रिक्त स्थान की समतल ज्यामिति पर,

जो कक्ष, जिसमें भरण तालियों, छिद्रित डैक या अन्य तत्सम साधनों का प्रबंध हो, में मुक्त अनाज के बहाव के परिणामस्वरूप होती है, रिक्त स्थान की गहराई परिकलित करने समय केन्द्रीय सरकार के समाधानप्रद रूप में इस पर ध्यान दिया जाएगा।

1. अक्षत स्थिरता अपेक्षाएं:—

(क) इस पैरा द्वारा अपेक्षित परिकलन वाणिज्य पोत परिवहन (स्थोरा-पोत संचयन और सर्वेक्षण) नियम, 1974 के अनुसार की गई स्थिरता-जानकारी के आधार पर होंगे,

(ख) अनाज को प्रपूज में बहन करने वाले किसी पोत की अक्षत स्थिरता विशेषताएं, भाग ख में वर्णित पद्धति से, अनाज स्थानान्तरण से उत्पन्न झुकाव को ध्यान में रखकर कम से कम निम्न मापदण्ड की पूर्ति करेंगी:

(i) अनाज स्थानान्तरण से उत्पन्न पोत का झुकाव कोण 12 अंश से अधिक नहीं होगा, सिवाय इसके कि यदि केन्द्रीय सरकार यह समझती है कि अनुभव के आधार पर आवश्यक है तो वह कम झुकाव कोण की मांग की अपेक्षा कर सकेगी।

उदाहरणार्थ—अनुश्रेय झुकाव कोण को ऐसे कोण तक सीमित किया जा सकेगा जिसके पास खुले डैक का किनारा शांत पानी में डूब जाए।

(ii) स्थैतिक स्थिरता आरंभ में, स्थिरक भुजा, वा वक्रों के स्थैतिक बूगियों के बीच के अधिकतम अंतर के झुकाव कोण तक या 40 अंश या आप्लावन कोण (Of) जो भी कम हो, नीचरण की सभी स्थितियों में, झुकाव भुजा वक्र तथा स्थिरक भुजा वक्र के मध्य का शूद्ध या अवशिष्ट क्षेत्र 0.075 मीटर-रेडियन से कम नहीं होगा, और

(iii) प्रारम्भिक उपप्लव केन्द्रीय ऊंचाई, टंकियों में द्रव्य की खुरी सतह प्रभावों के लिए शूद्ध करने के पश्चात् 0.30 मीटरों से कम नहीं होगी।

(ग) अनाज को प्रपूज में नीचरण के पूर्व, मास्टर, यदि पक्ष के देश की सरकार द्वारा अपेक्षा की जाए, पैरा (10) और (11) के अधीन अनुमोदित तथा जारी की गई जानकारी का उपयोग करते हुए, उप-पैरा (ख) द्वारा अपेक्षित स्थिरता मित्रान्त का पालन करने के लिए किसी भी समुद्री यात्रा की सभी अवस्थाओं में पोत की क्षमता प्रदर्शित करेगा।

(घ) लदान के पश्चात् मास्टर सुनिश्चित करेगा कि पोत समुद्र यात्रा पर जाने के पहले सीधा खड़ा हो जाएगा।

5. अनुदैर्घ्य प्रभाव और तत्परियां:

(क) “पूर्ण भरे हुए कक्षों” और अंशतः भरे हुए “कक्षों” दोनों में, अनाज-स्थानान्तरण के प्रतिकूल झुकाव प्रभाव को कम करने या अनाज सतह प्राप्त करने के लिए प्रयुक्त स्थोरा की गहराई सीमित करने की युक्ति के रूप में अनुदैर्घ्य प्रभावों की व्यवस्था की जाएगी। ऐसे प्रभावों को ऐसा फिट किया जाएगा कि अनाज निकल न सके और भाग ग के खण्ड 1 के उपबन्धों के अनुसार उनका सशिमर्ण किया जाएगा।

(ख) "पूरे भरे हुए कक्ष" में, किसी प्रभाग में, यदि अनाज स्थानान्तरण का प्रतिकूल प्रभाव कम करने के लिए उसकी व्यवस्था की गई हो, तो वह:—

(i) डैकों के बीच के कक्ष में एक डैक से दूसरे डैक तक विस्तारित होगा, और

(ii) फलक में डैक या हैब-डक्कन के निचली बाजू से भाग ख के खण्ड ii में किए गए वर्णन के अनुसार विस्तारित होगा। अनासी और अन्य तत्सम गुणधर्म वाले तिलहन के मामलों के सिवाय, बिपाट-द्वार के नीचे अनुदैर्घ्य के प्रभाग के बदले ऐसी नष्टरी, जो भाग ग के खण्ड i में विहित रीति के अनुसार बनायी जाएगी, लगायी जाएगी।

(ग) "अनाज: भरे कक्ष" में, प्रभाग, यदि उसकी व्यवस्था की गई हो, अनाज स्तर की सतह के ऊपर कक्ष की अधिकतम चौड़ाई के $1/8$ दूरी तक तथा अनाज स्तर के नीचे उतने ही दूरी तक विस्तारित होगा। जब उसका प्रयोग ऊपर रखने की गहराई सीमित करने के लिए किया जाता है, तब प्रभाग की मध्य रेखा की ऊंचाई अनाज स्तर की सतह के ऊपर कम से कम 0.6 मीटर होगी।

(घ) इसके अनतिरिक्त, अनाज स्थानान्तरण से उत्पन्न प्रतिकूल झुकाव प्रभाव को कक्ष की बगलों और मिरों के पास बोरों में बंद अनाज रख कर या ऐसे अन्य उचित स्थोरा रख कर कम किया जाएगा जिसका स्थान परिवर्तन पर्याप्त रूप से रोका गया है।

6. सुरक्षित रखना:

(क) अनाज के धान परिवर्तन से उत्पन्न प्रतिकूल झुकाव प्रभाव को देखे में लिए बिना, इन उपबंधों के अनुसार किसी भी "अनाज: भरे हुए कक्ष" में अनाज प्रपुंज की सतह समतलित की जाएगी और इसके ऊपर बोरों में बंद अनाज दृढ़ता से लगाकर रखा जाएगा और बिना ढके हुए अनाज की सतह की अधिकतम चौड़ाई के कम से कम $1/16$ भाग या 1.2 मीटर, जो भी अधिक हो, की ऊंचाई तक विस्तारित होगी, बोरों में बंद अनाज के बदले, अन्य उचित स्थोरा, जो कम से कम उतना ही दाब दे सके, उपयोग में लाया जा सकेंगा।

(ख) बोरों में बंद अनाज या अन्य उचित स्थोरा भाग ग के खण्ड ii में वर्णित रीति से आलंबित किया जाएगा। विकल्पतः अनाज के प्रपुंज सतह को भाग ग के खण्ड ii में वर्णित पट्टियों या रस्सियों से सुरक्षित किया जाएगा।

7. फीडर और ट्रंक:

यदि फीडर या ट्रंक लगाये गए हों, तो भाग ख के खण्ड iii में वर्णित पद्धति से झुकाव परिकल्पित करने समय उनके प्रभावों पर उचित ध्यान दिया जाएगा। ऐसे फीडरों की सीमाएं नियत करने वाले प्रभागों की मजबूती भाग ग के खण्ड i के उपबंधों के अनुरूप होगी।

8. सम्मिलित व्यवस्थाएं:

निम्न फलकों और उनके मार्ग की डैकों की बीच की जगहों में एक कक्ष के रूप में लदान किया जाएगा, परंतु अनुप्रस्थ झुकाव परिकल्पित करते समय, निम्न जगहों में अनाज के बहाव को ध्यान में रखा जाएगा।

9. भाग ख और ग का लागू होना:

केन्द्रीय सरकार, भाग ख और ग में विनिर्दिष्ट मान्यताओं का अनुसरण करने में छूट देने के लिए उन मामलों में प्राधिकृत कर सकती है, जहां उसका समाधान हो जाए कि लदान या संरचनात्मक व्यवस्थाओं को ध्यान में रखते हुए वह ऐसा न्यायोचित समझती है, परंतु यह तब जब कि पैरा ख में विहित स्थिरता सिद्धान्तों का पालन किया गया हो। जहां ऐसा प्राधिकार इस पैरा के अधीन दिया जाय, वहां उसकी विनिर्दिष्टां अनाज लदान आंकड़ों में सम्मिलित की जाएगी।

10. प्राधिकार:

(क) इस परिशिष्ट के अनुसार लदे प्रत्येक पोत के लिए प्राधिकार दस्तावेज जारी की जाएगी।

(ख) दस्तावेज के साथ 4 (ग) की अपेक्षाओं की पूर्ति करने के लिए मास्टर को समर्थ बनाने के लिए दी गई अनाज लदान स्थिरता पुस्तिका होगी तथा उसके प्रति इसका निर्देश होगा। यह पुस्तिका परिच्छेद ii की अपेक्षाओं की पूर्ति करेगी।

(ग) ऐसे दस्तावेज की एक प्रति, अनाज लदान स्थिरता आंकड़े और ध्यान फलक पर इसलिए रखे जाएंगे कि मास्टर, यदि ऐसी अपेक्षा की जाए, लदान पतन के देश की सरकार के निरीक्षण के लिए उन्हें पेश कर सके।

(घ) ऐसे प्राधिकार के दस्तावेज के बिना पोत में अनाज का लदान तब तक नहीं किया जाएगा जब तक कि मास्टर केन्द्रीय सरकार या केन्द्रीय सरकार की ओर से लदान पतन की सरकार के समाधानप्रद रूप में यह प्रदर्शित नहीं करता है कि पोत अपनी प्रस्थापित लदान स्थिति में इस परिशिष्ट की अपेक्षाओं का अनुपालन करेगा।

11. अनाज नीधरण सूचना:

यह सूचना: मास्टर को, सभी युक्तिगुक्त लदान स्थितियों में, भाग ख के अनुसार परिकल्पित किए गए अनाज स्थानान्तरण से उत्पन्न झुकाव व्यवधारित करने देने के लिए पर्याप्त होगी। इसमें निम्नलिखित सम्मिलित होंगे:

(क) ऐसी सूचना जो केन्द्रीय सरकार द्वारा अनुमोदित होगी,

(1) प्रत्येक कक्ष, चाहे पूर्णतः भरा हुआ हो या अंशतः भरा हुआ हो, या उसके संयोजन में हो, जिसमें अस्थायी फिटिंगों के प्रभाव भी हैं, के अनाज के झुकाव वक्र या सारणियां,

(2) अधिकतम अनुज्ञेय झुकावों की सारणियां या ऐसी अन्य जानकारी जो मास्टर को अनुज्ञान करने के लिए पर्याप्त है कि वह पैरा 4(ग) की अपेक्षाओं के अनुपालन करें।

(3) किसी अस्थायी फिटिंग की संरचना-मवों की बाबत ब्योरे और जहां लागू हों वहां वे उपबन्ध जो भाग ग के खण्ड 1(ड) की अपेक्षाओं की पूर्ति करने के लिए आवश्यक हों।

(4) विशिष्ट लदान सेवा के संबंध में प्रस्थान और आगमन स्थितियां और जहां आवश्यक हो, वहां अन्तरिम अत्यन्त खराब सेवा स्थितियां।

(5) मास्टर के मार्गदर्शन के लिए एक हल किया हुआ उदाहरण,

(6) इस परिशिष्ट की अपेक्षाओं को संक्षिप्त करने वाली टिप्पणियों के रूप में लदान अनुदेश।

(ख) ऐसी सूचना जो केन्द्रीय सरकार को स्वीकार्य हो:—

(1) पोत की विशिष्टियां,

- (2) खाली पोत का वजन और ठीकी तल रेखा तथा पोत मध्य खण्ड के प्रतिच्छेद से गुरुत्व केन्द्र (Kg.) तक की उर्ध्वाधर दूरी,
- (3) फ्री मरफेस करेक्शन सारणी,
- (4) क्षमता और गुरुत्व केन्द्र

भाग ख—गृहीत झुकाव का परिकलन

खण्ड-1—गृहीत रिक्त स्थानों और अक्षत स्थिरता को परिकलित करने की पद्धति का विवरण

(क) माधारण :

(ख) प्रपूज में अनाज भरण करने वाले पोतों में स्थिरा सतह के स्थानान्तरण से उत्पन्न प्रतिकूल झुकाव के परिकलन करने के प्रयोजन के लिए यह माना जाएगा कि :—

- (1) “पूर्णतः भरे कक्षों” में जो पैरा 3 के अनुसार समतलित किए गए हैं, सभी सीमा सतहों के नीचे रिक्त स्थान जिनका क्षेत्रज झुकाव 30 अंश से कम हो, होता है और वह रिक्त स्थान उस सीमा सतह के समानान्तर है जिसकी औसत गहराई निम्नलिखित सूत्र के अनुसार परिकलित की गई है :

$$\text{बी डी} = \text{बी डी}_1 - 0.75 (\text{डी}-600) \text{ मि. मि.}$$

जहां :

बी डी = मि. मी. में औसत रिक्त स्थान गहराई है,

बी डी₁ = मानक रिक्त स्थान गहराई जो निम्न सारणी 1 में है।

डी = मि. मी. में वास्तविक गहराई गहराई

किसी भी दशा में बी डी को 100 मि. मी. से कम नहीं माना जाएगा।

सारणी 1

हैच के सिरे या बाजू से कक्ष की सीमा तक की दूरी	मानक रिक्त स्थान गहराई, बी डी
मी०	मी० मी०
0.5	570
1.0	530
1.5	500
2.0	480
2.5	450
3.0	440
3.5	430
4.0	430
4.5	430
5.0	430
5.5	450
6.0	470
6.5	490
7.0	520
7.5	550
8.0	590

सारणी 1 पर टिप्पण :

8.0 मीटरों से अधिक दूरियों के लिए मानक रिक्त स्थान गहराई बी०डी०₁ को प्रत्येक 1.0 मीटर दूरी की वृद्धि के लिए 80 मि० मी० की वृद्धि पर से बहिर्वेशन किया जाएगा। जहां हैच बाजू गडर या उसके विस्तार और हैच सिरा धरत गहराई में अन्तर होता है, वहां अधिक गहराई का उपयोग किया जाएगा, सिवाय इसके कि :

- (1) जब हैचबाजू गडर या उसका विस्तार हैच सिरा धर से अधिक छिछला है, तब विपाट-द्वार के बराबर के रिक्त स्थानों को कम गहराई के उपयोग करके परिकलित किया जाएगा, और
- (2) जब हैच सिरा धरत हैचबाजू गडर या उसके विस्तार से अधिक गडर के विस्तार के फल का विपाट-द्वार के आगे पीछे के रिक्त स्थानों को कम गहराई के उपयोग करके परिकलित किया जाएगा,
- (3) जहां विपाट-द्वार से स्पष्टतः उभरा डैक होता है वहां उभरे डैक के नीचे से परिमित रिक्त स्थान की औसत गहराई का परिकलन हैचबाजू धरत के गडर की गहराई सहित उभरे डैक की ऊंचाई में जोड़ कर मानक रिक्त स्थान गहराई के उपयोग से किया जाएगा।
- (ii) “पूर्णतः भरे हुए कक्षों” में, जो पैरा 3 के अनुसार समतलित नहीं किये गए हैं और जहां सीमा सतह का क्षेत्रज झुकाव 30 अंश से कम है, स्थिरा सतह का क्षेत्रज झुकाव लदान के पश्चात् 30 अंश होगा।
- (iii) पूर्ण भरे हुए विपाट-द्वारों के भीतर और हैच डक्कन के भीतर किसी खुले रिक्त स्थान के अतिरिक्त एक रिक्त स्थान है जिसकी औसत गहराई, हैच डक्कन के निम्नतम भाग से या हैचबाजू के अड़वाल के सिरे से, जो भी निम्नतर हो, अनाज सतह तक माप करने पर 150 मि० मी० होगी।

(ख) “भागतः भरे हुए कक्षों” में माने गए अनाज सतह की अभिरचना का विवरण इस भाग के खण्ड 4 में दिखलाया गया है।

(ग) पैरा 4(ख) (आकृति 1 देखिए) में दर्शित स्थिरता सिद्धान्तों के अनुपालन सिद्ध करने के प्रयोजन के लिए, पोत स्थिरता परिकलन, माधारणतः इस धारणा पर आधारित होगा कि पूर्ण भरे हुए कक्ष में स्थिरा का गुरुत्व केन्द्र, संपूर्ण स्थिरा जगह के आयतनी केन्द्र के पास है। उन मामलों में, जहां केन्द्रीय सरकार प्राधिकृत करती है, कि “पूर्ण भरे हुए कक्षों” में स्थिरा के गुरुत्व केन्द्र की उर्ध्वाधर स्थिति में स्थित डैक के नीचे के गृहीत रिक्त स्थानों के प्रभाव को ध्यान से रखना है, वहां उस समय यह आवश्यक होगा कि अनाज सतहों के उर्ध्वाधर विचलन के प्रतिकूल प्रभाव की क्षतिपूर्ति, अनाज के अनुप्रस्थ विचलन से उत्पन्न गृहीत झुकाव निम्न प्रकार बढ़ा कर करें :

$$\text{कुल झुकाव} = 1.06 \times \text{परिकलित अनुप्रस्थ झुकाव}$$

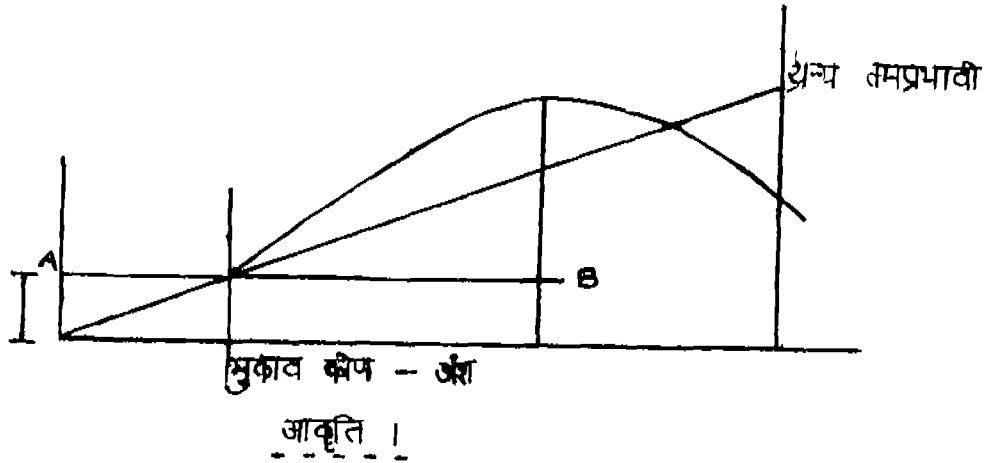
सभी मामलों में, “पूर्ण भरे हुए कक्ष” में स्थिरा का भार

नौभरण गुणों से विभाजित पूर्ण स्थिरा जगह का आयतन होगा।

(घ) “भागतः भरे हुए कक्षों” में अनाज सतहों के उर्ध्वाधर स्थानान्तरण का प्रतिकूल प्रभाव निम्न प्रकार लेखा में लिया जाएगा :

$$\text{कुल झुकाव} = 1.12 \times \text{परिकलित अनुप्रस्थ झुकाव}।$$

(ङ) उपर्युक्त पैरा (ग) और (घ) में अपेक्षित क्षतिपूर्ति के लिए कोई अन्य समप्रभावी पद्धति अपनाई जा सकती है।



आकृति 1 पर नोट

- जहाँ— $\lambda 0 = \frac{\text{अनुप्रस्थ विचलन से उत्पन्न माना हुआ आय तनिक मुकाव}}{\text{नौभरण गुणांक} \times \text{वजन (पानी में)}}$
1. $\lambda 40 = 0.8 \times \lambda 0,$

नौभरण गुणांक = अनाज स्थीरा के वजन का प्रति एकक आयतन।

पानी में वजन = पीत का वजन, ईंधन, ताजा पानी, भण्डार आदि और स्थीरा

2. स्थिरक भुजा वक्र आड़ी—वक्रों, जो इन अपेक्षाओं के लिए ठीक तरह से वक्र को परिभाषित करने के लिए पर्याप्त संख्या में हैं, से व्युत्पन्न होगा और, हमने 12 अंश तथा 40 अंश के आड़ी वक्र भी हैं।

खण्ड II पूर्ण भरे हुए वक्र का माना हुआ आयतनिक मुकाव

(अ) साधारण:

- (क) अनाज सतह विचलन का संबंध विचाराधीन कक्ष के भाग के आर-पार अनुप्रस्थ खण्ड से है और उस भाग का कुल मुकाव प्राप्त करने के लिए परिणामिक मुकाव को लंबाई से गुणा किया जाएगा।
- (ख) अनाज विचलन से उत्पन्न माना गया अनुप्रस्थ मुकाव, अनाज के ऊँची ओर से नीची ओर विक्षलित होने के पश्चात् हुए रिक्त स्थानों के आकार और स्थिति के अन्तिम परिवर्तनों का परिणाम है।

(ग) विचलन के पश्चात् परिणामिक अनाज सतह क्षैतिज में 1.5 अंश पर मानी जाएगी।

(घ) ऐसे अधिकतम रिक्त स्थान का क्षेत्रफल का जो अनुदैर्घ्य संरचनात्मक घटक के पास हो सकता है, परिकलन करने समय, किसी क्षैतिज सतहो अर्थात् फ्लॉजों या मुख बारी के प्रभावों पर ध्यान नहीं दिया जाएगा।

(ङ) प्रारम्भिक और अन्तिम रिक्त स्थानों के कुल क्षेत्रफल समान होंगे।

(च) अनुदैर्घ्य विभिन्न प्रभाग अपनी पूरी लंबाई में प्रभावशाली माना जाएगा।

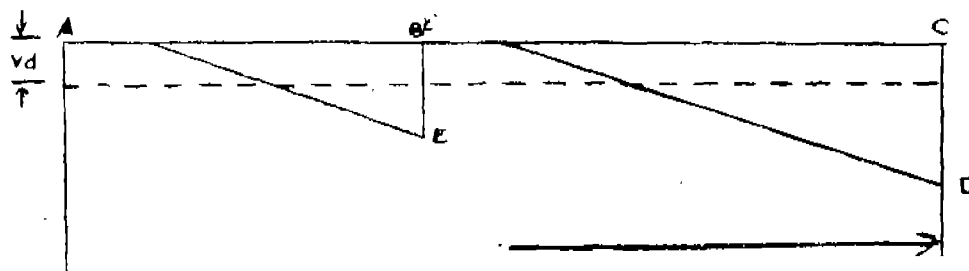
(ब) साम्यताएं:

निम्न पैरामिट्रों में यह माना गया है कि कक्ष के लिए कुल मुकाव निम्न भागों के पृथक प्रतिक्रियाओं के परिणामों को जोड़ने से प्राप्त हुआ है :

(क) आगे और पीछे के विपाट-द्वार :

(1) यदि कक्ष में दो या अधिक ऐसे प्रमुख विपाट-द्वार हैं जिनसे लदान किया जा सकता है, तो ऐसे विपाट-द्वारों के बीच के भाग (भागों) के डैक के नीचे के रिक्त स्थानों की गहराई आगे और पीछे से विपाट-द्वारों के बीच के मध्यबिन्दु तक की दूरी का उपयोग करके अन्न-धारित की जाएगी।

(2) अनाज के माने गए विचलन के पश्चात् अन्तिम रिक्त स्थान का क्रम वह होगा जो नीचे की आकृति 2 में दिखाया गया है :



आकृति - 2

आकृति 2 पर टिप्पणियाँ

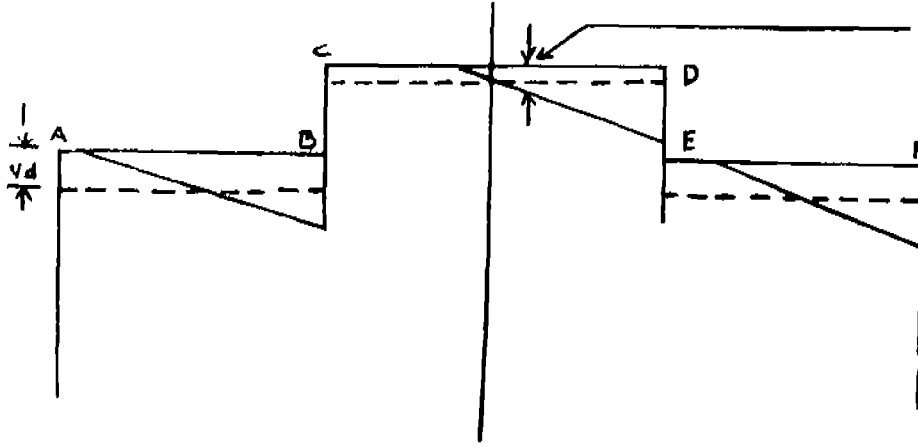
1. यदि वह अधिकतम रिक्त स्थान—क्षेत्रफल, जो गड्ढर पर 'ख' के पास हो सकता है, कक्ष के नीचे के रिक्त स्थान, अर्थात् $AB \times vd$ के प्रारम्भिक क्षेत्रफल से कम हो, तो अनिरिक्त क्षेत्रफल को उच्च बाजू के अंतिम रिक्त स्थान को स्थानान्तरित माना जाएगा।

2. यदि ग के पास अनुदैर्घ्य प्रभाग ऐसा है जो पैरा 5 (ख) (2) के अनुसार किया गया है, तो वह घ या ङ के नीचे, जो भी अधिक गहरा

हो, कम से कम 0.6 मी० बढ़ाया जाएगा।

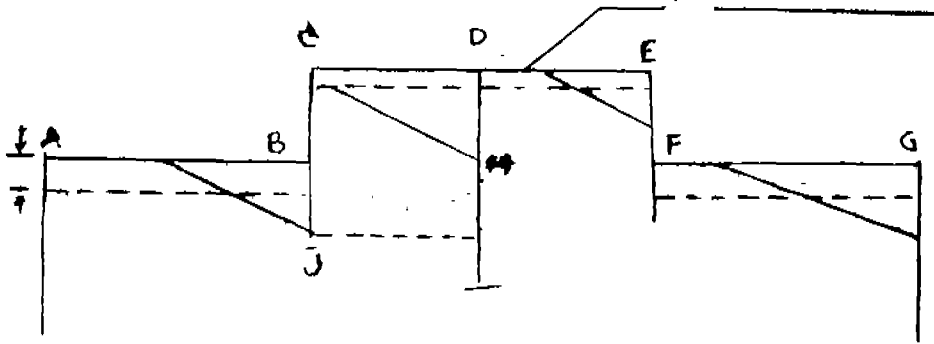
(ख) विपाट-द्वारों में और उनके बाजू में :

अनाज के माने गए विचलन के पश्चात् अंतिम रिक्त स्थान कम वह होगा जो निम्नलिखित आकृति 3 या आकृति 4 में दिखाया गया है :

**आकृति - 3)****आकृति 3 पर टिप्पणियाँ**

(1) कख, उसके अनिरिक्त कोई क्षेत्रफल, जो गड्ढर पर 'ख' के पास हो सकता है, विपाट-द्वार के अंतिम रिक्त स्थान क्षेत्रफल को स्थानान्तरित हो जाएगा।

(2) ग घ, उसके अनिरिक्त कोई क्षेत्रफल, जो गड्ढर पर ङ के पास हो सकता है, उच्च बाजू के अंतिम रिक्त स्थान क्षेत्रफल को स्थानान्तरित हो जाएगा।

**(आकृति 4)****आकृति 4 पर टिप्पणियाँ**

(1) यदि मध्य रेखा प्रभाग ऐसा है जो पैरा 5 (ख) (2) के अनुसार बनाया गया है, तो वह ज या झ, जो भी अधिक गहरा हो, के नीचे कम से कम 0.6 मी० तक बढ़ाया जाएगा।

(2) क ख से अनिरिक्त रिक्त स्थान क्षेत्रफल, विपाट द्वार के आधे पर के निम्न बाजू को, जहाँ दो विभिन्न अंतिम रिक्त स्थान क्षेत्रफल स्थानान्तरित होगा अर्थात् एक मध्यरेखा प्रभाग के पास और दूसरा हैचबाजू अड़वाल तथा उच्च बाजू के गड्ढर के पास हो जायेंगे।

(3) यदि किसी विपाट-द्वार में बंद तपनरी या खुले अनाज की गठरी बन गई है, तो अनुप्रस्थ झुकाव परिकल्पित करने के प्रयोजन के लिए यह माना जाएगा कि ऐसी युक्ति कम से कम मध्य रेखा प्रभाग के समतुल्य है

(ग) ऐसे कक्ष जिनमें सहयोगन में लदान किया गया हो

निम्नलिखित पैराग्राफों में रिक्त स्थानों के ऐसे प्रभाव कम का वर्णन होगा जो उस वंश में माने जायेंगे जब कि कक्षों का लदान सहयोगन में किया जा रहा हो।

(क) प्रभावकारी मध्यरेखा प्रभाग के बिना :

(1) उच्च डेक के नीचे—ऐसे होंगे जैसे कि इस भाग के खण्ड 1.1 (ख) में एकल डेक व्यवस्था के लिए वर्णित है।

(2) द्वितीय डेक के नीचे—निम्न बाजू से स्थानान्तरण के लिए उपलब्ध रिक्त स्थान के क्षेत्रफल में से, अर्थात् मूल रिक्त स्थान क्षेत्रफल में से हैचबाजू के गड्ढर के सामने का क्षेत्रफल कम करके निम्नलिखित रूप में स्थानान्तरित माना जाएगा : उच्च डेक विपाट-द्वार का आधा भाग और उच्च और द्वितीय डेक के नीचे प्रत्येक उच्च बाजू का चौथाई भाग।

- (3) तृतीय और निम्न डेक के नीचे—इन डेकों में से प्रत्येक डेक के निम्न बाजू से स्थानान्तरण के लिए उपलब्ध रिक्त स्थानों को उच्च बाजू डेक के नीचे के सभी रिक्त स्थानों को और उच्च डेक विपाट-द्वार के रिक्त स्थान को समान मात्रा में स्थानान्तरित माना जाएगा।
- (ख) ऐसे प्रभावकारी मध्यरेखा प्रभागों सहित जो उच्च डेक विपाट-द्वार तक विस्तारित होते हैं :
- (1) प्रभाग के पास में सभी डेक स्तरों पर निम्न बाजू से स्थानान्तरण के लिए उपलब्ध रिक्त स्थान क्षेत्रफल को उच्च डेक विपाट-द्वार के आधे भाग के निम्न बाजू के नीचे के रिक्त स्थान को स्थानान्तरित माना जाएगा।
- (2) प्रभाग के तल में ठीक नीचे के डेक स्तर पर निम्न बाजू से स्थानान्तरण के लिए उपलब्ध रिक्त स्थान के क्षेत्रफल में से निम्नलिखित स्थानान्तरित माना जाएगा, उच्च डेक विपाट द्वार के आधे भाग के निम्न बाजू के नीचे रिक्त स्थान में से आधा भाग और शेष में से उच्च बाजू के डेकों के नीचे रिक्त स्थानों को लदान कक्ष में स्थानान्तरित किया जाएगा।
- (3) उपर्युक्त उप पैरा (1) और (2) में वर्णित स्तरों से निम्नतर डेक स्तरों के पास जो उन डेकों में से प्रत्येक डेक के निम्न बाजू से स्थानान्तरण के लिए उपलब्ध रिक्त स्थान क्षेत्रफल

को प्रभाग के प्रत्येक बाजू पर उच्च डेक विपाट-द्वार के दोनों आधे भागों में से प्रत्येक में रिक्त स्थान को और उच्च बाजू के डेकों के नीचे रिक्त स्थानों को समान मात्रा में स्थानान्तरित माना जाएगा।

(ग) ऐसे प्रभावकारी मध्य रेखा प्रभाग सहित जो उच्च डेक विपाट द्वार तक विस्तारित नहीं होते हैं :

जब रिक्त स्थानों का क्षैतिज स्थानान्तरण प्रभाग की तरह उसी डेक स्तर पर नहीं माना जाएगा तब इस स्तर के निम्न बाजू से स्थानान्तरण के लिए उपलब्ध रिक्त स्थान क्षेत्रफल को उपर्युक्त पैरा (क) और (ख) के सिद्धान्तों के अनुसार प्रभाग के ऊपर उच्च बाजू के रिक्त स्थानों को अन्तरित माना जाएगा।

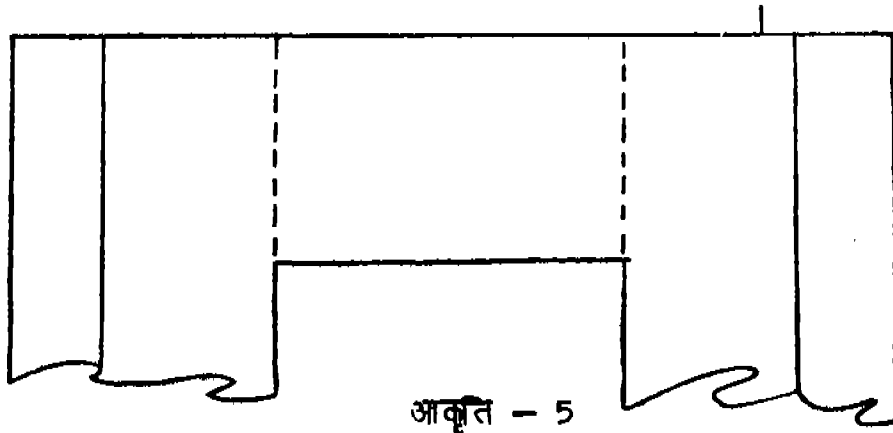
खण्ड III—फीडरों और ट्रकों का माना गया आयतनी मुकाब

(क) सुरक्षित रूप से रखे गए पक्ष फीडर (आकृति 6 देखिए)

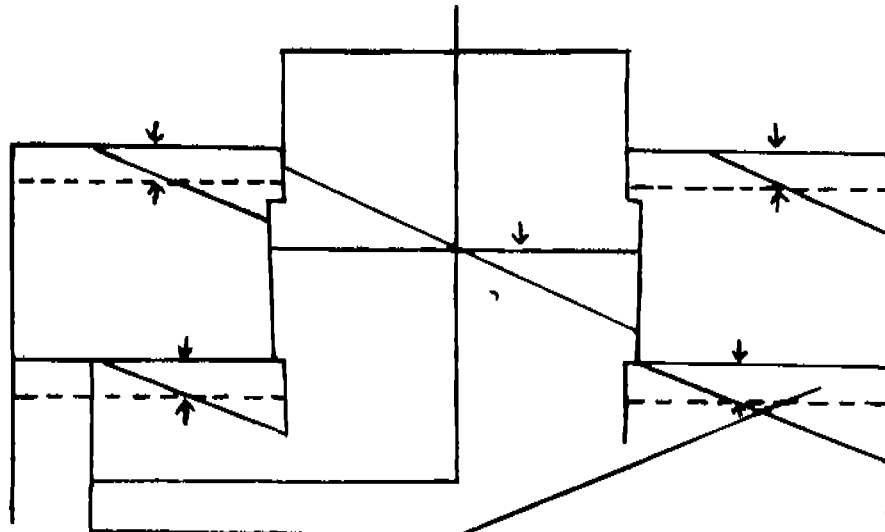
यह माना जाएगा कि पोट की गति के प्रभाव के अधीन डेक के नीचे के रिक्त स्थान दोनों अनुवैर्ध्य फीडरों से अनाज निकलने के कारण पर्याप्त रूप से भर जाएंगे परन्तु यह तब जब कि :

(क) फीडर, डेक की पूरी लंबाई तक विस्तारित हैं और उसमें छिद्रक पर्याप्त दूरी पर हैं।

(ख) प्रत्येक फीडर का आयतन, डेक के नीचे, हैच बाजू गर्डर और उसके अनुवर्ती के बाहरी रिक्त स्थान के आयतन के बराबर है।



(ब) प्रमुख विपाट-द्वारों के ऊपर स्थित ट्रक अनाज के माने गए विचलन के पश्चात् अंतिम रिक्त स्थान का क्रम बहू होगा जो आकृति 6 में दर्शित है।



आकृति 6

आकृति 6 पर निर्धारित

यदि ट्रंक के मार्ग का पक्ष-स्थानों की पैरा 3 के अनुसार उचित ढंग से समतलित नहीं किया जाता, तो यह माना जाएगा कि सतह में 2.5 अंश का विचलन होता है।

खण्ड—1 अंशतः भरे कक्षों का माना गया आयतन झुकाव

(क) साधारण :

जब प्रपूज अनाज का सूक्त सतह पैरा 6 के अनुसार सुरक्षित नहीं की गयी हो, तब ऐसा माना जाएगा कि विचलन के पश्चात् अनाज सतह क्षैतिज रूप में 2.5 अंश पर होगी।

(ख) विच्छिन्न अनुदैर्घ्य प्रभाग :

ऐसे कक्ष में, जिसमें अनुदैर्घ्य प्रभाग अनुप्रस्थ सीमाओं में विच्छिन्न है, ऐसी लम्बाई को, जिसके ऊपर अनाज सतहों के पूर्ण चौड़ाई-विचलनों को रोकने के लिए ऐसे प्रभाग प्रभावकारी दृष्टियों के रूप में है, विचाराधीन प्रभाग के भाग की वास्तविक लंबाई, प्रभाग और संलग्न प्रभाग या पोत बाजू के बीच की अनुप्रस्थ दूरियों में से बड़ी दूरी को दो बटा माप कम करके मानी जाएगी।

यह संशोधन किसी सम्मिलित लदान, जिसमें उच्च कक्ष या तो 'पूर्णतः भरा कक्ष' है या 'अंशतः भरा कक्ष' है, के निम्न कक्षों को लागू नहीं होगा।

खण्ड—5 विद्यमान पोतों के लिए वैकल्पिक लदान व्यवस्थाएं

(क) साधारण :

नीचे के या तो उप-खण्ड (ख) या उप-खण्ड (ग) के अनुसार लाने गए पोत में कम से कम पैरा 4(ख) की अपेक्षाओं के समान अक्षत स्थिरता विशेषताएं मानी जाएंगी।

इस भाग के प्रयोजन के लिए 'विद्यमान पोत' पद से ऐसा पोत अभिप्रेत है जिसकी नौतन इस अध्याय के लागू होने की तारीख के पूर्व प्रारम्भ किया गया हो।

(ब) विशेष उपर्युक्त पोतों का नौभरण :

(क) यद्यपि इस अध्याय के भाग (ख) में अन्तर्निहित किसी बात के होने हुए भी, उसमें विनिर्दिष्ट अपेक्षाओं की ओर ध्यान दिए बिना, उन पोतों में जो किसी अनुप्रस्थ अनाज विचलन के प्रभाव को सीमित करने के लिए उचित रूप में स्थित हैं और दो या अधिक उच्चधिर या अनुप्रस्थ अनाज के बहने को रोकने वाले अनुदैर्घ्य प्रभाग सहित सन्निमित्त हैं, प्रपूज अनाज निम्न शर्तों के अधीन बहान किया जा सकेगा :

(1) उसमें उतने फलके और कक्ष पूरे भरे जाएंगे और पूर्ण समतलित किए जाएंगे जितने संभव हो :

(2) नौभरण की किसी भी विनिर्दिष्ट व्यवस्था के लिए, पोत का झुकाव कोण उस दशा में समुद्र यात्रा की किसी भी प्रक्रम पर 5 अंश से अधिक का नहीं होगा जहां :

(1) फलकों या कक्षों में, जो पूर्णतः समतलित किए गए हैं, अनाज सतह मूल सतह से आयतन के 2 प्रतिशत पर स्थिर होती है और इन फलकों और कक्षों जिनका क्षैतिज झुकाव 30 अंश से कम है, की सभी सीमाओं के नीचे उस सतह के साथ 12 अंश के कोण बनाती है;

(2) 'भागतः भरे कक्षों' या फलकों में बिना ढकी हुई अनाज की सतहें उस प्रकार स्थिर होती हैं और उनमें ऐसा परिवर्तन होता है जो इस पैरा के उप-पैरा (2)(1) में दिया है या जो ऐसा बड़ा कोण बनाता है जैसा कि केन्द्रीय सरकार द्वारा आवश्यक समझा जाए और अनाज सतहें यदि इस परिशिष्ट के पैरा 5

के अनुसार अधिक नौभरण किया जाए, सतह समतलित सतहों के साथ 8 अंश का कोण बनाती है। इस पैरा के उप-पैरा (2) के प्रयोजन के लिए, तन्त्रों को, यदि लगाये गए हों, अनाज सतह का अनुप्रस्थ विचलन सीमित करने के लिए माना जाएगा;

(3) मास्टर की, केन्द्रीय सरकार द्वारा अनुमोदित अपनायी जाने वाली नौभरण व्यवस्थाओं सहित अनाज लदान आरेख और स्थिरता पुस्तक दोनों ही दी जाती है और उनमें स्थिरता स्थितियां, जिन पर इस पैरा के उप-पैरा (2) में दिए गए परिकल्पन आधारित हैं, दिखावाए जाते हैं।

(ख) केन्द्रीय सरकार, इस खण्ड के पैरा (ख) (क) के अनुसार उप-पैरा (2) और (3) की अपेक्षाओं की पूर्ति करने के लिए बनाए गए पोतों के लदान का सभी अन्य स्थितियों में स्थानान्तरण के संबंध में जो जानें वाली पूर्वविधानियां विहित करेगी।

(ग) ऐसे पोत जो प्राधिकार दस्तावेज के बिना हैं :

ऐसे पोत को जिनके फलक पर पैरा 4 और 10 के अनुसार जारी किए गए प्राधिकार दस्तावेज नहीं हैं, की उपर्युक्त उप-खण्ड (ख) की अपेक्षाओं के अक्षीत या इन शर्तों पर प्रपूज अनाज का लदान करने दिया जाएगा कि :

(क) सभी 'पूर्ण भरे कक्षों' से मध्य रेखा प्रभाग ऐसे कक्षों, की पूरी लंबाई तक विस्तारित है जो डैक की अंदर की बाजू या डैक दक्षक से नीचे की ओर डैक रेखा के नीचे कक्ष की अधिकतम चौड़ाई के कम से कम एक बड़ा आठ भाग तक या 2.4 मीटर, जो भी अधिक हो, की दूरी तक विस्तारित हों, लगाए जाएंगे, सिवाय इसके कि भाग ग के खण्ड II के अनुसार सन्निमित्त तण्टरियां विपाट-द्वार में और उसके नीचे मध्य रेखा प्रभाग के बदले स्वीकार की जा सकेगी।

(ख) 'पूर्ण भरे कक्षों' के सभी डैक बंद किए जाएंगे और उनके स्थान पर ढक्कन सुरक्षित रूप से लगाए जाएंगे।

(ग) 'अंशतः भरे कक्षों' में अनाज की सभी बिना ढकी हुई सतहें समतलित और भाग ग के खण्ड II के अनुसार सुरक्षित की जाएंगी।

(घ) पूरी समुद्री यात्रा के दौरान, टंकियों में द्रव्य की बिना ढकी हुई सतहों के प्रभावों के संशोधन के पश्चात् मध्य केन्द्रीय ऊंचाई 0.3 मीटर या निम्नलिखित सूत्र में के अनुसार जो भी अधिक हो, होगी :

एल बी बी (0.25 बी-0.645 बी डी बी)

जो एम आर =

$$\text{एम एफ} \times \triangle \times 0.0875$$

जहां :

एल = सभी पूरे भरे कक्षों का शुद्ध सम्मिलित लंबाई है,

बी = जलयान की अन्दर की चौड़ाई है,

एम एफ = नौभरण गणांक है,

बी डी = इस भाग के खण्ड 1(क) के पैरा (क) (1) के अनुसार परिकल्पित औसत रिक्त स्थान गहराई है,

\triangle पानी का वजन है।

भाग ग—अनाज फिटिंग और सुरक्षा।

खण्ड—1 अनाज फिटिंगों की मजबूती।

(क) साधारण :

(क) काष्ठ अनाज फिटिंग के लिए प्रयुक्त सभी काष्ठ अच्छे मजबूत क्वालिटी के और इस प्रकार और श्रेणी के होंगे जो इस तैयारी समाधान-प्रद रूप में सिद्ध हुआ है। काष्ठ के वास्तविक फिटिंग किए गए परिमाण हमसे इसके पश्चात् इस भाग में निर्दिष्ट परिमाणों के अनुसार होंगे। बाहरी बाजू का प्लायवुड जलसह्य मरम से जोड़ा जाएगा और इस प्रकार लगाया जाएगा कि प्रप्रभाग में अनाज की दिशा सहायक खड़े खंबे से सीधी होगी या वाइन्डर का प्रयोग किया जाएगा, परन्तु यह तब जब कि उसकी मजबूती समुचित षटकों के ठोस काष्ठ के समतुल्य हो।

(ख) कार्यकारी प्रतिबल एक ही बाजू पर लदान के परिमाण परिकल्पित करने समय इस भाग के परिच्छेद (ग), (क) और (ख) की मापनियों का उपयोग करने हुए, निम्नलिखित कार्यकारी प्रतिबलों को अपनाया जाएगा।

इस्पात के प्रभागों के लिए—2,000 कि० ग्रा० प्रति वर्ग से० मी०

काष्ठ के प्रभागों के लिए—160 कि० ग्रा० प्रति वर्ग से० मी०

(ग) अन्य सामग्री—काष्ठ या इस्पात से भिन्न सामग्रियों को ऐसे प्रभागों के लिए अनुमोदित किया जा सकेगा, परन्तु यह तब जब कि उनके यांत्रिक गुणधर्मों पर उचित ध्यान दिया गया हो।

(घ) खड़े खंबे :

- (1) खड़े खंबे के सिरे को उसके साकेट से निकलने की रोकने के लिए जब तक उपाय नहीं किए गए हों, तब तक प्रत्येक खड़े खंबे के हर सिरे के पाठ छिद्र की गहराई 75 मि० मी० से कम नहीं होगी। यदि खड़ा खंबा सिरे पर सुरक्षित नहीं है, तो सबसे ऊपर या यथासाध्य उसके पास धाम या टेक लगाया जाएगा।
- (2) खड़े खंबे की अनुप्रस्थ काट के भाग को हटाकर लकड़ी के तख्तों को लगाने के लिए किए गए इन्तजाम ऐसे होंगे कि प्रति-खंबों का स्थानीय स्तर असम्यक् रूप से अधिक नहीं हो।
- (3) एक बगन पर लादे गए प्रभाग का जो खड़े खंबा का सहारा है, अधिकतम झुकाव गुरुत्व सामान्यतः, ऐसा मानकर परिकल्पित किया जाएगा कि खड़े खंबों के सिरे मुक्त रूप में अवलंबित हैं। तथापि, यदि केन्द्रीय सरकार का समाधान हो जाए कि स्वीकृत स्थिरता की कोई भी छिप्री व्यवहार में सार्थक की जाए, तो खड़े खंबे के सिरे के पास की स्थिरता की किसी छिप्री से उत्पन्न अधिकतम झुकाव गुरुत्व को कम किया जा सकेगा।

(ङ) मित्र-संयोजन—जहां खड़े खंबे, वाइन्डर्स या अन्य कोई मजबूत षटक दो विभिन्न तैक्सनों द्वारा बनाए हैं और प्रभाग के हर बगल पर एक एक सेक्सन फिट किया गया है और पर्याप्त दूरी पर और पार बोलेटों द्वारा अंतर-संयोजित किया गया है, वहां प्रभावी खण्ड मापांक दो भिन्न खण्डों के मापांकों का जोड़ माना जाएगा।

(च) आंशिक प्रभाग—जहां प्रभाग फलका की पूरी गहराई तक विस्तारित नहीं होते वहां ऐसे प्रभाग और उनके खड़े खंबों को इस प्रकार व्यवस्थित किया जाएगा या उन पर टेक लगाए जाएंगे ताकि वे उन प्रभागों जो फलकों की पूरी गहराई तक विस्तारित होते हैं, के समतुल्य सक्षम हो जाएं।

(ब) दोनों बगलों पर लादे गए प्रभाग :

(क) रोक तख्ते—

(1) रोक तख्तों की मोटाई 50 मि० मी० से कम नहीं होगी और वे प्रभाग के अन्तः का रोकने के लिए फिट किए जाएंगे और जहां आवश्यक हो वहां खड़े खंबों द्वारा अवलंबित किए जाएंगे।

(2) विभिन्न मोटाई के रोक तख्तों के लिए अधिकतम अवलंब रहित पाठ निम्न प्रकार होंगे:

मोटाई	अधिकतम अवलंब रहित पाठ
50 मि० मी०	2.5 मीटर
60 मि० मी०	3.0 मीटर
70 मि० मी०	3.5 मीटर
80 मि० मी०	4.0 मीटर

यदि मोटाई इन मोटाइयों से अधिक हो जो दी गई है, तो मोटाई में श्रॉ-ज्यों वृद्धि होगी त्यों-त्यों अधिकतम अवलंब रहित पाठ परिवर्तित होता रहेगा।

(2) सभी रोक तख्तों के सिरे न्यूनतम 75 मि० मी० बेपरिण लंबाई के साथ सुरक्षित रूप से स्थिर किए जाएंगे।

(ख) अन्य सामग्री—काष्ठ से भिन्न अन्य सामग्रियों से बने प्रभाग उपर्युक्त पैरा (ब) (क) में अपेक्षित रोक तख्तों की शक्ति के समतुल्य मजबूत होंगे।

(ग) खड़े खंबे :

(1) दोनों बगलों पर लदे प्रभागों के लिए अवलंब रूप में प्रयुक्त इस्पात के खड़े खंबे का सेक्सन मापांक डब्ल्यू—ए × डब्ल्यू द्वारा बताया गए रूप में मापांक के होगा।

जहां :

डब्ल्यू—सेक्सन मापांक से० मी० 3 में है,

ए—खड़े खंबों के बीच का अंतरज पाठ मीटरों में

वहां सेक्सन मापांक प्रति मीटर पाठ—डब्ल्यू उससे कम नहीं होगा जो सूत्र में दिया गया है,

$$डब्ल्यू_1 = 14.8 (एव_1 1.2) में० मी०^3 = \text{प्रति मीटर}$$

जहां—

एव ऊर्ध्वाधर अवलंब रहित पाठ मीटरों में है, और वह किसी दो पार्श्वस्थ धामों के बीच की या टेक और खड़े खंबों के किसी एक सिरे के बीच की दूरी का अधिकतम मूल्य माना जाएगा। जहां यह दूरी 2.4 मीटर से कम है वहां उसका मापांक ऐसा परिकल्पित किया जाएगा मानों उसका वास्तविक मूल्य 2.4 मीटर हो।

(2) काष्ठ खड़े खंबों के मापांक इस्पात के बने तत्समान खड़े खंबों के मापांकों को 12.5 से गुणा करके अवधारित किए जाएंगे। यदि अन्य सामग्रियों का प्रयोग किया जाता हो तो उनका मापांक, कम से कम वह होगा जो इस्पात के लिए अपेक्षित है जिसे इस्पात के लिए अनुज्ञेय प्रतिबलों और प्रयुक्त सामग्री के प्रतिबलों के अनुपात के अनुसार बढ़ाया जाएगा। ऐसे मामलों में, प्रत्येक खड़े खंबों की सापेक्ष दृढ़ता की ओर भी यह मुनिष्ठित करने के लिए समुचित ध्यान दिया जाएगा कि विचलन पर्याधिक न हो;

(3) खड़े खंबों के बीच की अंतरज दूरी ऐसी होगी कि रोक तख्तों के अवलंब रहित पाठ, इस खण्ड के पैरा (ब) (क) (2) में निर्दिष्ट अधिकतम पाठ से अधिक न हों।

(ख) धाम :

(1) काष्ठ धाम, जब प्रयुक्त किए जाएं, एक ही लकड़ी से सन्निमित्त होंगे और प्रत्येक सिरे के धाम सुरक्षित रूप में लगाये जायेंगे तथा पोंत के स्थायी ढाँचे की ओर झुके होंगे सिवाय इसके कि वे पोंत की प्लेटिंग बाजू को न हों।

(2) नीचे के उप-पैरा (3) और (4) के उपबंधों के अधीन रहते हुए, काष्ठ धामों के न्यूनतम आकार निम्न प्रकार होंगे :

धाम की लंबाई मीटरों में	आयताकार खण्ड मि० मी०	नृत्ताकार खण्ड का आयाम मि० मी०
3 मी० से अनधिक	150 × 100	140
3 मी० से अधिक परंतु 5 मी० से अनधिक	150 × 150	165
5 मी० से अधिक परंतु 6 मी० से अनधिक	150 × 150	180
6 मी० से अधिक परंतु 7 मी० से अनधिक	200 × 150	190
7 मी० से अधिक परंतु 8 मी० से अनधिक	200 × 150	200
8 मी० से अधिक	200 × 150	215

7 मी० या अधिक की लंबाई के धामों को लगभग उनकी आधी लंबाई पर सुरक्षित रूप से अवलम्बित किया जाएगा।

(3) जब बड़े खंबों के बीच की क्षैतिज दूरी 4 मीटर से अधिक होती है, तब धामों की स्थिरता आधुनिकी मीथे समानुपात में बदलेंगे।

(4) जहां धामका कोण क्षैतिज से 10 अंश से अधिक हो जाता है, वहां इस पैरा के उप-पैरा (2) द्वारा अपेक्षित बड़े आकार का धाम लगाया जाएगा, परंतु किसी भी दशा में किसी धाम और क्षैतिज के बीच का कोण 45 अंश से अधिक नहीं होगा।

(क) टेक—जहां दोनों बगलों पर लदे प्रभागों के लिए टेकों का प्रयोग अवलम्ब रूप में किया जाता है, वहां वे क्षैतिजतः या यथामाध्य उनके निकट में लगाए जाएंगे या वे हर सिरे पर ठीक तरह से सुश्रित होंगे और इस्पात की तार रस्सी से बनाए जाएंगे। तार रस्सी का आकार, ऐसा मानकर अवधारित किया जाएगा कि वह प्रभाग और खड़ा खड़ा, जिसे टेक अवलम्बित करता है, 500 कि० ग्रा०/मी०² पर समान रूप से भारित किया जाता है टेक से इस प्रकार माना गया भार उनके खण्डन तार के एक-तिहाई से अधिक नहीं होगा।

(ग) एक ही बगल पर लड़े गए प्रभाग :

(क) अनुदैर्घ्य प्रभाग—प्रभाग की लंबाई का प्रति मीटर भार निम्न प्रकार होगा :

सारणी I

बी (मी०)

(एच) (मी०)	2	3	4	5	6	7	8	10
1.5	850	900	1010	1225	1500	1770	2060	2645
2.0	1390	1505	1710	1985	2295	2605	2930	3590
2.5	1985	2160	2430	2740	3090	3435	3800	4535
3.0	2615	2845	3150	3500	3885	4270	4670	5480
3.5	3245	3525	3870	4255	4680	5100	5540	6425
4.0	3890	4210	4590	5015	5475	5935	6410	7370
4.5	4535	4890	5310	5770	6270	6765	7280	8315
5.0	5185	5570	6030	6530	7065	7600	8150	9260
6.0	6475	6935	7420	8045	8655	9265	9890	11150
7.0	7765	8300	8910	9560	10245	10930	11630	13440
8.0	9055	9665	10350	11075	11835	12595	13370	14930
9.0	10345	11030	11790	12590	13425	14260	15110	16820
10.0	11635	12395	13230	14105	15015	15925	16850	18710

एच—प्रभाग के तल से मीटरों में अनाज की ऊंचाई।

बी—प्रपूज में अनाज का मीटरों में अनुप्रस्थ बिस्तार।

एच या बी के अन्य मूल्यों के लिए भार यथावश्यक रेखीय अन्तर्बेशन या बहुवर्षेशन द्वारा अवधारित किया जाएगा।

(ख) अनुप्रस्थ प्रभाग/प्रभागों का प्रति मीटर लंबाई भार कि० ग्रा० में निम्न प्रकार माना जाएगा।

सारणी II*

एल मी०

(एच) (मी०)	2	3	4	5	6	7	8	10	12	14	16
1.5	670	690	730	780	835	890	935	1000	1040	1050	1050
2.0	1040	1100	1170	1245	1325	1400	1470	1575	1640	1660	1660
2.5	1460	1565	1675	1780	1880	1980	2075	2210	2285	2305	2305
3.0	1925	2065	2205	2340	2470	2590	2695	2845	2925	2950	2950
3.5	2425	2605	2770	2930	3075	3205	3320	3480	3570	3595	3595
4.0	2950	3160	3355	3535	3690	3830	3950	4120	4210	4236	4240
4.5	3495	3725	3940	4130	4295	4440	4565	4750	4850	4880	4885
5.0	4050	4305	4535	4735	4910	5060	5190	5385	5490	5525	5530
6.0	5175	5465	5720	5945	6135	6300	6445	6655	6775	6815	6825
7.0	6300	6620	6905	7150	7365	7445	7700	7930	8055	8105	8115
8.0	7425	7780	8090	8360	8590	8685	8950	9280	9340	9395	9410
9.0	8550	8935	9275	9565	9820	9930	10205	10475	10620	10685	10705
10.0	9680	10095	10460	10770	11045	11270	11460	11745	11905	11975	11997

एच—प्रभागों के तल से मीटरों में अनाज की ऊँचाई†

एल—प्रपञ्ज अनाज का मीटरों में अनुदैर्घ्य विस्तार

एच या एल के अन्य मूल्यों के लिए रेखीय अन्तर्बेशन या बहिर्बेशन द्वारा यथावश्यक भार अवधारित किया जाएगा।

*उपर्युक्त भार ब्रिटिश एककों (टन/फीट) में संपरिवर्तित करने के लिए 1 कि० ग्रा० प्रति मीटर लंबाई को 0.0003 टन प्रति फुट लंबाई के बराबर माना जाएगा।

† जहाँ प्रभाग से फीडर या बिपाट द्वार तक का अंतर 1 मीटर या कम है, वहाँ ऊँचाई उस बिपाट द्वार या फीडर के भीतर अनाज स्तर तक की मानी जाएगी। सभी मामलों में, ऊँचाई प्रभाग के उर्ध्व चैक तक मानी जाएगी।

(ग) भारों का ऊपर से वितरण सारणी I और II में दिखलाए गए प्रभागों का प्रति यूनिट लंबाई का कुल भार, यदि आवश्यक समझा गया हो, के समान यह माना जाएगा कि ऊँचाई से उसमें समसम्प्राय वितरण है, ऐसे मामलों में, उर्ध्वधर घटक या खड़े खंभे के ऊपरी और

निम्न सिरों पर, प्रतिक्रिया भार बराबर नहीं होंगे। ऊपरी सिर पर प्रतिक्रिया भार जो उर्ध्वधर घटक या खड़े खंभे द्वारा अवलम्बित कुल भार की प्रतिशतताओं के रूप में अभिव्यक्त है, वे माने जाएंगे जो निम्न सारणी III और IV में दिखलाए गए हैं।

सारणी III

एक ही बाजू पर लंबा हुआ अनिर्बंध भार

खड़े खंभे के ऊपरी सिर के पास भार प्रतिशतता के रूप में बैरिंग प्रतिक्रिया (सारणी I) की (मी०)

(एच) (मी०)	2	3	4	5	6	7	8	10
1.5	43.3	45.1	45.9	46.2	46.2	46.2	46.2	46.2
2.0	44.5	46.7	47.6	47.8	47.8	47.8	47.8	47.8
2.5	45.4	47.6	48.6	48.8	48.8	48.8	48.8	48.8
3.0	46.0	48.3	49.2	49.4	49.4	49.4	49.4	49.4
3.5	46.5	48.8	49.7	49.8	49.8	49.8	49.8	49.8
4.0	47.0	49.1	49.9	50.1	50.1	50.1	50.1	50.1
4.5	47.4	49.4	50.1	50.2	50.2	50.2	50.2	50.2
5.0	47.7	49.4	50.1	50.2	50.2	50.2	50.2	50.2
6.0	47.9	49.5	50.1	50.2	50.2	50.2	50.2	50.2
7.0	47.9	49.5	50.1	50.2	50.2	50.2	50.2	50.2
8.0	47.9	49.5	50.1	50.2	50.2	50.2	50.2	50.2
9.0	47.9	49.5	50.1	50.2	50.2	50.2	50.2	50.2
10.0	47.9	49.5	50.1	50.2	50.2	50.2	50.2	50.2

बी—प्रपञ्ज अनाज का मीटरों में अनुप्रस्थ विस्तार

एच या बी के अन्य मूल्यों के लिए प्रतिक्रिया और यथावश्यक रेखीय अन्तर्बेशन या बहिर्बेशन अवधारित किया जाएगा।

सारणी IV

एक ही बाजू पर लादे हुए अनुप्रस्थ प्रभाग

खड़े लंबे के ऊपरी सिरे के पास भार प्रतिशतता के रूप में वैयर्थग प्रतिक्रिया (सारणी II) एल (मी०)

(एल) (मी०)	2	3	4	5	6	7	8	10	12	14	16
1.5	37.3	38.7	39.7	40.6	41.4	42.1	42.6	43.6	44.3	45.8	45.0
2.0	39.6	40.6	41.4	42.1	42.7	43.1	43.6	44.3	44.7	45.0	45.2
2.5	41.0	41.8	42.5	43.0	43.5	43.8	44.2	44.7	45.0	45.2	45.2
3.0	42.1	42.8	43.3	43.8	44.2	44.5	44.7	45.0	45.2	45.3	45.3
3.5	42.9	43.5	43.9	44.3	44.6	44.8	45.0	45.2	45.3	45.3	45.3
4.0	43.5	44.0	44.4	44.7	44.9	45.0	45.2	45.4	45.4	45.4	45.4
5.0	43.9	44.3	44.6	45.8	45.0	45.2	45.3	45.5	45.5	45.5	45.4
6.0	44.2	44.5	44.8	45.0	45.2	45.3	45.4	45.6	45.6	45.6	45.6
7.0	44.3	44.6	44.9	45.1	45.3	45.4	45.5	45.6	45.6	45.6	45.6
8.0	44.3	44.6	44.9	45.1	45.3	45.4	45.5	45.6	45.6	45.6	45.6
9.0	44.3	44.6	44.9	45.1	45.3	45.4	45.5	45.6	45.6	45.6	45.6
10.0	44.3	44.6	44.9	45.1	45.3	45.4	45.5	45.6	45.6	45.6	45.6

एल—खुले अनाज का अनुप्रस्थ विस्तार

एल या एल के अन्य मूल्यों के लिए, प्रतिक्रिया भार यथावश्यक रेखीय अन्वर्धन या बहिर्वर्धन द्वारा अवधारित किया जाएगा। ऐसे उध्वार घटकों या खड़े खंभों के अन्तिम संयोजनों की माध्यम किसी भी सिरे के पास लादे जाने वाले अधिकतम भार के आधार पर परिकल्पना किया जाएगा। ये भार निम्न प्रकार हैं :

अनुदीर्घ प्रभाग

शीर्ष पर अधिकतम भार—सारणी-I के समुचित कुल भार का 50 प्रतिशत तल पर अधिकतम भार—सारणी-I के समुचित कुल भार का 55 प्रतिशत अनुप्रस्थ प्रभाग

शीर्ष पर अधिकतम भार—सारणी-II के समुचित कुल भार का 45 प्रतिशत तल पर अधिकतम भार—सारणी-II के समुचित कुल भार का 60 प्रतिशत

शैतिज काष्ठ तख्तों की मोटाई को उपरोक्त सारणी III और IV में दिखाया गए शीर्ष लदान वितरण की ओर उचित ध्यान देकर अवधारित किया जा सकेगा और ऐसे मामलों में :

$$t = 10a \frac{P \times K}{h \times 231.3}$$

जहाँ :

टी—तख्त की मोटाई मि० मी० में,

ए—तख्त का शैतिज पाट अर्थात् खड़े खंभों के बीच की दूरी मीटरों में,

एच—प्रभाग के तल से मीटरों में अनाज की गहराई,

पी—सारणी I या II से व्युत्पन्न प्रति एकक लंबाई का कुल भार कि० ग्रा० में, के—लदान के उध्वार वितरण पर आश्रित घटक

जब लदान का ऊपर वितरण समरूप, अर्थात् आयतनी माना जाता है, तब के 1.0 के बराबर माना जाएगा।

समसंख्यीय वितरण के लिए—

के=1.0 0.06 (50-आर)

जहाँ : आर सारणी III या IV से लिया ऊपरी सिरे का वैयर्थग वाक्य है

(घ) तश्तरीयाँ :

जब तश्तरी 'पूर्ण भरे कक्ष' में ढुकाव को कम करने के लिए प्रयुक्त की जाती है, तब उसकी गहराई, तश्तरी के तल से डेक रेखा तक नापने पर, निम्न प्रकार होगी :

9.1 मीटर तक की अन्तर की चौड़ाई वाले पोतों के लिए कम से कम 1.2 मीटर।

18.3 या उससे अधिक मीटर की अन्तर की चौड़ाई वाले पोतों के लिए कम से कम 1.8 मीटर।

9.1 मीटर और 18.3 मीटर के बीच की चौड़ाई वाले पोतों के लिए तश्तरी को न्यूनतम गहराई अन्वर्धन द्वारा परिकल्पित की जायगी।

तश्तरी का शीर्ष (मुख) विपाट-द्वार के मार्ग अर्थात् डैज बाजू के गार्डर या ट्रुवाल और डैज निर की धरत में निम्न डेक संरचना द्वारा बनाया जायगा। उपरोक्त तश्तरी और विपाट-द्वार बोरी में बन्द अनाज से या अनाज कपड़े या उसके समनुष्य अन्य यथाचित स्थीरा में रखकर पूरा कर दिया जायगा और समीपस्थ संरचनाओं तथा सुवादुय विपाट द्वार धरतों से यदि वे उस स्थान में हों, उसे कसकर बांधा जाएगा।

(ङ) प्रयुज अनाज की गठारियाँ :

बोरों में बंद अनाज या अन्य उचित स्थीरा से तश्तरी को भरने के लिए प्रयुज अनाज की गठरी का प्रयोग विकल्प के रूप में किया जा सकेगा परन्तु यह तब जब कि :

(क) तश्तरी पर केंद्रीय सरकार द्वारा स्वीकार्य सामग्री में जिसकी तनाव क्षमता प्रति 6 से०मी० पट्टी पर 27.1 कि०ग्रा० में अन्यून हो, अस्तर लगाया जाता है और जिसके शीर्ष पर सुरक्षित करने के लिए उचित सावधान लगाए गए हैं।

(ख) उपर्युक्त पैरा (क) के विकल्पतः के रूप में केंद्रीय सरकार द्वारा स्वीकार्य सामग्री, जिसकी तनाव क्षमता प्रति 5 से०मी० पट्टी पर 137 कि० ग्रा० से अन्यून है, विकल्प के रूप में उस दशा में प्रयुक्त की जा सकती है जब कि तश्तरी निम्न प्रकार संरक्षित हो—

प्रयुज अनाज में संग्रहित तश्तरी के भीतर रस्सियाँ चौड़ाई में 2.4 मीटर से अधिक की दूरी पर लगाई जाएगी। ये रस्सियाँ पर्याप्त लम्बाई की होंगी ताकि वे तश्तरी के मुख के पास सुरक्षित से रूप में खींची जा सकें।

मोटाई में 25 मि० मी० से अन्यून या उसी प्रकार की मजबूती का अन्य उचित सामग्री वाला और चौड़ाई में 150 से 300 मि० मी० के बीच का निभार, इन रस्मियों के ऊपर आगे पीछे रखा जायेगा ताकि वह उस सामग्री को जो उनके ऊपर तश्तरी के आकार के रूप में लगायी जाएगी, काट या घिस न सके।

(ग) तश्तरी प्रपुंज अनाज से भर दी जाएगी और उसका मुख सुरक्षित किया जाएगा, सिवाय इसके कि जहाँ उपर्युक्त पैरा (घ) के अधीन अनुमोदित पदार्थ उपयोग में लाया जाता है, तश्तरी को रस्मियाँ लगा कर सुरक्षित करने से पूर्व सामग्री को अप-थपाकर उसके मुख पर अन्य निभार रखा जाएगा।

(घ) यदि तश्तरी के अन्तर के लिए एक से अधिक पदार्थ चाहिए प्रयुक्त किए जाते हैं, तब वे तल के पांच सिलाई से या डबल चढ़ाव जोड़ से जोड़े जाएंगे।

(ङ) तश्तरी का मुख, धरनों, जब वे अपने जगह पर हों, के तल के बराबर हो जाएगा और उन धरनों के बीच तश्तरी के मुख पर उचित सामान्य स्थोरा या प्रपुंज अनाज रखा जा सकेगा।

(च) पूर्ण भरे हुए कक्षों के हेच डबकन का सुरक्षित किया जाना:

यदि 'पूर्ण भरे हुए कक्ष' के ऊपर प्रपुंज अनाज या अन्य स्थोरा न हो तो हेच डबकनों को, ऐसे डबकनों को सुरक्षित करने के लिए उपबध्ति वजन और स्थायी व्यवस्थाओं को ध्यान में रखकर अनुमोदित पद्धति से सुरक्षित किए जाएंगे।

पैरा 10 के अधीन जारी किए गए प्राधिकार दस्तावेजों में केंद्रीय सरकार द्वारा आवश्यक मानी गयी सुरक्षा पद्धति को प्राप्ति निर्देश में है।

भाग II अंशतः भरे कक्ष का सुरक्षित किया जाना:

क. पट्टियों से या रस्मियों से बांधना:

(क) अंशतः भरे कक्षों में मुकाब को हटाने के लिए पट्टियों या रस्मियों का प्रयोग किया जाता है, तब सुरक्षा निम्न प्रकार, पूरी की जाएगी:—

(1) अनाज समतलित किया जाएगा और उस विस्तार तक किचित् उमरित रूप में चौरस किया जाएगा और मोटे टाट पृथक्कारी कपड़ों, टारपोलियों या उसके समतुल्य से प्राच्छादित किया जाएगा।

(2) पृथक्कारी कपड़े और/या टारपोलिन कम से कम 1.8 मी० एक दूसरे पर चढ़े हुए हों।

(3) 25 मि० मी०, 150 मि० मी० से 300 मि० मी० तक के दो मजबूत स्थूल काष्ठ फर्श ऊपरी फर्श से अनुदैर्घ्य रूप में और तल के फर्श में चौड़ाई में कील से जोड़े जाएंगे। विकल्पतः एक मजबूत 50 मि० मी० काष्ठ फर्श का अनुदैर्घ्य रूप में प्रयोग किया जा सकेगा और 50 मि० मी० के तल की लकड़ी जो 150 मि० मी० से अन्यून चौड़ी हो, के ऊपर कील लगाई जा सकेगी। तल की लकड़ियाँ कक्ष की पूरी चौड़ाई तक विस्तारित होंगी और 2.4 मीटर से अधिक की दूरी पर लगाई जाएंगी। ऐसी व्यवस्थाओं को जिनमें अन्य सामग्रियाँ प्रयुक्त की जाती हैं और जिन्हें पूर्ववर्ती के समतुल्य माना गया हो, स्वीकार किया जा सकेगा।

(4) हस्तात तार रस्मे (19 मि० मी० व्यास या समतुल्य),— दुहरी हस्तात पट्टियाँ (50 मि० मी०, 1.3 मि० मी० और मंजूर सामर्थ्य कम से कम 5000 के जो हों) या समतुल्य सामर्थ्य की जंजीर, जिनसे प्रत्येक 32 मि० मी० के मुड़े हुए बन्धुओं से मजबूत की गयी हों, रस्मियों के लिए प्रयुक्त की जा सकेगी, जब हस्तात पट्टियों से बांधा जाता है, तब 32 मि० मी० के मुड़े

हुए बन्धुओं के स्थान से बांधा जाता है, तब 32 मि० मी० के मुड़े हुए बन्धुओं के स्थान से पाशन बाजू के संयोजन में प्रयुक्त बिब कसने वाला रखा जा सकेगा, परन्तु यह तब जब कि यथावश्यक लगाने के लिए यथाचित रिच प्राप्त हों। जब हस्तात पट्टियाँ प्रयुक्त की जाती हैं, तब विरो को सुरक्षित करने के लिए तीन से अन्यून क्रिम्प मुहर प्रयुक्त की जाएंगी। जब तार प्रयुक्त की जाती है, तब चार से अन्यून क्रिम्प, रस्मियों में खुले स्थान बनाने के लिए प्रयुक्त किए जाएंगे।

(5) लदान की समाप्ति के पूर्व, रस्मी क्रम से अर्पित अन्तिम अनाज सतह के नीचे लगभग 450 मि० मी० के स्थान पर या तो 25 मि० मी० की जंजीर या उसके तुल्य मजबूत धरन क्रिम्प द्वारा, निश्चित रूप में जोड़ी जाएंगी।

(6) रस्मिया 2.4 मीटर के अधिक दूरी पर लगायी जाएंगी और प्रत्येक अंग्रे और पीछे की छत पर धारक धारक कील से अवलम्बित की जाएंगी। यह धारक 25 मि० मी० 150 मि० मी० से अन्यून काष्ठ का या उसके समतुल्य होगा और कक्ष की पूरी चौड़ाई तक विस्तारित होगा।

(7) समुद्र-यात्रा के दौरान पट्टियाँ नियमित रूप से जांची जाएंगी और जहाँ आवश्यक हो ठीक की जाएंगी।

ख. उपर रखने की व्यवस्थाएं:

जहाँ बोरो में बन्द अनाज या अन्य यथोचित स्थोरा अंशतः भरे कक्षों को सुरक्षित करने के उद्देश्य से रखा जाता है वहाँ अनाज की खुली ऊपरी सतह की पृथक्कारी कपड़े या उसके समतुल्य से और/या यथोचित प्लेटफार्म द्वारा ढक दिया जाएगा। ऐसे प्लेटफार्म में 1.2 मीटर से अधिक की दूरी पर लगाए काष्ठ धारक होंगे और उन पर 100 मि० मी० से अधिक की दूरी पर से 2.5 मि० मी० के काष्ठ तखत रखे जाएंगे प्लेटफार्म भिन्न सामग्रियों से भी सन्निहित किए जा सकेंगे परन्तु यह तब जब कि वे बिभाग द्वारा समतुल्य माने गए हों।

ग. बोरो में बन्द अनाज:

बोरो में बन्द अनाज अच्छी तरह से भरे हुए और सुरक्षित रूप से बन्द किए गए मजबूत बोरो में बन्द किया जाएगा।

[स० 5-एम एम आर (18)/74-एम ए]

ओ की० भाबे, महानिदेशक

MINISTRY OF SHIPPING AND TRANSPORT (Transport Wing)

New Delhi, the 9th May, 1977

ORDER

S.O. 2251.—Whereas the Central Government has prescribed, under the Merchant Shipping (Carriage of Grain) Rules, 1974, certain fittings and provisions as "necessary and reasonable precautions", for the purposes of section 332 of the Merchant Shipping Act, 1958 (44 of 1958), to be followed by:—

(a) all Indian ships, and

(b) ships other than Indian ships—

(i) when they are loaded with grain at any port or place in India or within the territorial waters of India, or

(ii) when they enter any port or place in India or come within the territorial waters of India laden with grain;

And whereas the Central Government is otherwise satisfied that the fittings or provisions, recommended by the Inter-Governmental Maritime Consultative Organisation and set out in Appendices I and II to this Order, are as effective as those required by the Merchant Shipping (Carriage of Grain) Rules, 1974 ;

And whereas the Central Government considers it expedient to permit the alternative fittings or provisions set out in the said Appendices I and II to this Order, be fitted or made in any of the ships aforesaid ;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by section 454A of the Merchant Shipping Act, 1958 (44 of 1958) ; the Central Government hereby makes the following Order, namely :—

1. Short title and commencement :—(1) This Order may be called the Merchant Shipping (Equivalent Arrangements for carriage of Grain) Order, 1977.

(2) It shall come into force on the date of its publication in the Official Gazette.

2. Equivalent Arrangements for carriage of grain :—A ship to which the Merchant Shipping (Carriage of Grain) Rules 1974, apply, may, instead of complying with the requirements of the said rules, comply with the requirements specified in either Appendix I or Appendix II to this Order ;

Provided that no such ship shall be permitted to comply partly with the requirements specified in the said rules and partly with the requirements specified in any of the said two Appendices ;

(ii) Partly with the requirements specified in the said Appendix I and partly with requirements specified in the said Appendix II.

APPENDIX I

Equivalent arrangements to those prescribed in the Merchant Shipping (Carriage of Grain) Rules, 1974.
Definitions

1. In this Appendix, unless the context otherwise requires, the following expressions have the following meanings respectively:

"Compartment"	means a hold or a cargo space bounded by bulkheads at each end and having decks above and below.
"Filled compartment"	means any compartment in which after loading and trimming the level of the bulk grain is as high as possible.
"Partly filled compartment"	means any compartment loaded with bulk grain not being a filled compartment.
"Grain"	includes wheat, maize, oats, rye, barley, rice, pulses and seeds.
"Metacentric height"	means the distance between the transverse metacentre (M) and the centre of gravity (G) corrected for the free effects of liquids in tanks.
"Schedule"	means a schedule in this Appendix.
"Shifting boards"	means shifting boards constructed in accordance with the requirements of (B) Part I, Schedule II of this Appendix.

Trimming:

2. (a) All necessary and reasonable trimming should be performed to minimize the effect of grain shifting. In any compartment which is filled with bulk grain, the grain should be trimmed so as to fill all the spaces under the decks and hatch covers to the maximum extent possible.

(b) After loading all free grain surfaces in partly filled compartments should be trimmed level and the ship shall be upright when proceeding to sea.

Intact stability requirements

3. (a) The intact stability characteristics of any ship carrying bulk grain should be shown to meet, throughout the voyage, at least the following criteria after taking into account in the manner described in Schedule I, the heeling moments due to grain shift:

- (i) The angle of heel due to the shift of grain should be not greater than 12 degrees;
- (ii) in the statical stability diagram, the net or residual area between the heeling arm curve and the righting arm curve up to the angle of heel of maximum difference between the ordinates of the two curves, or 40 degrees or the angle of flooding,* whichever is the least, should in all conditions of loading, be not less than 0.075 meterradians; and
- (iii) the initial metacentric height, after correction for the free surface effects of liquids in tanks, should be not less than 0.30 metres.

Longitudinal divisions and saucers.

4. (a) In both "filled" and "partly filled" compartments, longitudinal divisions may be provided as a device either to refuse the adverse heeling effect of grain shift or to limit the depth of cargo used for securing the grain surface. Such divisions should be fitted grain-tight and constructed in accordance with the provisions of Part I of Schedule II.

(b) In a "filled" compartment, a division, if fitted, should extend downwards from the underside of the deck or hatch covers to a distance below the deck line of at least one-eighth of the maximum breadth of the compartment. Except in the case of oil seeds, a longitudinal division beneath of hatchway may be replaced by a saucer of bagged grain or other suitable cargo. Such a saucer should be formed in the manner described in Part I of Schedule II.

(c) In a "partly filled" compartment, a division, if fitted should extend from one-eighth of the maximum breadth of the compartment above the level of the grain surface and to the same distance below the grain surface. When used to limit the depth of the cargo used for securing the height of the centreline division should be not less than 0.61 metres above the grain surface.

(d) Furthermore, the adverse heeling effects of grain shift may be reduced by tightly stowing the wings and ends of a compartment with bagged grain or other suitable cargo adequately restrained from shifting.

*Is an angle of heel at which openings in the hull, superstructures of deckhouses, which cannot be closed weathertight, immerse. In applying this definition, small openings through which progressive flooding cannot take place need not be considered as open.

Securing

5. (a) Unless account is taken of the adverse heeling effect due to grain shift in accordance with these provisions, the surface of the bulk grain in any "partly filled" compartment should be trimmed level and topped off with bagged grain tightly stowed and extending to a height of not less than one-sixteenth of the breadth of the free grain surface or 1.22 metres whichever is the greater. Instead of bagged grain, other suitable cargo exerting at least the same pressure may be used.

(b) The bagged grain or other suitable cargo should be supported in the manner described in Part II of Schedule II. Alternatively, the bulk grain surface may be secured by strapping or lashing as described in Part II of Schedule II.

Feeders and/or trunks.

6. If feeders and/or trunks are fitted, proper account should be taken of the effects thereof when calculating the heeling moments as described in Part III of Schedule I. The strength of the divisions forming the boundaries of such feeders shall conform with the provisions of Part I of Schedule II.

Combination arrangements.

7. Lower holds and 'tween deck spaces in way thereof may be loaded as one compartment provided that, in calculating heeling moments, proper account is taken of the flow of g. in into the lower spaces.

SCHEDULE I**Calculation of Assumed Heeling Moments**

- Part I Description of the assumed pattern of grain surface behaviour and method of calculating intact stability.
- Part II Determination of the assumed volumetric heeling movement of a filled compartment.
- Part III Feeders and trunks.
- Part IV Partly filled compartments.
- Part I Description of the Assumed Pattern of Grain Surface Behaviour and Method of Calculating Intact Stability.

(A) General.

(a) For the purpose of calculating the stability of ships carrying grain in bulk it should be assumed that:

- In filled compartments of ships with hatch side girder depths between 500 and 600 mm, the average depth of the underdeck void (Vd) is 460 mm.
- When the depth of the hatch side girder is not between 500 and 600 mm the average void depth shall be calculated according to the formula:

$$Vd = Vd1 + 0.75 (d - 600) \text{ mm.}$$

where Vd = Average void depth in mm;

$$Vd1 = \text{Standard void depth from the Table I below;}$$

$$d = \text{Actual girder depth in mm.}$$

In no case shall Vd be assumed to be less than 100 mm.

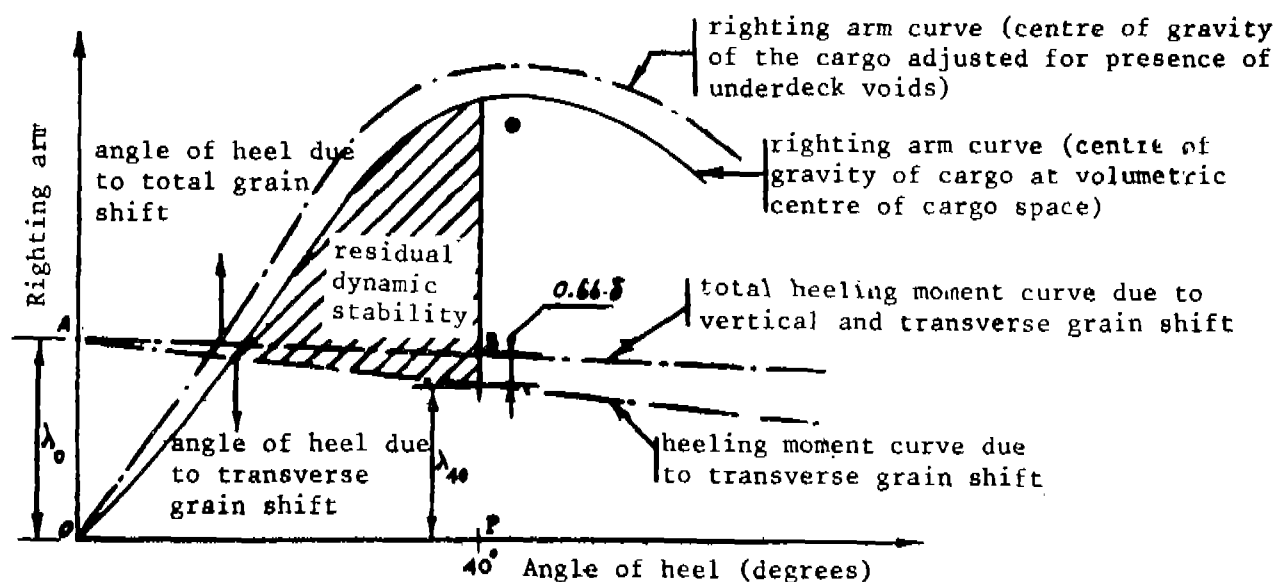
TABLE I

Distance from hatch end or hatch side to boundary of compartment metres	Standard void depth Vd1 mm
0.5	570
1.0	530
1.5	500
2.0	480
2.5	450
3.0	440
3.5	430
4.0	430
4.5	430
5.0	430
5.5	450
6.0	470
6.5	490
7.0	520
7.5	550
8.0	590

(iii) No voids will exist surfaces whose inclination to the horizontal is 30 degrees or greater.

(iv) Within filled hatches there is an average void depth of 75 mm measured from the lower part of the hatch cover to the grain surface. If the hatchway is not completely filled this void in combination with any other void arising from incomplete filling of the hatch should be used in calculating the assumed heeling moments.

(b) The ship's stability calculations should be based upon the assumption that the centre of gravity of the cargo is at the volumetric centre of the whole cargo space and in such cases it will be necessary only to calculate the adverse heeling moment due to transverse shifts of grain. However, if it is considered necessary to take into account the reduction in the ship's vertical center of gravity due to the existence of the underdeck voids when calculating the ship's righting arm curve, the net effects of the vertical component shifts of grains should also be included in the total assumed heeling moment curve (see Fig. 1).

**FIG.1**

Where:

= assumed volumetric heeling moment due to transverse shift

stowage factor \times displacement

= $0.80 \times$

= assumed volumetric heeling moment due to vertical shift

stowage factor \times displacement

Stowage factor = Volume per unit weight of grain cargo.

Displacement = Weight of ship, fuel, fresh water, stores, etc. and cargo.

The total assumed heeling moment curve can be approximately represented by the straight line through A and B whose ordinates are:—

OA = and PB = (+0.66) respectively.

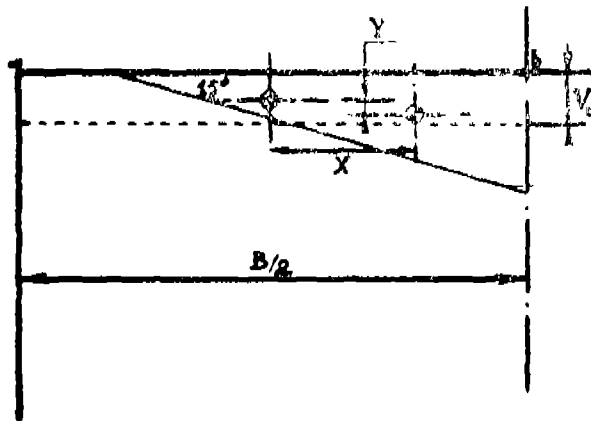


FIG-2

Assumed horizontal volumetric heeling moment = $A \times X \times 2$ for both sides.

Assumed vertical volumetric heeling moment = $A \times Y \times 2$ for both sides.

Where X = Transverse shift of centre of void due to change of space, and

Y = Vertical shift of centre of void due to change of shape.

(b) Without centreline division (see Fig.3).

(i) If the effect of the underdeck longitudinal girders is to be taken into account, the moments should be calculated according to the pattern of grain behaviour shown in Fig. 3.

Formulae: (1) = $(AB \times Vd) - Vr$ where $Vr = \frac{d^3}{2 \tan 15^\circ}$

(2) = $(BC \times Vd) - Vr$

(3) = $CD \times Vd$

Assumed horizontal volumetric heeling moment =

$((1) \times X_1) + ((2) \times X_2) + ((3) \times X_2)$

47 G. I./77-6

Part II = Determination of the Assumed Volumetric Heeling Moment of a Filled Compartment.

(A) General

(a) The methods described hereunder should be used to determine the assumed volumetric heeling moment per unit length.

(b) In the figures the moments are calculated in accordance with the change in shape and/or position of voids.

(c) The angle of surface shift of the bulk grain (or wedge angle) is assumed to be 15 degrees.

Note: When the final centroid of the void is higher or lower than its initial centroid, the vertical volumetric heeling moment has to be respectively subtracted or added.

(B) Forwarded of and abaft the hatchway.

(a) With centreline division (See Fig. 2).

The moments arise directly from a change of shape of the cross-section through the void, which is originally a rectangle of area A ($ab \times Vd$) and which becomes a triangle.

Assumed vertical volumetric heeling moment =

$((1) \times Y_1) + ((2) \times Y_2) + ((3) \times Y_3)$

(ii) If the effect of longitudinal girders is not to be taken into account the moment should be calculated in the same manner as described in (B) (a) above where B/2 becomes B in the calculations.

(C) Abreast the hatchway.

(a) When there is a centreline division in the hatchway (see Fig. 4).

Formulae: (1) = $(AB \times Vd) - Vr$, where $Vr = \frac{d^3}{2 \tan 15^\circ}$

(2) = $CD \times Vd$

(3) = $(4) = \frac{1}{2} \times BC \times Vd$

(1) transfers to the centroid of the final void on the low side of the hatchway.

(3) transfers to the centroid of the final void on the low side of the hatchway.

(2) (4) transfer from rectangular to triangular shapes.

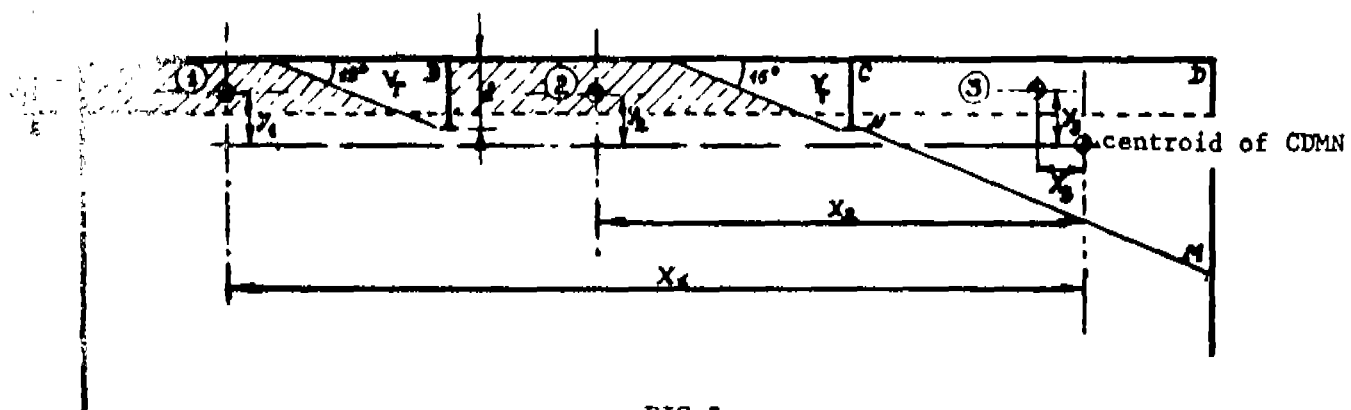


FIG. 3

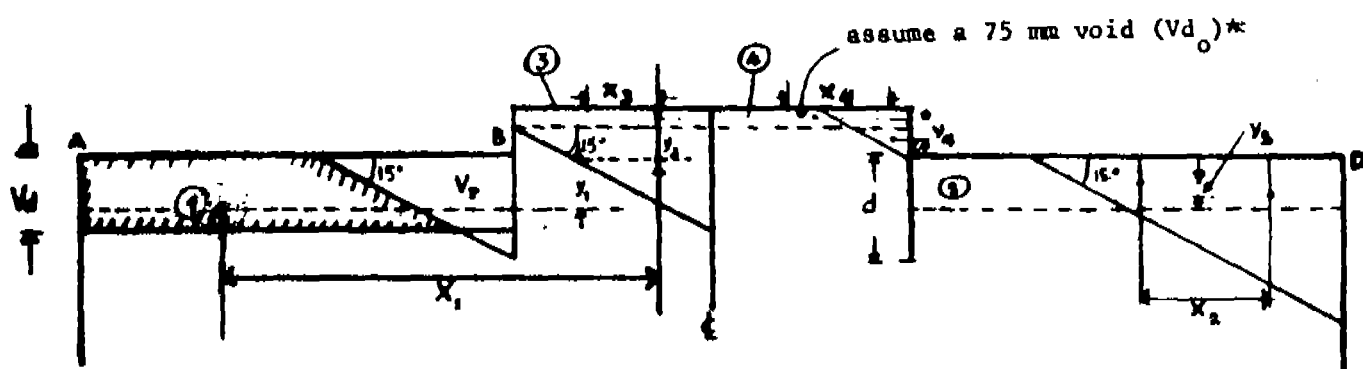


FIG. 4

Assumed horizontal volumetric heeling moment

$$((1) \times X_1) + ((2) \times X_2) + ((3) \times X_3) + ((4) \times X_4)$$

Assumed vertical volumetric heeling moment

$$((1) \times Y_1) + ((2) \times Y_2) + ((3) \times Y_3) + ((4) \times Y_4)$$

(b) When there is no centreline division in the hatchway. The calculation should be similar to that in (C) (a) above except that the transverse lever X_1 will increase due to the formation of the void against the girder at C instead of against the centreline division and (3) and (4) will combine to form a single initial void.

(D) Multiple decks in association with combination arrangements of loading.

(a) No deck perforations

(i) Except where included in a pattern of deck perforations accepted by the Departments, it is considered that trimming hatches of normal dimensions, even though open, have no significant effect in reducing the volume of the underdeck voids.

(ii) Two deck arrangement without centreline divisions (see Fig. 5).

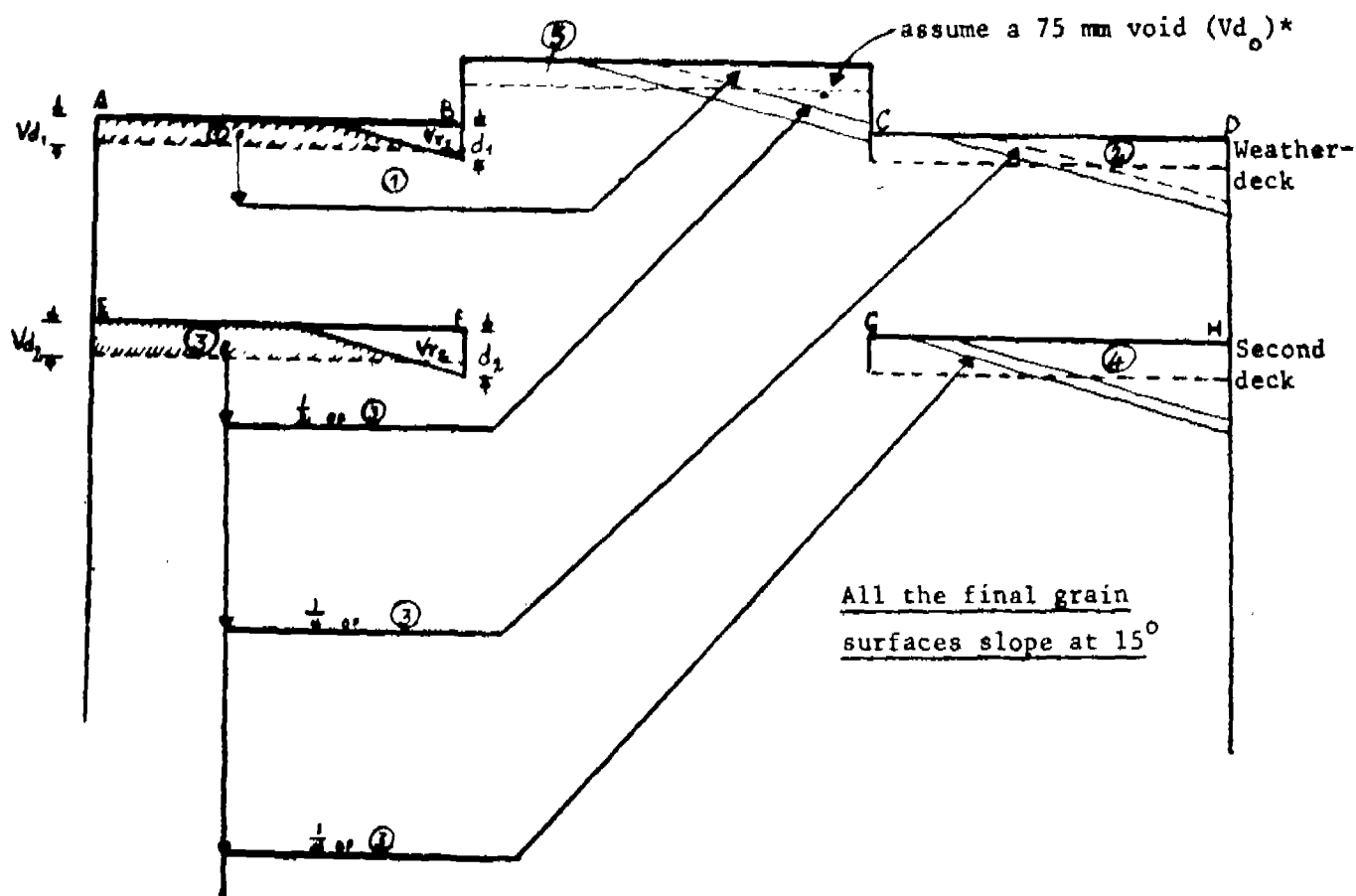


FIG. 5

*See Part I(A)(a)(iv).

The transfer of voids in this arrangement shall be assumed to have taken place as follows:—

- (1) transfers to the centroid of the final void under the weather deck hatch cover;
- (2) transfers to the centroid of the final void under the weather deck on the high side;
 $\frac{1}{2}$ of (3) transfers to the final void under the weather deck hatch cover;
 $\frac{1}{2}$ of (3) transfers to the final void under the weather deck on the high side;
 $\frac{1}{2}$ of (3) transfers to the final void under the second deck on the high side;
- (4) transfers to the centroid of the final void under the second deck on the high side;
- (5) transfers to the centroid of the final void under the weather deck hatch cover;

Where:

$$\begin{aligned} (1) &= (AB \times Vd_1) - Vr_1, \text{ where } Vr_1 = \frac{d_1^2}{2 \tan 15^\circ} \\ (2) &= VD \times Vd_1 \\ (3) &= (EF \times Vd_2) - Vr_2 - Vr_2, \text{ where } Vr_2 = \frac{d_2^2}{2 \tan 15^\circ} \\ (4) &= GH \times Vd_1 \\ (5) &= BC \times Vd_0 \end{aligned}$$

The volume of the final void under the weather deck hatch cover will be (5) plus (1) plus $\frac{1}{2}$ of (3) and its centroid positioned accordingly.

The volume of the final void under the weather deck on the high side will be (2) plus $\frac{1}{2}$ of (3) and its centroid positioned accordingly.

The volume of the final void under the second deck on the high side will be (4) plus $\frac{1}{4}$ of (3) and its centroid positioned accordingly.

(iii) Two deck arrangement with 'tween deck centreline division (see Fig. 6).

The transfer of voids in this arrangement should be assumed to have taken place as shown in Fig. 6 which follows the principles outlined in (D) (a) (ii) above except that the presence of the centreline division will reduce the transverse shift of (1) and part of (3).

(iv) Three deck arrangement (see Fig. 7).

The transfer of voids in this arrangement should be assumed to have taken place as follows:—

- (1) transfers to the centroid of the final void under the weather deck hatch cover;
- (2) transfers to the centroid of the final void under the weather deck on the high side;
 $\frac{1}{2}$ of (3) transfers to the final void under the weather deck hatch cover;
 $\frac{1}{4}$ of (3) transfers to the final void under the weather deck on the high side;
 $\frac{1}{4}$ of (3) transfers to the final void under the second deck on the high side;
- (4) transfers to the centroid of the final void under the second deck on the high side;
 $\frac{1}{4}$ of (5) transfers to the final void under the weather deck hatch cover;
 $\frac{1}{4}$ of (5) transfers to the final void under the weather deck on the high side;
 $\frac{1}{4}$ of (5) transfers to the final void under the second deck on the high side;
 $\frac{1}{4}$ of (5) transfers to the final void under the third deck on the high side;
- (6) transfers to the centroid of the final void under the third deck on the high side;
- (7) transfers to the centroid of the final void under the weather deck hatch cover.

Where :

$$\begin{aligned} (1) &= (AB \times VD_1) - Vr_1, \text{ where } Vr_1 = \frac{d_1^2}{2 \tan 15^\circ} \\ (2) &= CD \times Vd_1 \\ (3) &= (EF \times Vd_2) - Vr_2 \text{ where } Vr_2 = \frac{d_2^2}{2 \tan 15^\circ} \\ (4) &= CH \times Vd_1 \\ (5) &= (JK \times Vd_3) - Vr_3, \text{ Where } Vr_3 = \frac{d_3^2}{2 \tan 15^\circ} \\ (6) &= LM \times Vd_3 \\ (7) &= BC \times Vd_0 \end{aligned}$$

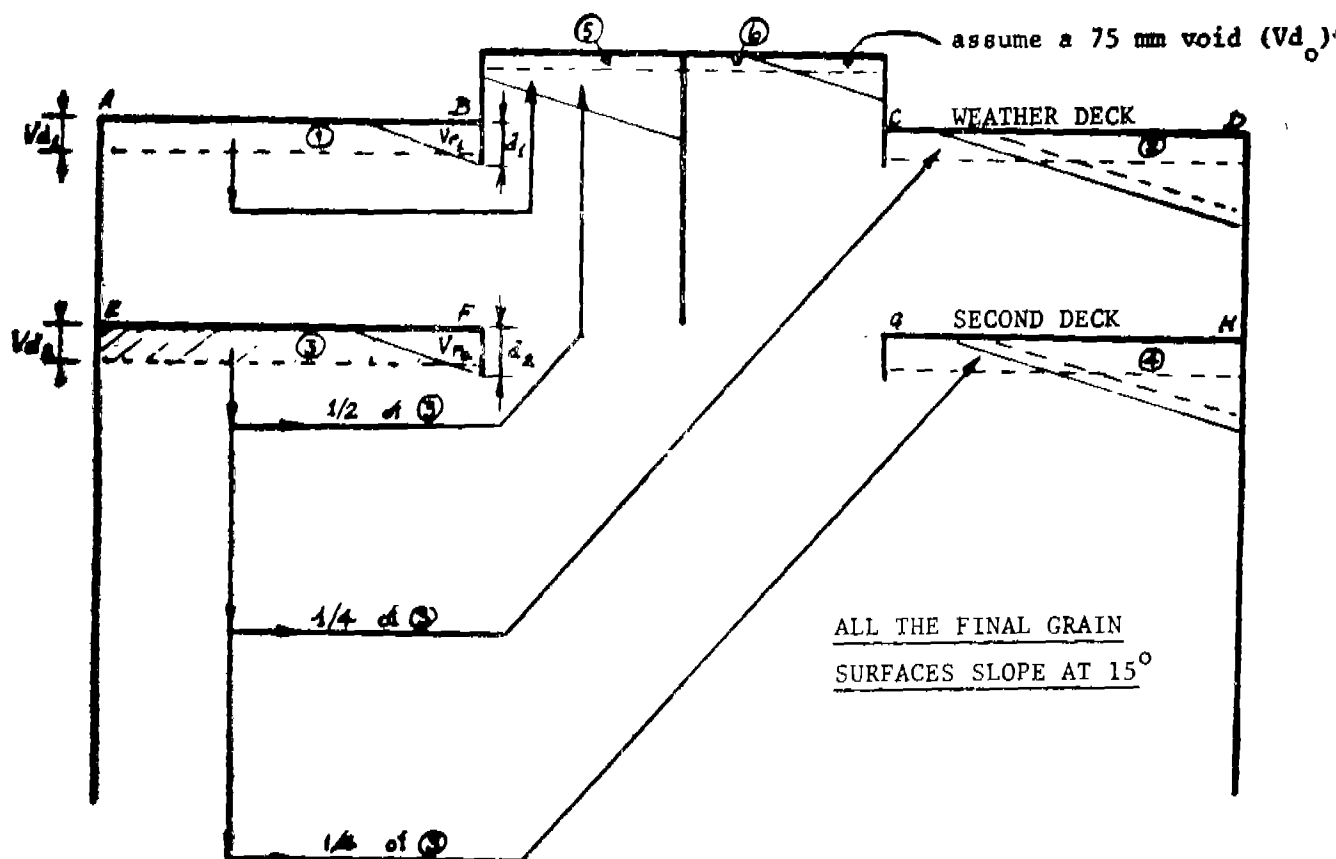
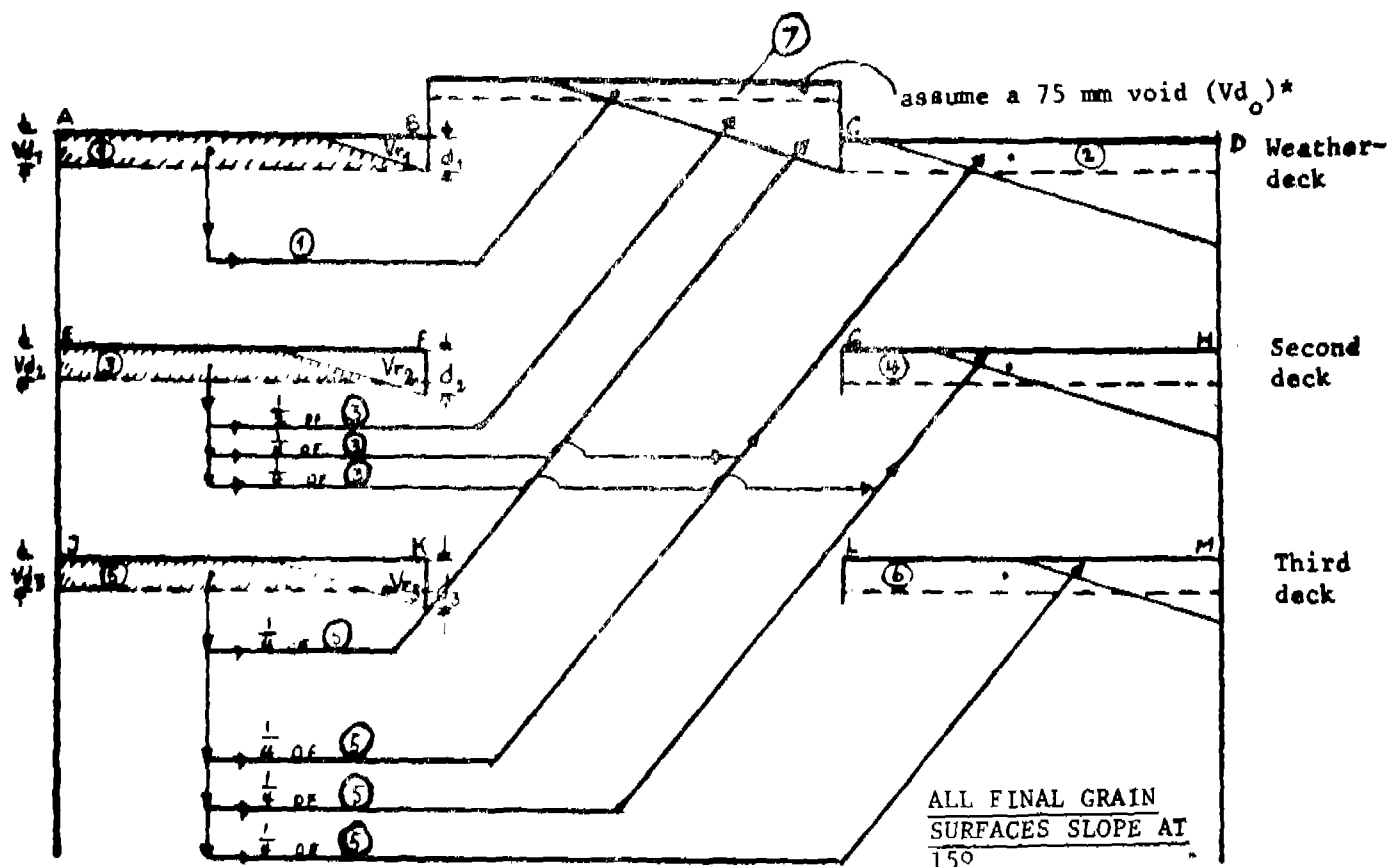


FIG.6



The volume of the final void under the weather deck hatch cover will be (7) + (1) + 1/2 of (3) + 1/4 of (5) and its centroid positioned accordingly.

The volume of the final void under the weather deck on the high side will be (2) plus 1/4 of [(3) + (5)] and its centroid positioned accordingly.

The volume of the final void under the second deck on the high side will be (4) plus 1/4 of [(3) + (5)] and its centroid positioned accordingly.

The volume of the final void under the third deck on the high side will be (6) + 1/4 of (5) and its centroid positioned accordingly.

(v) Further multiple deck arrangements.

For such arrangements it should be assumed that the voids on the low side under each additional deck are equally distributed to all the voids on the high side. For example, if a fourth deck was added to fig. 7 the void on the low side un-

der the deck would be assumed to be equally transferred to each of the five voids on the high side (viz hatchway, weather second deck, third deck and fourth deck respectively).

(b) With deck perforations.—

(i) Where decks are perforated the voids under such decks will be reduced during loading. The percentage of of the original voids remaining should be obtained from Fig. 12

(ii) Under the influence of ship motion it may be assumed that these voids are eventually completely filled transversely between perforations. The Department should be satisfied that these perforations are so distributed throughout the longitudinal extent of the deck as to achieve effective void filling. The heeling moments should be calculated in the manner described in (a) above with due regard to the increase in volume of the higher voids and any voids remaining under the perforated deck.

Part III—Feeders and Trunks

(A) Suitably placed wing feeders (see Fig. 8)

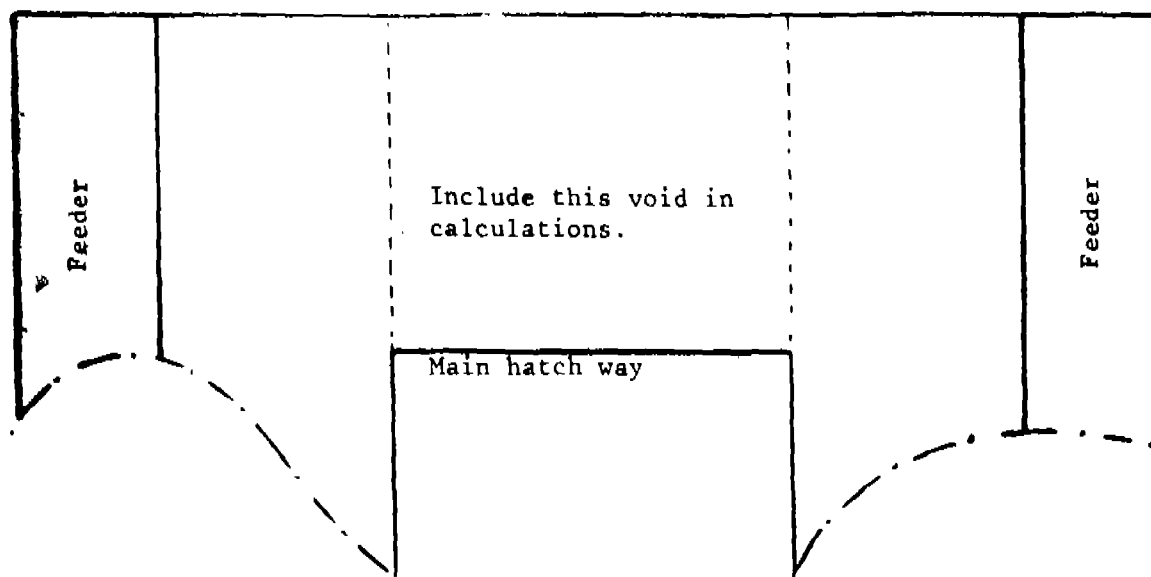


FIG.8

It may be assumed that under the influence of ship motion under deck voids will be substantially filled by the flow of grain from a pair of longitudinal feeders provided that:—

- (1) the feeders extend for the full length of the deck, and that the perforations therein are adequately spaced ;
- (2) the volume of each feeder is equal to the volume of the under deck void out-board of the hatch side girder and its continuation.

(B) Trunks situated over main hatchways (see Fig. 9)

The transfer of voids in this arrangement should be assumed to have taken place as follows :—

- (1) Transfers to the centroid of the final void against the trunk side ;
- (2) Transfers to the centroid of the final void under the weather deck on the high side ;
 $\frac{2}{3}$ of (3) transfers to the bottom of the trunk on the centreline ;
 $\frac{1}{3}$ of (3) transfers to the void under the second deck on the high side ;
- (4) Transfers to the centroid of the final void under the second deck on the high side.

Where :

- (1) $= AB \times Vd_1$
- (2) $= CD \times Vd_1$

$$(3) = (EF \times Vd_2) - Vr_2, \text{ where } Vr_2 = \frac{d_2^2}{2 \tan 15^\circ}$$

$$(4) = GH \times Vd_1$$

The volume of the final void under the second deck on the high side will be (4) plus $\frac{1}{3}$ of (3) and its centroid positioned accordingly.

Within the trunk itself the heeling moment should be assumed to be that arising from a full wedge transfer of 25 degrees.

Where a trunk is situated over lower between decks the assumed pattern of void transfers should be in accordance with the principles of Part II (D) (a) (ii), (iii) or (iv) of this Schedule.

Part IV—Partly Filled Compartments

(A) General.

When the free surface of the bulk grain has not been secured in accordance with Section 5 of the Appendix it should be assumed that a transfer takes place over all surfaces with an angle of surface shift (wedge angle) of 25 degrees.

(B) Discontinuous longitudinal divisions.

In a compartment in which the longitudinal divisions are not continuous between the transverse boundaries, the length over which any such divisions are effective as devices to prevent full width shifts of grain surfaces, should be taken to be the actual length of the portion of the division under

consideration less two-sevenths of the greater of the two transverse distances between the division and the adjacent division or ship's side (See Fig. 10 and 11)

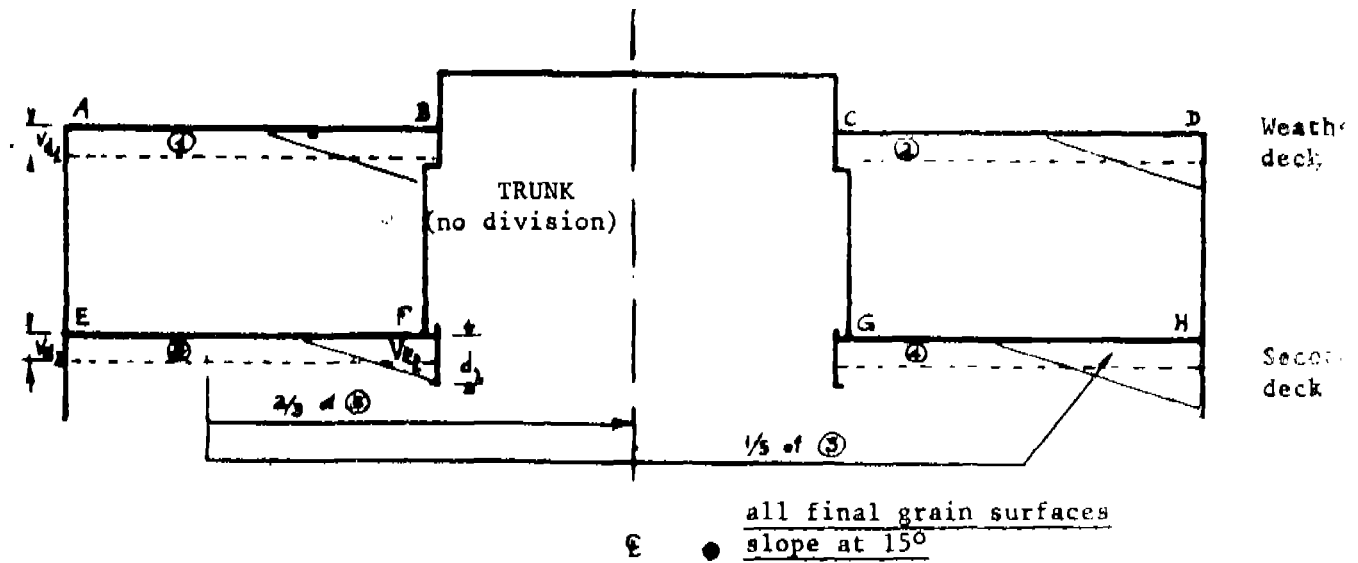


FIG. 9

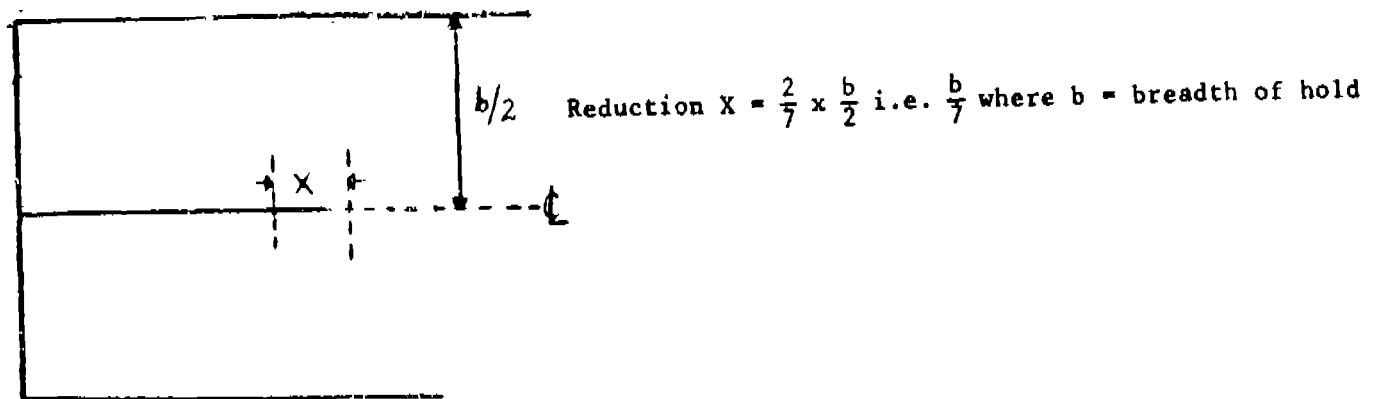


FIG. 10

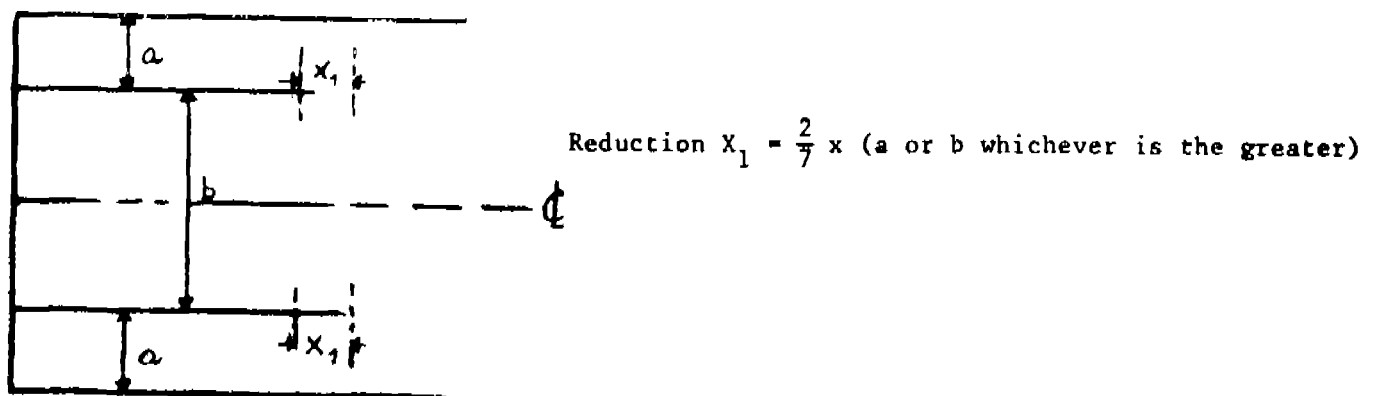


FIG. 11

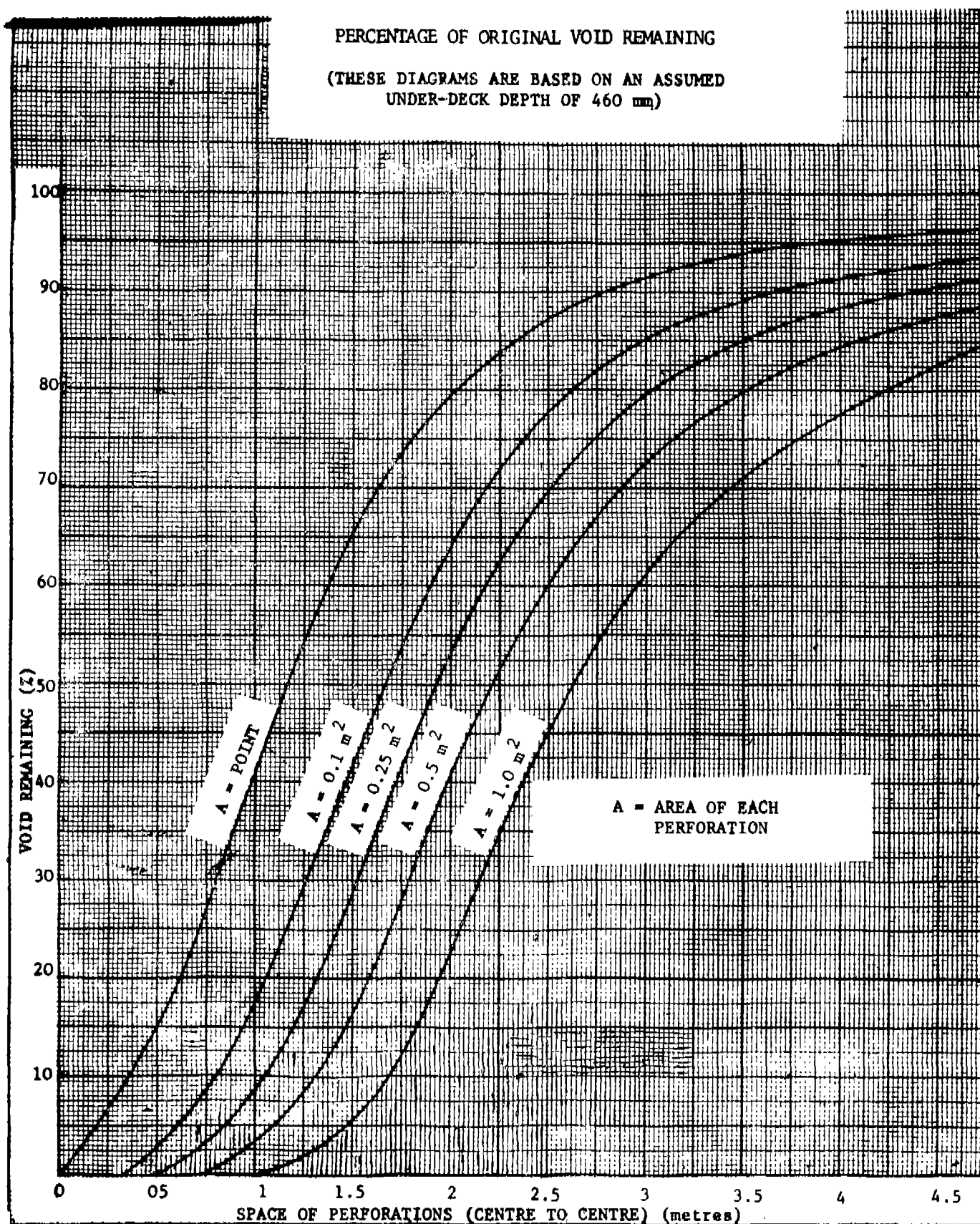


FIG. 12

SCHEDULE II

Part I—Strength of grain fittings

- (A) General (including working stresses).
- (B) Divisions loaded on both sides.
- (C) Divisions loaded on one side only.
- (D) Saucers.

Part II—Securing of partly filled compartments.

- (A) Strapping or lashing.
- (B) Constructional details of securing arrangements.
- (C) Bagged grain.

Part I—Strength of Grain Fittings

(A) General

(a) Timber. All timber used for grain fittings should be of good sound quality and of a type and grade which has been proved to be satisfactory for this purpose. The actual finished dimensions of the timber should be in accordance with the dimensions herein after specified in this Schedule. Plywood of an exterior type bonded with water-proof glue and fitted so that the direction of the grain in the face plies is perpendicular to the supporting uprights or binder may be used provided that its strength is equivalent to that of solid timber of the appropriate scantlings.

(b) Working stresses. When calculating the dimensions of divisions loaded on one side, using the Tables in paragraphs (c), (a) and (b) of this Part of the Schedule, the following working stresses should be adopted.

For divisions of steel 2,000 kg. per square cm.
For divisions of wood 160 Kg. per square cm.

(c) Other materials. Materials other than wood or steel, may be approved for such divisions provided, that proper regard has been paid to their mechanical properties.

(d) Uprights :

(i) Unless means are provided to prevent the ends of uprights being dislodged from their sockets, the depth of housing at each end of each upright should be not less than 75 mm. If an upright is not secured at the top the uppermost shore or stay should be fitted as near thereto as is practicable.

(ii) The arrangements provided for inserting shifting boards by removing a part of the crow-section of an upright should be such that the local level of stresses is not unduly high.

(iii) The maximum bending movement imposed upon an upright supporting a division loaded on one side should normally be calculated assuming that the ends of the uprights are freely supported. However, if the Department are satisfied that any degree of fixity assumed will be achieved in practice, account may be taken of any reduction in the maximum bending moment arising from any degree of fixity provided at the ends of the upright.

(c) Composite sections. Where uprights, binders, or any other strength members are formed by two separate sections one fitted on each side of a division and inter-connected by through bolts at adequate spacing, the effective section modulus should be taken as the sum of the two moduli of the separate sections.

47 G1/77—7

(f) Partial division. Where divisions do not extend to the full depth of the hold, such divisions and their uprights should be supported or stayed so as to be as efficient as those which do extend to the full depth of the hold.

(B) Divisions loaded on both sides

(a) Shifting boards.

(i) Shifting boards should have a thickness of not less than 50 mm and should be fitted grain-tight and where necessary supported by uprights.

(ii) The maximum unsupported span for shifting boards of various thickness should be as follows :—

Thickness	Maximum unsupported span
50 mm	2.5 metres
60 mm	3.0 metres
70 mm	3.5 metres
80 mm	4.0 metres

If thicknesses greater than these are provided the maximum unsupported span should vary in direct proportion with the increase in thickness.

(iii) The ends of all shifting boards should be securely housed with 75 mm minimum bearing length.

(b) Other materials. Divisions formed by using materials other than wood should have a strength equivalent to the shifting boards required in (B) (a) above.

(c) Uprights

(i) Steel uprights used to support divisions loaded on both sides should have a section modulus given by $W = a.W_1$

Where :

W = Section moduli in cm^3 ;

a = Horizontal span between uprights in metres.

The section modulus per metre span W_1 , should be not less than that given by the formula :

$$W_1 = 14.8 (h_1 - 1.22) \text{ cm}^3 \text{ per metre ;}$$

h_1 is the vertical unsupported span in metres and should be taken as the maximum value of the distance between any two adjacent stays or between the stay or either end of the upright. Where this distance is less than 2.44 metres the respective modulus shall be calculated as if the actual value was 2.44 metres.

(ii) The moduli of wood uprights should be determined by multiplying by 12.7 the corresponding moduli for steel uprights. If other materials are used their moduli should be at least that required for steel increased in proportion to the ratio of the permissible stresses for steel to that of the material used. In such cases attention should be paid also to the relative rigidity of each upright to ensure that the deflection is not excessive.

(iii) The horizontal distance between uprights should be such that the unsupported spans of the shifting boards do not exceed the maximum span specified in paragraph (a) (ii) of this Part of the Schedule.

(d) Shores :

(i) Wood shores, when used, should be in a single piece and should be securely fixed at each end and heeled against

the permanent structure of the ship except that they shall not bear directly against the side plating of the ship.

(ii) Subject to the provisions of sub-paragraphs (iii) and (iv) below the minimum size of wood shores shall be as follows :

Length of Shore metres	Rectangular section	Diameter of circular section
	mm	mm
Not exceeding 3 m	150 × 100	140
Over 3 m but not exceeding 5 m	150 × 150	165
Over 5 m but not exceeding 6 m	150 × 150	180
Over 6 m but not exceeding 7 m	200 × 150	190
Over 7 m but not exceeding 8 m	200 × 150	200
Exceeding	200 × 150	215

Shores of 7 metres or more in length should be securely bridged at approximately mid-length.

(iii) When the horizontal distance between the uprights differs significantly from 4 metres, the moments of inertia of the shores may be changed in direct proportion.

(iv) Where the angle of the shore to the horizontal exceeds 10 degrees the next larger shore to that required by sub-paragraph (ii) of this paragraph should be fitted provided that in no case shall the angle between any shore and the horizontal exceed 45 degrees.

(e) Stays. Where stays are used to support divisions loaded on both sides, they should be fitted horizontally or as near thereto as practicable, well secured at each end and formed of steel wire rope. The sizes of the wire rope should be determined assuming that the divisions and upright which the stay supports is uniformly loaded at 500 kg/m². The working load so assumed in the stay should not exceed one-third of its breaking load.

(C) Divisions loaded on one side only.

(a) Longitudinal divisions. The load in Kg. per metre length of the division should be taken to be as follows :—

TABLE I*

h (m)	B(m)							
	2	3	4	5	6	7	8	10
1.5	850	900	1010	1225	1500	1770	2060	2645
2.0	1390	1505	1710	1985	2295	2605	2930	3590
2.5	1985	2160	2430	2740	3090	3435	3800	4530
3.0	2615	2845	3150	3500	3885	4270	4670	5480
3.5	3245	3525	3870	4255	4680	5100	5540	6425
4.0	3890	4210	4590	5015	5475	5935	6410	7370
4.5	4535	4890	5310	5770	6270	6765	7280	8315
5.0	5185	5570	6030	6530	7065	7600	8150	9260
6.0	6475	6935	7470	8045	8655	9265	9890	11150
7.0	7765	8300	8910	9560	10245	10930	11630	13040
8.0	9055	9665	10350	11075	11835	12595	13370	14930
9.0	10345	11030	11790	12590	13425	14260	15110	16820
10.0	11635	12395	13230	14105	15015	15925	16850	18710

h=height of grain in metres**

B=transverse extent of the bulk grain in metres.

For other values of h and/or B the loads should be determined by linear interpolation or extrapolation as necessary.

* For the purpose of converting the above loads into British units (ton/ft) 1 kg per metre length should be taken to be equivalent to 0.0003 tons per foot length.

**There the distance from a division to a feeder or hatchway is 1 metre the height should be taken to the level of the grain within that hatchway or feeder. In all other cases the height should be taken to the overhead deck in way of the division.

(b) Transverse divisions. The load in kg. per metre length of the divisions should be taken to be as follows :—

TABLE II*

h (m)	L(m)										
	2	3	4	5	6	7	8	10	12	14	16
1.5	670	690	730	780	835	890	935	1000	1040	1050	1050
2.0	1040	1100	1170	1245	1325	1400	1470	1575	1640	1660	1660
2.5	1460	1565	1675	1780	1880	1980	2075	2210	2285	2305	2305
3.0	1925	2065	2205	2340	2470	2590	2695	2845	2925	2950	2950
3.5	2425	2605	2770	2930	3075	3205	3320	3480	3570	3595	3595
4.0	2950	3160	3355	3535	3690	3830	3950	4120	4210	4235	4240
4.5	3495	3725	3940	4130	4295	4440	4565	4750	4850	4880	4885
5.0	4050	4305	4535	4735	4910	5060	5190	5385	5490	5525	5530
6.0	5175	5465	5720	5945	6135	6300	6445	6655	6775	6815	6825
7.0	6300	6620	6905	7150	7365	7445	7700	7930	8055	8105	8115
8.0	7425	7780	8090	8360	8590	8685	8950	9200	9340	9395	9410
9.0	8550	8935	9275	9565	9820	9930	10205	10475	10620	10685	10705
10.0	9680	10095	10460	10770	11045	11270	11460	11745	11905	11975	11997

h = height of grain in metres**

L = longitudinal extent of the bulk grain in metres

* For the purposes of converting the above loads into British units (ton/ft) 1 kg per metre length should be taken to be equivalent to 0.0003 tons per foot length

** Where the distance from a division to a feeder or hatchway is 1 metre the height should be taken to the level of the grain within that hatchway or feeder. In all other cases the height should be taken to the overhead deck in way of the division.

For other values of h and/or L the loads should be determined by linear interpolation or extrapolation as necessary.

(c) Vertical distribution of the loads. The total load per unit length of divisions shown in the Tables I and II above, may, if considered necessary, be assumed to have a trapezoidal

distribution with height. In such cases the reaction loads at the upper and lower ends of a vertical member or upright are not equal. The reaction loads at the upper end expressed as percentages of the total load supported by the vertical member or upright should be taken to be those shown in Tables III and IV.

LONGITUDINAL DIVISIONS LOADED ON ONE SIDE ONLY

TABLE III

Bearing Reaction at the Upper End of Upright as Percentage of Load (Table I)

h (m)	B (m)								
	2	3	4	5	6	7	8	10	
1.5	43.3	45.1	45.9	46.2	46.2	46.2	46.2	46.2	
2.0	44.5	46.7	47.6	47.8	47.8	47.8	47.8	47.8	
2.5	45.4	47.6	48.6	48.6	48.6	48.6	48.6	48.6	
3.0	46.0	48.3	49.2	49.4	49.4	49.4	49.4	49.4	
3.5	46.5	48.8	49.7	49.8	49.8	49.8	49.8	49.8	
4.0	47.0	49.1	49.9	50.1	50.1	50.1	50.1	50.1	
4.5	47.4	49.4	50.1	50.2	50.2	50.2	50.2	50.2	
5.0	47.7	49.4	50.1	50.2	50.2	50.2	50.2	50.2	
6.0	47.9	49.5	50.1	50.2	50.2	50.2	50.2	50.2	
7.0	47.9	49.5	50.1	50.2	50.2	50.2	50.2	50.2	
8.0	47.9	49.5	50.1	50.2	50.2	50.2	50.2	50.2	
9.0	47.9	49.5	50.1	50.2	50.2	50.2	50.2	50.2	
10.0	47.9	49.5	50.1	50.2	50.2	50.2	50.2	50.2	

B = transverse extent of the bulk grain.

For other values of h and/or B the reaction loads should be determined by linear interpolation or extrapolation as necessary.

TRANSVERSE DIVISIONS LOADED ON ONE SIDE ONLY

TABLE IV

Bearing Reaction at the Upper End of Upright as Percentage of Load (Table II)

h(m)	L(m)										
	2	3	4	5	6	7	8	10	12	14	16
1.5	37.3	38.7	39.7	40.6	41.4	42.1	42.6	43.6	44.3	44.8	45.0
2	39.6	40.6	41.4	42.1	42.7	43.1	43.6	44.3	44.7	45.0	45.2
2.5	41.0	41.8	42.5	43.0	43.5	43.8	44.2	44.7	45.0	45.2	45.2
3	42.1	42.8	43.3	43.8	44.2	44.5	44.7	45.0	45.2	45.3	45.3
3.5	42.9	43.5	43.9	44.3	44.6	44.8	45.0	45.2	45.3	45.3	45.3
4	43.5	44.0	44.4	44.7	44.9	45.0	45.2	45.4	45.4	45.4	45.4
5	43.9	44.3	44.6	44.8	45.0	45.2	45.3	45.5	45.5	45.5	45.5
6	44.2	44.5	44.8	45.0	45.2	45.3	45.4	45.6	45.6	45.6	45.6
7	44.3	44.6	44.9	45.1	45.3	45.4	45.5	45.6	45.6	45.6	45.6
8	44.3	44.6	44.9	45.1	45.3	45.4	45.5	45.6	45.6	45.6	45.6
9	44.3	44.6	44.9	45.1	45.3	45.4	45.5	45.6	45.6	45.6	45.6
10	44.3	44.6	44.9	45.1	45.3	45.4	45.5	45.6	45.6	45.6	45.6

L = Longitudinal extent of the bulk grain.

For other values of h and/or L the reaction loads should be determined by linear interpolation or extrapolation as necessary.

The strength of the end connections of such vertical members or uprights may be calculated on the basis of the maximum load likely to be imposed at either end. These loads are as follows :—

Maximum load at the top . . . 50% of the appropriate total load from Table I.

Longitudinal Divisions

Maximum load at the bottom . . . 55% of the appropriate total load from Table I.

Maximum load at the top . . . 45% of the appropriate total load from Table II.

Transverse Divisions

Maximum load at the bottom . . . 60% of the appropriate total load from Table II.

The thickness of horizontal wooden boards may also be determined having regard to the vertical distribution of the loading represented by Tables III and IV above and in such cases :

$$t = 10 a \sqrt{\frac{P_{xk}}{hx213.3}}$$

Where :

t = Thickness of board in mm;

a = Horizontal span of the board, i.e. distance between uprights in metres ;

h = Head of grain to the bottom of the division in metres ;

p = Total load per unit length derived from Table I or II in kg.

k = Factor dependent upon vertical distribution of the loading.

When the vertical distribution of the loading is assumed to be uniform, co. rectangular, k should be taken as equal to 1.0. For a trapezoidal distribution.

$k = 1.0 \div 0.06 (50 - R)$, where

R is the upper end bearing reaction taken from Table III or IV.

(d) Stays or shores. The sizes of stays and shores should be so determined that the loads derived from Tables I and II

in the preceding paragraphs (a) and (b) should not exceed one-third of the breaking loads.

(D) Saucers.

When a saucer is used to reduce the heeling moments in a full compartment, its depth, measured from the bottom of the saucer to the deck line, should be as follows :

For ships with a moulded breadth of up to 9.14 metres, less than 1.22 metres.

For Ships with a moulded breadth of up to 18.29 metres or more, not less than 1.83 metres.

For ships with a moulded breadth between 9.14 metres and 18.29 metres, the minimum depth of the saucer should be calculated by interpolation.

As far as is practicable the top (mouth) of the saucer should be formed by the underdeck structure in the way of the hatchway, i.e. hatch side girders or coamings and hatch end beams. The saucer and hatchway above should be completely filled with bagged grain or other suitable cargo laid down on a separation cloth or its equivalent and stowed tightly against adjacent structures and the portable hatchway beams if the latter are in place.

PART II—Securing or Partly Filled Compartments

(A) Strapping or lashing

(a) When, in order to eliminate heeling moments in partly filled compartments, strapping or lashing is utilized, the securing should be accomplished as follows :—

(i) The grain should be trimmed and levelled to the extent that it is very slightly crowned and covered with burlap separation cloths, tarpaulins or the equivalent.

(ii) The separation cloths and/or tarpaulins shall overlap at least 1.83 metres.

(iii) Two solid floors of 25 mm timber shall be laid with the top floor running longitudinally and nailed to an athwartships bottom floor. Alternately, one solid floor of 50 mm timber, running longitudinally and nailed over the top of a 50 mm bottom bearer not less than 150 mm wide, may be used instead of the two floors of 25 mm timber. The bottom bearers should extend the full breadth of the compartment and should be spaced not more than 2.44 metres apart. Arrangements utilizing other materials and considered by the Department to be equivalent to the foregoing may be accepted.

- (iv) Steel wire (19 mm diameter or equivalent), doubled strapping (50 mm × 1.3 mm) or chain, each having a breaking load of at least 5,000 kg and set tight by means of a 32 mm turnbuckle, may be used for lashings. A winch tightener, used in conjunction with a locking arm, may be substituted for the 32 mm turnbuckle when steel strapping is used, provided suitable wrenches are available for setting up as necessary. When steel strapping is used, not less than tree crimp seals should be used for securing the ends. When wire is used, no less than four clips should be used for forming eyes in the lashings.
- (v) Prior to the completion of loading the lashing should be positively attached to the framing at a point approximately 450 mm below the anticipated final grain surface by means of either a 25 mm shackle or beam clamp of equivalent strength.
- (vi) The lashings should be spaced not more than 2.44 metres apart and each shall be supported by a bearer nailed over the top of the fore and aft floor. This bearer should consist of not less than 25 mm by 150 mm timber or its equivalent and should extend the full breadth of the compartment.

(B) Constructional details of securing arrangements.

Where bagged grain or other suitable cargo is utilized for the purpose of securing partly filled compartments, the free grain surface should be covered with a separation cloth or equivalent and/or by a suitable platform. Such platforms should consist of wooden bearers spaced not more than 1.22 metres apart and 25 mm wooden boards laid thereon spaced not more than 100 mm apart. Platforms may be constructed of other materials provided they are considered by the Department to be equivalent.

(C) Bagged grain.

Bagged grain shall be carried in sound bags which should be well filled and securely closed.

APPENDIX—II

(See Clause 2)

Equivalent arrangements to those prescribed in the Merchant Shipping (Carriage of Grain) Rules, 1974.

Part— I

Part A—GENERAL PROVISIONS

1. Application.—Unless expressly provided otherwise, this APPENDIX, including Parts A, B and C, applies to the carriage of grain in all ships to which the Merchant Shipping (Carriage of Grain) Rules, 1974 apply.

2. Definitions:

- (a) The term "grain" includes wheat, maize (corn), oats, rye, barley, rice, pulses, seeds and processed forms thereof, whose behaviour is similar to that of grain in its natural state.
- (b) The term "filled compartment" refers to any compartment in which, after loading and trimming as required under para 3, the bulk grain is at its highest possible level.
- (c) The term "partly filled compartment" refers to any compartment wherein bulk grain is not loaded in the manner prescribed in paragraph (b) of this para.

- (d) The term "angle of flooding" means an angle of heel at which openings in the hull, superstructures or deck-houses, which cannot be closed weathertight, immerse. In applying this definition, small openings through which progressive flooding cannot take place need not be considered as open.

3. Trimming of Grain : All necessary and reasonable trimming shall be performed to level all free grain surfaces and to minimise the effect of grain shifting.

- (a) In any "filled compartment," the bulk grain shall be trimmed so as to fill all the spaces under the decks and hatch covers to the maximum extent possible.
- (b) After loading, all free grain surfaces in "partly filled compartments" shall be level.
- (c) The Central Government may grant dispensation from trimming in those cases where the underdeck void geometry resulting from flowing grain into a compartment, which may be provided with feeding ducts, perforated decks or other similar means, is taken into account to its satisfaction when calculating the void depths.

4. Intact Stability Requirements :

- (a) The calculations required by this Paragraph shall be based upon the stability information provided in accordance with the Merchant Shipping (Cargo-ship construction and Survey) Rules, 1974.
- (b) The intact stability characteristics of any ship carrying bulk grain shall be shown to meet, throughout the voyage, at least the following criteria after taking into account in the matter described in Part B, the heeling moments due to grain shift :

- (i) the angle of heel of the vessel due to the shift of grain shall not be greater than 12 degrees except that the Central Government may require a lesser angle of heel if it considers that experience shows this to be necessary*;

- (ii) in the statical stability diagram, the net or residual area between the heeling arm curve and the righting arm curve up to the angle of heel of maximum difference between the ordinates of the two curves, or 40 degrees or the "angle of flooding (of)", whichever is the least, shall in all conditions of loading be not less than 0.075 metre-radians ; and

- (iii) the initial metacentric height, after correction for the free surface effects of liquids in tanks, shall be not less than 0.30 metre.

- (c) Before loading bulk grain the master shall, if so required by the Government of the country of the port of loading, demonstrate the ability of the ship at all stages of any voyage to comply with the stability criteria required by Sub-paragraph (b) using the information approved and issued under Paragraphs 10 and 11.
- (d) After loading, the master shall ensure that the ship shall be upright before proceeding to sea.

5. Longitudinal Divisions and Saucers :

- (a) In both "filled compartments" and "partly filled compartments," longitudinal divisions may be provided as a device either to reduce the adverse heeling effect

*For example, the permissible angle of heel might be limited to the angle of heel at which the edge of the weather deck would be immersed in still water.

of grain shift or to limit the depth of cargo used for securing the grain surface. Such divisions shall be fitted grain-tight and constructed in accordance with the provisions of Section I of the Part C.

- (b) In a "filled compartments," a division, if fitted to reduce the adverse effects of grain shift, shall :

- (i) in a 'tween deck compartment extend from deck to deck; and
- (ii) in a hold extend downwards from the underside of the deck or hatch covers as described in Section II of Part B.

Except in the case of linseed and other seeds having similar properties, a longitudinal division beneath a hatchway may be replaced by a saucer formed in the manner described in Section I of Part C.

- (c) In a "partly filled compartments," a division, if fitted, shall extend from one-eighth of the maximum breadth of the compartment above the level of the grain surface and to the same distance below the grain surface. When used to limit the depth of overstowing, the height of the centreline division shall be at least 0.6 metre above the level grain surface.
- (d) Furthermore, the adverse heeling effects of grain shift may be reduced by tightly stowing the wings and ends of a compartment with bagged grain or other suitable cargo adequately restrained from shifting.

6. Securing :

- (a) Unless account is taken of the adverse heeling effect due to grain shift in accordance with these provisions, the surface of the bulk grain in any "partly filled compartment" shall be level and topped off with bagged grain tightly stowed and extending to a height of not less than one-sixteenth of the maximum breadth of the free grain surface or 1.2 metres, whichever is the greater, instead of bagged grain, other suitable cargo exerting at least the same pressure may be used.
- (b) The bagged grain or such other suitable cargo shall be supported in the manner described in Section II of Part C. Alternatively, the bulk grain surface may be secured by strapping or lashing as described in Section II of Part C.

7. Feeders and Trunks :

If feeders or trunks are fitted proper account shall be taken of the effect thereof when calculating the heeling moments as described in section III of Part B. The strength of the divisions forming the boundaries of such feeders shall conform with the provisions of Section I of Part C.

8. Combination Arrangements :

Lower holds and 'tween deck spaces in way thereof may be loaded as one compartment provided that, in calculating transverse heeling moments, proper account is taken of the flow of grain into the lower spaces.

9. Application of Parts B and C :

The Central Government may authorize departure from the assumptions contained in Parts B and C in those cases where it considers this to be justified having regard to the provisions for loading or the structured arrangements, provided the stability criteria in Part 4(b) are met. Where such authorization

is granted under this Para, all particulars shall be included in the grain loading data.

10. Authorization :

- (a) A document of authorization shall be issued for every ship loaded in accordance with this appendix.
- (b) The document shall accompany and refer to the grain loading stability booklet provided to enable the master to meet the requirements of Paragraph 4(c). This booklet shall meet the requirements of Para 11.
- (c) A copy of such a document, grain loading stability data and associated plan shall be placed on board in order that the master, if so required, shall produce them for the inspection of the Government of the country of the port of loading.
- (d) A ship without such a document of authorization shall not load grain until the master demonstrates to the satisfaction of the Central Government or the Government of the port of loading on behalf of the Central Government that the ship in its proposed loaded condition will comply with the requirements of this appendix.

11. Grain Loading Information :

This information shall be sufficient to allow the master to determine in all reasonable loading conditions the heeling moments due to grain shift calculated in accordance with Part B. It shall include the following :—

- (a) Information which shall be approved by the Central Government :—
 - (i) Curves or tables of grain heeling moments for every compartment, filled or partly filled, or combination thereof, including the effects of temporary fittings;
 - (ii) table of maximum permissible heeling moments or other information sufficient to allow the master to demonstrate compliance with the requirements of Paragraph (c);
 - (iii) details of the scantlings of any temporary fittings and where applicable the provisions necessary to meet requirements of Section I(E) of Part C;
 - (iv) typical loaded service departure and arrival conditions and where necessary, intermediate worst service conditions ;
 - (v) a worked example for the guidance of the master;
 - (vi) loading instructions in the form of notes summarizing the requirements of this Appendix.

- (b) Information which shall be acceptable to the Central Government :

- (i) ship's particulars ;
- (ii) lightship displacement and the vertical distance from the intersection of the moulded base line and midship section of the centre of gravity (KG);
- (iii) table of free surface corrections;
- (iv) capacities and centres of gravity.

PART—B—CALCULATION OF ASSUMED HEELING MOMENTS

Section I—DESCRIPTION OF THE ASSUMED VOIDS AND METHOD OF CALCULATING INTACT STABILITY

(A) GENERAL

- (a) For the purpose of calculating the adverse heeling moment due to a shift of cargo surface in ships carrying bulk grain it shall be assumed that :—

- (i) In "filled compartments" which have been trimmed in accordance with Para 3 a void exists under all boundary surfaces having an inclination to the horizontal less than 30 degrees and that the void is parallel to the boundary surface having an average depth calculated according to the formula:

$$Vd = Vd_1 + 0.75(d - 600) \text{ mm.}$$

Where :

Vd = Average void depth in mm;

Vd_1 = Standard void depth from Table I below;

d = Actual girder depth in mm.

In no case shall Vd be assumed to be less than 100 mm.

TABLE I

Distance from hatched or Standard void depth Vd_1
hatchside to boundary of
compartment,

metres	mm.
0.5 0.5	570
1.0 1.0	530
2.0 1.5	500
2.5 2.0	480
3.0 2.5	450
3.5 3.0	440
4.0 3.5	430
4.5 4.0	430
5.0 4.5	430
5.5 5.0	430
6.0 5.5	450
6.5 6.0	470
7.0 6.5	490
7.5 7.0	520
8.0 7.5	550
8.0 8.0	590

NOTES ON TABLE I:

For distances greater than 8.0 metres the standard void depth Vd_1 shall be linearly extrapolated at 80 mm increase for each 1.0 metre increase in distance. Where there is a difference in depth between the hatchside girder or its continuation and the hatchend beam the greater depth shall be used except that :—

- (1) when the hatchside girder or its continuation is shallower than the hatchend beam the voids abreast the hatchway may be calculated using the lesser depth; and
- (2) when the hatchend beam is shallower than the hatchside girder or its continuation the voids fore and aft of the

hatchway inboard of the continuation of the hatchside girder may be calculated using the lesser depth ;

- (3) where there is a raised deck clear of a hatchway the average void depth measured from the underside of the raised deck shall be calculated using the standard void depth in association with the girder depth of the hatchend beam plus the height of the raised deck.
- (ii) In "filled compartments" which are not trimmed in accordance with Paragraph 3 and where the boundary surface has an inclination to the horizontal which is less than 30 degrees, the cargo surface has an inclination of 30 degrees to the horizontal after loading.
- (iii) Within filled hatchways and in addition to any open void within the hatch cover there is a void of average depth of 150 mm measured down to the grain surface from the lowest part of the hatch cover or the top of the hatchside coaming, whichever is the lower.

(b) The description of the pattern of grain surface behaviour to be assumed in "partly filled compartments" is shown in Section IV of this Part.

(c) For the purpose of demonstrating compliance with the stability criteria in Paragraph 4(b) (See Figure 1), the ships stability calculations shall be normally based upon the assumption that the centre of gravity of cargo in a "filled compartment" is at the volumetric centre of the whole cargo space. In those cases where the Central Government authorizes account to be taken of the effect of assumed underdeck voids on the vertical position of the centre of gravity of the cargo in "filled compartments" it will be necessary to compensate for the adverse effect of the vertical shift of grain surface by increasing the assumed heeling moment due to the transverse shift of grain as follows :—

Total heeling moment = $1.05 \times$ calculated transverse heeling moment.

In all cases the weight of cargo in a "filled compartment" shall be the volume of the whole cargo space divided by the stowage factor.

(d) In "partly filled compartments" the adverse effect of the vertical shift of grain surfaces shall be taken into account as follows :—

(e) Total heeling moment = $1.12 \times$ calculated transverse heeling moment.

(f) Any other equally effective method may be adopted to make the compensation required in paragraphs (c) and (d) above.

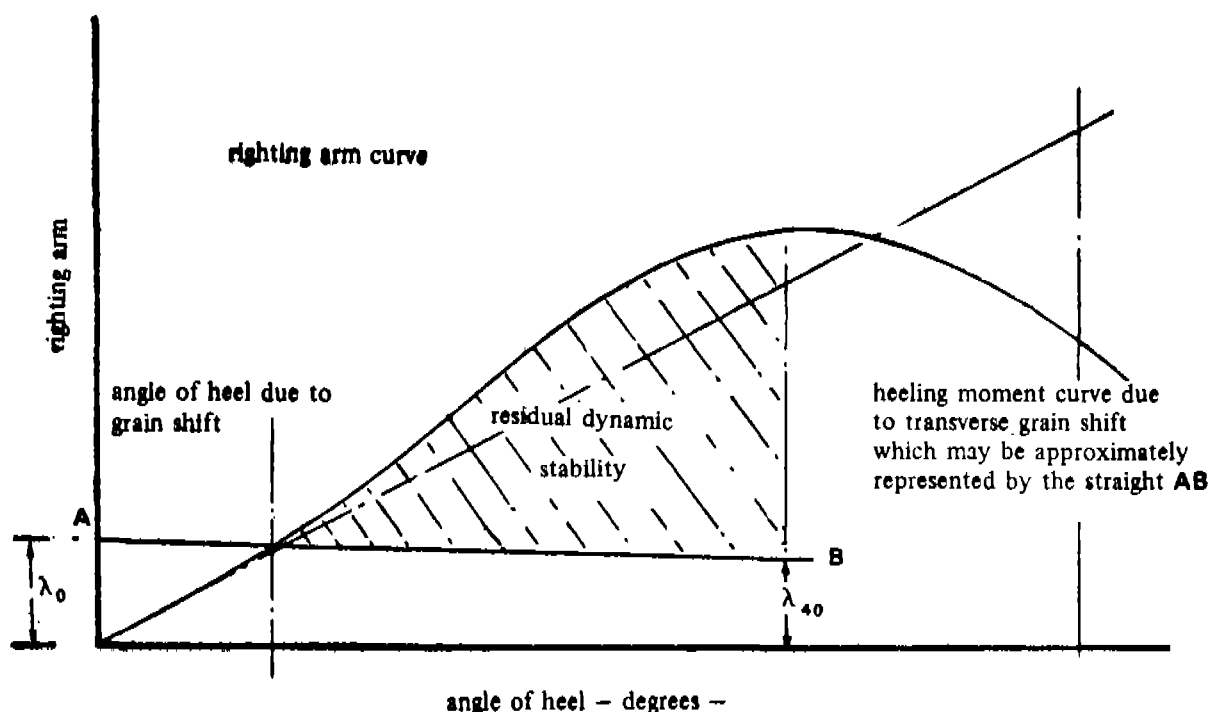


Figure 1

NOTES ON FIGURE 1

1. Where:

h_0 = Assumed Volumetric Heeling Moment due to Transverse Shift;

Stowage Factor \times Displacement

$h_{40} = 0.8 \times h_0$;

Stowage factor = Volume per unit weight of grain cargo;

Displacement = Weight of ship, fuel, fresh water, stores etc. and cargo.

2. The righting arm curve shall be derived from cross-curves which are sufficient in number to accurately define the curve for the purpose of these requirements and shall include cross-curves at 12 degrees and 40 degrees.

SECTION II—ASSUMED VOLUMETRIC HEELING OF A FILLED COMPARTMENT

(A) GENERAL

(a) The pattern of grain surface moment relates to a transverse section across the portion of the compartment being considered and the resultant heeling moment should be multiplied by the length to obtain the total moment for that portion.

(b) The assumed transverse heeling moment due to grain shifting is a consequence of final changes of shape and position of voids after grain has moved from the high side to the low side.

(c) The resulting grain surface after shifting shall be assumed to be at 15 degrees to the horizontal.

(d) In calculating the maximum void area that can be formed against a longitudinal structural member, the effects of any horizontal surfaces, e.g. flanges or face bars, shall be ignored.

(e) The total areas of the initial and final voids shall be equal.

(f) A discontinuous longitudinal division shall be considered effective over its full length.

(b) ASSUMPTIONS

In the following paragraphs it is assumed that the total heeling moment for a compartment is obtained by adding the results of separate considerations of the following portions;

(a) Before and abaft hatchways :

(i) If a compartment has two or more main hatchways through which loading may take place the depth of the underdeck void for the portion (s) between such hatchways shall be determined using the fore and aft distance to the midpoint between the hatchways.

(ii) After the assumed shift of grain the final void pattern shall be as shown in Figure 2 below :

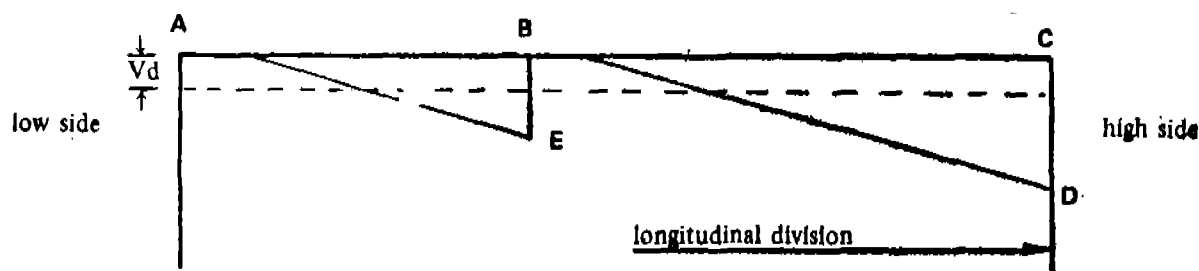


Figure 2

NOTES ON FIGURE 2

1. If the maximum void area which can be formed against the girder at B is less than the initial area of the void under AB, i.e. $AB \times Vd$, the excess area shall be assumed to transfer to the final void on the high side.

2. If the longitudinal division at C is one which has been provided in accordance with Paragraph 5(b)(ii) it shall extend to at least 0.6 m below D or E whichever gives the greater depth.

(b) In and abreast hatchways :

After the assumed shift of grain the final void pattern shall be as shown in the following Figure 3 or Figure 4.

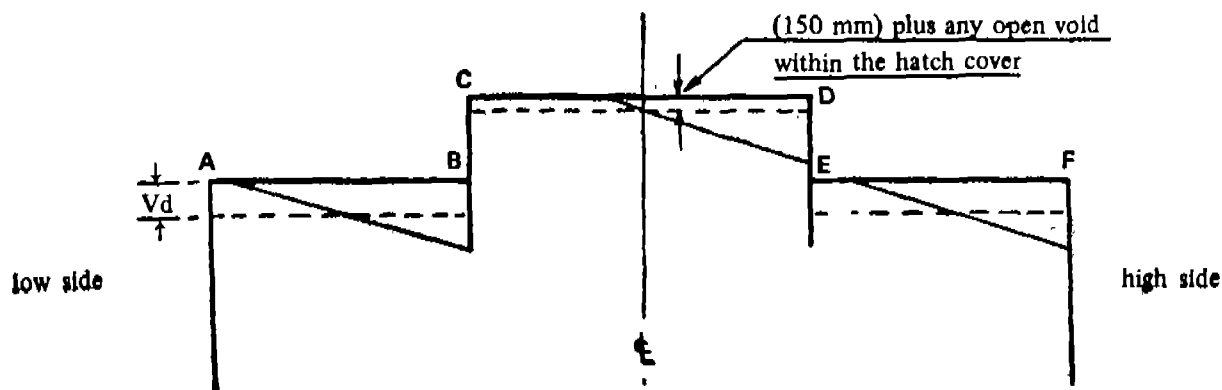


Figure 3

NOTES ON FIGURE 3

(1) AB any area in excess of that which can be formed against the girder at B shall transfer to the final void area in the hatchway.

(2) CD Any area in excess of that which can be formed against the girder at E shall transfer to the final void area on the high side.

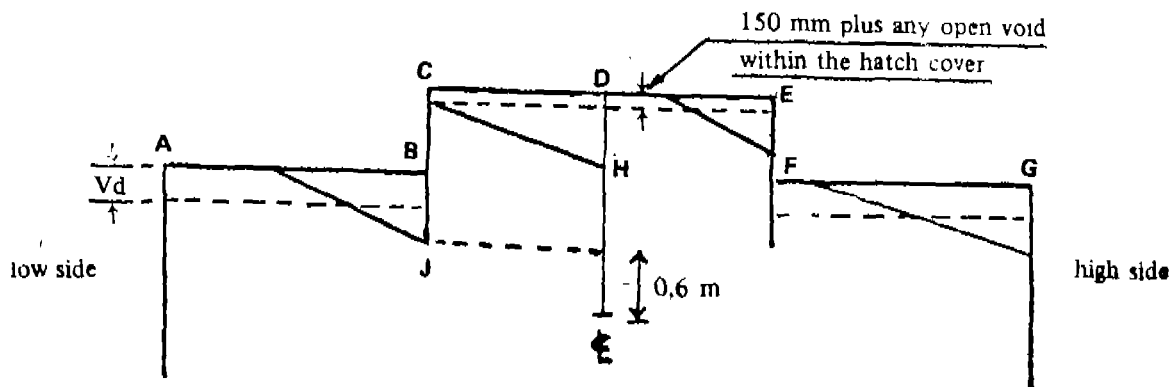


Figure 4

NOTES ON FIGURE 4

(1) If the centreline division is one which has been provided in accordance with Paragraph 5(b)(ii) it shall extend to at least 0.6 m below H or J whichever gives the greater depth.

(2) The excess void area from AB shall transfer to the low side half of the hatchway in which two separate final void areas will be formed viz. one against the centreline division and the other against the hatchside coaming and girder on the high side.

(3) If a bagged saucer or bulk bundle is formed in a hatchway it shall be assumed for the purpose of calculating transverse heeling moment, that such a device is at least equivalent to centreline division.

(4) COMPARTMENTS LOADED IN COMBINATION

The following paragraphs describe the pattern of void behaviour which shall be assumed when compartments are loaded in combination:

(a) Without effective centreline divisions:

(i) Under the upper deck—as for the single deck arrangement described in Section II(B) of this Part.

(ii) Under the second deck—the area of void available for transfer from the low side, i.e. original void area less area against the hatchside girder, shall be assumed to transfer as follows :—

one half to the upper deck hatchway and one quarter each to the high side under the upper and second deck.

(iii) Under the third and lower decks—the void areas available for transfer from the low side of each of these decks shall be assumed to transfer in equal quantities to all the voids under the decks on the high side and the void in the upper deck hatchway.

(b) With effective centreline divisions which extend into the upper deck hatchway:

(i) At all deck levels abreast the division the void areas available for transfer from the low side shall be

assumed to transfer to the void under the low side half of the upper deck hatchway.

(ii) At the deck level immediately below the bottom of the division the void area available for transfer from the low side shall be assumed to transfer as follows :—

one half to the void under the low side half of the upper deck hatchway and the remainder in equal quantities to the voids under the decks on the high side.

(iii) At deck levels lower than those described in subparagraphs (i) and (ii) above the void area available for transfer from the low side of each of those decks shall be assumed to transfer in equal quantities to the voids in each of the two halves of the upper deck hatchway on each side of the division and the voids under the decks on the high side.

(c) With effective centreline divisions which do not extend into the upper deck hatchway :

Since no horizontal transfer of voids may be assumed to take place at the same deck level as the division the void area available for transfer from the low side at this level shall be assumed to transfer above the division to voids on the high sides in accordance with the principles of paragraphs (a) and (b) above.

SECTION III—ASSUMED VOLUMETRIC HEELING MOMENT OF FEEDERS AND TRUNKS

(A) SUITABLY PLACED WING FEEDERS (See Figure 5)

It may be assumed that under the influence of ship motion underdeck voids will be substantially filled by the flow of grain from a pair of longitudinal feeders provided that :

(a) the feeders extend for the full length of the deck and that the perforations therein are adequately spaced;

(b) the volume of each feeder is equal to the volume of the underdeck void outboard of the hatchside girder and its continuation.

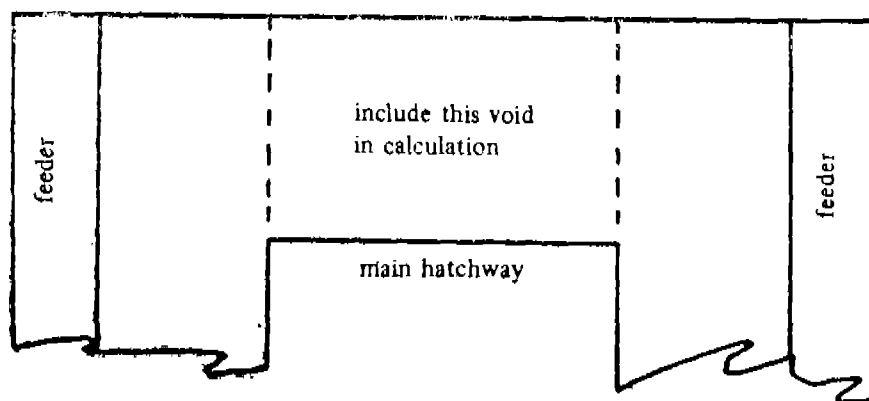


Figure 5

(B) TRUNKS SITUATED OVER MAIN HATCHWAYS

After the assumed shift of grain the final void pattern shall be

as shown in Figure 6.

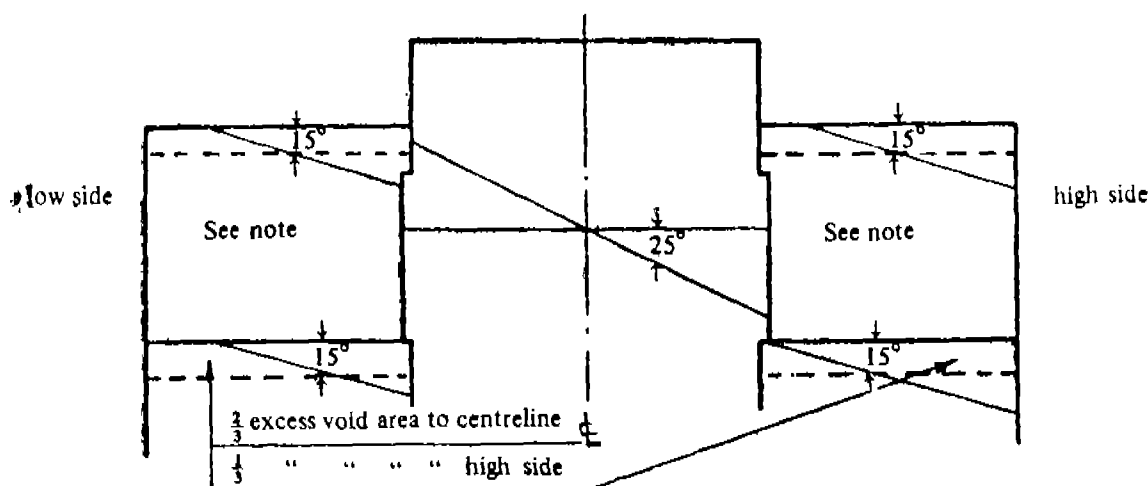


Figure 6

NOTE ON FIGURE 6 :

If the wing spaces in way of the trunk cannot be properly trimmed in accordance with Para 3 it shall be assumed that a 25 degree surface shift takes place.

SECTION IV—ASSUMED VOLUMETRIC HEELING MOMENT OF PARTLY FILLED COMPARTMENTS

(A) GENERAL

When the free surface of the bulk grain has not been secured in accordance with Para 6 it shall be assumed that the grain surface after shifting shall be at 25° to the horizontal.

(B) DISCONTINUOUS LONGITUDINAL DIVISIONS

In a compartment in which the longitudinal divisions are not continuous between the transverse boundaries, the length over which any such divisions are effective as devices to prevent full width shifts of grain surfaces shall be taken to be the actual length of the portion of the division under consideration less two-sevenths of the greater of the transverse distances between the division and its adjacent division or ship side.

This correction does not apply in the lower compartments of any combination loading in which the upper compartment is either a "filled compartment" or a "partly filled compartment".

SECTION V—ALTERNATIVE LOADING ARRANGEMENTS FOR EXISTING SHIPS

(A) GENERAL

A ship loaded in accordance with either Sub-Section (B) or Sub Section (C) below shall be considered to have intact stability characteristics at least equivalent to the requirements of Paragraph 4(b).

For the purpose of this Part, the term "Existing Ship" means at ship, the keel of which is laid before the date of coming into force of this Chapter.

(B) STOWAGE OF SPECIALLY SUITABLE SHIPS.

(a) Notwithstanding anything contained in Part B of this Chapter, bulk grain may be carried without regard to the requirements, specified therein in ships which are constructed with two or more vertical or sloping graintight longitudinal divisions suitably disposed to limit the effect of any transverse shift of grain under the following conditions :—

- (i) as many holds and compartments as possible shall be full and trimmed full;
- (ii) for any specified arrangement of stowage the ship will not list to an angle greater than 5 degrees at any stage of the voyage where :

- (1) in holds or compartments which have been trimmed full the grain surface settled 2 per cent by volume from the original surface and shifts to an angle of 12 degrees with that surface under all boundaries of these holds and compartments which have an inclination of less than 30 degrees to the horizontal;

- (2) in "partly filled compartments or holds" free grain surfaces settled and shift as in sub-paragraph (ii) (1) of this paragraph or to such larger angle as may be deemed necessary by the Central Government, and grain surfaces if overstowed in accordance with Para 5 of this appendix shift to an angle of 8 degrees with the original levelled surfaces. For the purpose of sub-paragraph (ii) of this paragraph shifting boards, if fitted, will be considered to limit the transverse shift of the surface of the grain;

- (iii) the master is provided with a grain loading plan covering the stowage arrangements to be adopted and a stability booklet, both approved by the Central Government, showing the stability conditions upon which the calculations given in sub-paragraph (ii) of this paragraph are based.

(b) Central Government shall prescribe the precautions to be taken against shifting in all other conditions of loading of ships designed in accordance with paragraph (B) (a) of this Section which meet the requirements of sub-paragraphs (ii) and (iii) of that paragraph.

(C) SHIPS WITHOUT DOCUMENTS OF AUTHORIZATION

A ship not having on board documents of authorization issued in accordance with Paras 4 and 10 may be permitted to load bulk grain under the requirements of sub-Section (B) above or provided that:

- (a) All "filled compartments" shall be fitted with centreline divisions extending for the full length of such compartments which extend downwards from the underside of the deck or hatch of the maximum breadth of the compartment or 2.4 metres, whichever is the greater except that saucers constructed in accordance with Section II of Part C may be accepted in lieu of a centreline division in and beneath a hatchway.
- (b) All hatches to "filled compartments" shall be closed and covers secured in place.
- (c) All free grain surfaces in "partly filled compartments" shall be trimmed level and secured in accordance with Section II of Part C.
- (d) Throughout the voyage the metacentric height after correction for the free surface effects of liquids in tanks shall be 0.3 metre or that given by the following formula, whichever is the greater:

$$LBVD (0.25 B - 0.645 \sqrt{Vd B})$$

$$GM_R = \frac{SF \times \Delta \times 0.0875}{\text{where :}}$$

where :

L = total combined length of all full compartments;

B = moulded breadth of vessel;

SF = stowage factor;

Vd = calculated average void depth as per paragraph (a)(i) of Section I(A) of this Part;

Δ = displacement

PART C—GRAIN FITTINGS AND SECURING

SECTION I—STRENGTH OF GRAIN FITTINGS

(A) GENERAL

(a) Timber. All timber used for grain fittings shall be of good sound quality and of a type and grade which has been proved to be satisfactory for this purpose. The actual finished dimensions of the timber shall be in accordance with the dimensions hereinafter specified in this Part. Plywood of an exterior type bounded with waterproof glue and fitted so that the direction of the grain in the face plies is perpendicular to the supporting uprights or binder may be used provided that its strength is equivalent to that of solid timber of the appropriate scantlings.

(b) Working Stresses. When calculating the dimensions loaded on one side, using the Tables in paragraphs (C)(a) and (b) of this Part, the following working stresses should be adopted:

For divisions of steel.....2000 kg per square cm

For divisions of wood.....160 kg per square cm

(c) Other Materials. Materials other than wood or steel may be approved for such divisions provided that proper regard has been paid to their mechanical properties.

(d) Uprights

(i) Unless means are provided to prevent the ends of uprights being dislodged from their sockets, the depth of housing at each end of each upright shall be not less than 75 mm. If an upright is not secured at the top, the supermost shore or stay shall be fitted as near thereto as is practicable.

(ii) The arrangements provided for inserting shifting boards by removing a part of the cross-section of an upright shall be such that the local level of stresses is not unduly high.

(iii) The maximum bending moment imposed upon an upright supporting a division loaded on one side shall normally be calculated assuming that the ends of the uprights are freely supported. However, if the Central Government is satisfied that any degree of fixity assumed will be achieved in practice, account may be taken of any reduction in the maximum bending moment arising from any degree of fixity provided at the ends of the upright.

(e) Composite Section. Where uprights, binders or any other strength members are formed by two separate sections, one fitted on each side of a division and inter connected by through bolts at adequate spacing, the effective section modulus shall be taken as the sum of the two moduli of the separate section.

(f) Partial Division. Where divisions do not extend to the full depth of the hold such divisions and their uprights shall be supported or stayed so as to be as efficient as those which do extend to the full depth of the hold.

(B) DIVISIONS LOADED ON BOTH SIDES

(a) Shifting Boards

(i) Shifting boards shall have a thickness of not less than 50 mm and shall be fitted grain-tight and where necessary supported by uprights.

- (ii) The maximum unsupported span for shifting boards of various thickness shall be as follows :

Thickness	Maximum Unsupported Span
50 mm	2.5 metres
60 mm	3.0 "
70 mm	3.5 "
80 mm	4.0 "

If thickness greater than these are provided the maximum unsupported span will vary directly with the increase in thickness.

- (iii) The ends of all shifting of boards shall be securely boused with 75 mm minimum bearing length.

(b) Other Materials. Divisions formed by using materials other than wood shall have a strength equivalent to the shifting boards required in paragraph (B) (a) above.

- (c) Uprights

- (i) Steel uprights used to support divisions loaded on both sides shall have a section modulus given by

$$W = a \times W_1$$

Where :

W = section modulus in cm^3 ;

a = horizontal span between uprights in metres.

The Section modulus per metre span W_1 shall be not less than that given by the formula:

$$W_1 = 14.8 (h_1 - 1.2) \text{ cm}^3 \text{ per metre};$$

Where :

h_1 is the vertical unsupported span in metres and shall be taken as the maximum value of the distance between any two adjacent stays or between the stay or either end of the upright. Where this distance is less than 2.4 metres the respective modulus shall be calculated as if the actual value was 2.4 metres.

- (ii) The moduli of wood uprights shall be determined by multiplying by 12.5 the corresponding moduli for steel uprights. If other materials are used their moduli shall be at least that required for steel increased in proportion to the ratio of the Permissible stresses for steel to that of the material used. In such cases attention shall be paid also to the relative rigidity of each upright to ensure that the deflection is not excessive.

- (iii) The horizontal distance between uprights shall be such that the unsupported spans of the shifting boards do not exceed the maximum span specified in paragraph (B) (a)(ii) of this Section.

- (d) Shores

- (i) Wood shores, when used, shall be in a single piece and shall be securely fixed at each end and heeled against the permanent structure of the ship except that they shall not bear directly against the side plating of the ship.

- (ii) Subject to the provision of sub-paragraphs (iii) and (iv) below, the minimum size of wood shores shall be as follows :—

Length of Shore in metres	Rectangular Section	Diameter of Circular Section
	mm	mm
Not exceeding 3 m	150 × 100	140
Over 3 m but not exceeding 5 m	150 × 150	165
Over 5 m but not exceeding 6 m	150 × 150	180
Over 6 m but not exceeding 7 m	200 × 150	190
Over 7 m but not exceeding 8 m	200 × 150	200
Exceeding 8 m	200 × 150	215

Shores of 7 metres or more in length shall be securely bridged at approximately mid-length.

- (iii) When the horizontal distance between the uprights differs significantly from 4 metres, the moments of inertia of the shores may be changed in direct proportion.

- (iv) Where the angle of the shore to the horizontal exceeds 10 degrees the next larger shore to that required by sub-paragraph (ii) of this paragraph shall be fitted provided that in no case shall the angle between any shore and the horizontal exceed 45 degrees.

(e) Stays. Where stays are used to support divisions loaded on both sides, they shall be fitted horizontally or as near thereto as practicable well secured at each end and formed of steel wire rope. The sizes of the wire rope shall be determined assuming that the divisions and upright which the stay supports are uniformly loaded at 500 kg/m². The working load so assumed in the stay shall not exceed one third of its breaking load.

(C) DIVISIONS LOADED ON ONE SIDE ONLY

- (a) Longitudinal Divisions. The load in kg per metre length of the division shall be taken to be as follows :—

TABLE I*
B(m)

h (m)	2	3	4	5	6	7	8	10
1.5	850	900	1010	1225	1500	1770	2060	2645
2.0	1390	1505	1710	1985	2295	2605	2930	3590
2.5	1985	2160	2430	2740	3090	3435	3800	4535
3.0	2615	2845	3150	3500	3885	4270	4670	5480
3.5	3245	3525	3870	4255	4680	5100	5540	6425
4.0	3890	4210	4590	5015	5475	5935	6410	7370
4.5	4535	4890	5310	5770	6270	6765	7280	8315
5.0	5185	5570	6030	6530	7065	7600	8150	9260
6.0	6475	6935	7470	8045	8655	9265	9890	11150
7.0	7765	8300	8910	9560	10245	10930	11630	13040
8.0	9055	9665	10350	11075	11835	12595	13370	14930
9.0	10345	11030	11790	12590	13425	14260	15110	16820
10.0	11625	12395	13230	14105	15015	15925	16850	18710

h = height of grain in metres from the bottom of the division.**
 B = transverse extent of the bulk grain in metres.

*For the purpose of converting the above loads into British units (ton/ft) 1 kg per metre length shall be taken to be equivalent to 0.0003 ton per foot length.

**Where the distance from a division to a feeder or hatchway is 1 metre or less the height- h shall be taken to the level of the grain within that hatchway or feeder. In all cases the height shall be taken to the overhead deck in way of the division.

For other values of h or B the loads shall be determined by linear interpolation or extrapolation as necessary.

(b) Transverse Divisions. The load in kg per metre length of the divisions shall be taken to be as follows :—

TABLE II*
L(m)

h (m)	2	3	4	5	6	7	8	10	12	14	16
1.5	670	690	730	780	835	890	935	1000	1040	1050	1050
2.0	1040	1100	1170	1245	1325	1400	1470	1575	1640	1660	1660
2.5	1460	1565	1675	1780	1880	1980	2075	2210	2285	2305	2305
3.0	1925	2065	2205	2340	2470	2590	2695	2845	2925	2950	2950
3.5	2425	2605	2770	2930	3075	3205	3320	3480	3570	3595	3595
4.0	2950	3160	3355	3535	3690	3830	3950	4120	4210	4235	4245
4.5	3495	3725	3940	4130	4295	4440	4565	4750	4850	4880	4885
5.0	4050	4305	4535	4735	4910	5060	5190	5385	5490	5525	5530
6.0	5175	5465	5720	5945	6135	6300	6445	6655	6775	6815	6825
7.0	6300	6620	6905	7150	7365	7445	7700	7930	8055	8105	8115
8.0	7425	7780	8060	8590	8685	8950	9200	9340	9395	9410	9410
9.0	8550	8935	9275	9565	9820	9930	10205	10475	10620	10685	10705
10.0	9680	10095	10460	10770	11045	11270	11460	11745	11905	11975	11997

h=height of grain in metres from the bottom of the division**
L=longitudinal extent of the bulk grain in metres.

For other values of h or L the loads shall be determined by linear interpolation or extrapolation as necessary.

*For the purpose of converting the above loads into British units (ton/ft) 1 kg per metre length shall be taken to be equivalent to 0.0003 ton per foot length.

**Where the distance from a division to a feeder or hatchway is 1 metre or less the height-h shall be taken to the level of the grain within that hatchway or feeder. In all cases the height shall be taken to the overhead deck in way of the division.

(c) Vertical Distribution of the Loads. The total load per unit length of divisions shown in the Tables I and II above may, if considered necessary, be assumed to have a trapezoidal distribution with height. In such cases, the reaction loads at the

upper and lower ends of a vertical member or upright are not equal. The reaction loads at the upper end expressed as percentages of the total load supported by the vertical member or upright shall be taken to be those shown in Tables III and IV below :—

TABLE III
Longitudinal Divisions Loaded on the One Side Only
Bearing Reaction at the Upper End of Upright as Percentage of Load (Table I)
B(m)

h (m)	2	3	4	5	6	7	8	10
1.5	43.3	45.1	45.9	46.2	46.2	46.2	46.2	46.2
2.0	44.5	46.7	47.6	47.8	47.8	47.8	47.8	47.8
2.5	45.4	47.6	48.6	48.8	48.8	48.8	48.8	48.8
3.0	46.0	48.3	49.2	49.4	49.4	49.4	49.4	49.4
3.5	46.5	48.8	49.7	49.8	49.8	49.8	49.8	49.8
4.0	47.0	49.1	49.9	50.1	50.1	50.1	50.1	50.1
4.5	47.4	49.4	50.1	50.2	50.2	50.2	50.2	50.2
5.0	47.4	49.4	50.1	50.2	50.2	50.2	50.2	50.2
6.0	47.4	49.5	50.1	50.2	50.2	50.2	50.2	50.2
7.0	47.4	49.5	50.1	50.2	50.2	50.2	50.2	50.2
8.0	47.4	49.5	50.1	50.2	50.2	50.2	50.2	50.2
9.0	47.4	49.5	50.1	50.2	50.2	50.2	50.2	50.2
10.0	47.4	49.5	50.1	50.2	50.2	50.2	50.2	50.2

B = transverse extent of the bulk grain in metres.

For other values of h or B the reaction loads shall be determined by linear interpolation or extrapolation as necessary.

TABLE IV
Transverse Divisions Loaded on the One Side Only
Bearing Reaction at the Upper End of Upright as Percentage of Load (Table II)
L(m)

h (m)	2	3	4	5	6	7	8	10	12	14	16
1.5	37.3	38.7	39.7	40.6	41.4	42.1	42.6	43.6	44.3	44.8	45.0
2.0	39.6	40.6	41.4	42.1	42.7	43.1	43.6	43.3	44.7	45.0	45.2
2.5	41.0	41.8	42.5	43.0	43.5	43.8	44.2	44.7	45.0	45.2	45.3
3.0	42.1	42.8	43.3	43.8	44.2	44.5	44.7	45.0	45.2	45.3	45.3
3.5	42.9	43.5	43.9	44.3	44.6	44.8	45.9	45.2	45.3	45.3	45.3
4.0	43.5	44.0	44.4	44.7	44.9	45.0	45.2	45.4	45.4	45.4	45.4
5	43.9	44.3	44.6	44.8	45.0	45.2	45.3	45.5	45.5	45.5	45.5
6	44.2	44.5	44.8	45.0	45.2	45.3	45.4	45.6	45.6	45.6	45.6
7	44.3	44.6	44.9	45.1	45.3	45.4	45.5	45.6	45.6	45.6	45.6
8	44.3	44.6	44.9	45.1	45.3	45.4	45.5	45.6	45.6	45.6	45.6
9	44.4	44.6	44.9	45.1	45.3	45.4	45.5	45.6	45.6	45.6	45.6
10	44.3	44.6	44.9	45.1	45.3	45.4	45.5	45.6	45.6	45.6	45.6

L=longitudinal extent of the bulk grain, in metres.

For other values of h or L the reaction loads shall be determined by linear interpolation or extrapolation as necessary.

The strength of the end connections of such vertical members of uprights may be calculated on the basis of the maximum load likely to be imposed at either end. These loads are as follows :—

Longitudinal Divisions

Maximum load at the top 50% of the appropriate total load from Table-I.

Maximum load at the bottom 55% of the appropriate total load from Table-I.

Transverse Divisions

Maximum load at the top 45% of the appropriate total load from Table-II.

Maximum load at the bottom 60% of the appropriate total load from Table-II.

The thickness of horizontal wooden boards may also be determined having regard to the vertical distribution of the loading

Represented by Tables III and IV above and in such cases.

$$t = 10a \sqrt{\frac{P \times k}{h \times 213.3}}$$

Where:

- t = thickness of board in mm;
 a = horizontal span of the board i.e. distance between up-rights in metres.
 h = head of grain to the bottom of the division in metres.
 p = total load per unit length derived from Table I or II in kg;
 k = factor dependent upon vertical distribution of the loading.

When the vertical distribution of the loading is assumed to be uniform i.e. rectangular, k shall be taken as equal to 1.0. For a trapezoidal distribution.

$$k = 1.0 + 0.06 (50 - R)$$

Where:

R is the upper and bearing reaction taken from Table III or IV.

(d) Stays or Shores. The sizes of stays and shores shall be so determined that the loads derived from Tables I and II in the preceding paragraphs (a) and (b) shall not exceed one-third of the breaking loads.

(D) SAUCERS

When a saucer is used to reduce the heeling moments in a "filled compartment" its depth measured from the bottom to the saucer to the deck line shall be as follows:—

For ships with a moulded breadth of upto 9.1 metres, not less than 1.2 metres.

For ships with a moulded breadth of 18.3 metres or more, not less than 1.8 metres.

For ships with a moulded breadth between 9.1 metres and 18.3 metres, the minimum depth of the saucer shall be calculated by interpolation.

The top (mouth) of the saucer shall be formed by the under-deck structure in the way of the hatchway, i.e. hatchside girders or coamings and hatch-end beams. The saucer and hatchway above shall be completely filled with bagged grain or other suitable cargo laid down on a separation cloth or its equivalent and stowed tightly against adjacent structures and the port-table hatchway beams if the latter are in place.

(E) BUNDLING OF BULK

As an alternative to filling the saucer with bagged grain or suitable cargo a bundle of bulk grain may be used provided that:

- The saucer is lined with a material acceptable to the Central Government having a tensile strength of not less than 274 kg per 5 cm strip and which is provided with suitable means for securing at the top.
- As an alternative to paragraph (a) above a material acceptable to the Central Government having a tensile strength of not less than 137 kg per 5 cm strip may be used if the saucer is constructed as follows:—

Athwartship lashings shall be placed inside the saucer formed in the bulk grain at intervals of not more than 2.4 metres. These lashings shall be of sufficient

length to permit being drawn up light secured at the top of the saucer.

Dunnage not less than 25 mm in thickness or other suitable material of equal strength and between 150 to 300 mm in width shall be placed fore and aft over these lashings to prevent the cutting or chafing of the material which shall be placed thereon to line the saucer.

- The saucer shall be filled with bulk grain and secured at the top except that when using material approved under paragraph (h) above further dunnage shall be laid on top after tapping the material before the saucer is secured by setting up the lashings.
- If more than one sheet of material is used to line the saucer they shall be joined at the bottom either by sewing or a double lap.
- The top of the saucer shall be coincidental with the bottom of the beams when these are in place and suitable general cargo or bulk grain may be placed between the beams on top of the saucer.

(F) SECURING HATCH COVERS OF FILLED COMPARTMENTS

If there is no bulk grain or other cargo above a "filled compartment" the hatch covers shall be secured in an approved manner having regard to the weight and permanent arrangements provided for securing such covers.

The documents of authorisation issued under Para 10 shall include reference to the manner of securing considered necessary by the Central Government.

SECTION II—SECURING OF PARTLY FILLED COMPARTMENT

(A) STRAPPING OR LASHING

(a) When, in order to eliminate heeling moments in "partly filled compartments", strapping or lashing is utilized, the securing shall be accomplished as follows:—

- The grain shall be trimmed and levelled to the extent that it is very slightly crowned and covered with burlap separation cloths, tarpaulins or the equivalent.
- The separation cloths and/or tarpaulins shall overlap at least 1.8 metres.
- The solid floors of rough 25 mm by 150 mm to 300 mm lumber shall be laid with the top floor running longitudinally and nailed to an athwartships bottom floor. Alternatively, one solid floor of 50 mm lumber, running longitudinally, and nailed over the top of a 50 mm bottom bearer not less than 150 mm wide, may be used. The bottom bearers shall extend the full breadth of the compartment and shall be spaced not more than 2.4 metres, apart. Arrangements utilizing other materials and deemed to be equivalent to the foregoing may be accepted.

- Steel wire rope (19 mm diameter or equivalent), doubled steel strapping (50 mm × 1.3 mm and having a breaking load of at least 5000 kg), or chain of equivalent strength, each of which shall be set tight by means of a 32 mm turnbuckle, may be used for lashings. A which tightener, used in conjunction with a locking arm, may be substituted for the 32 mm turnbuckle when steel strapping is used, provided suitable wrenches are available for setting up as necessary. When steel strapping is used, not less than three crimp seals shall be used for securing the ends. When wire is used, not less

than four clips shall be used for forming eyes in the lashings.

- (v) Prior to the completion of loading the lashing shall be positively attached to the framing at a point approximately 450 mm below the anticipated final grain surface by means of either a 25 mm shackle or beam clamp of equivalent strength.

- (vi) The lashings shall be spaced not more than 2.4 metres apart and each shall be supported by a bearer nailed over the top of the fore and aft floor. This bearer shall consist of not less than 25 mm by 150 mm lumber or its equivalent and shall extend the full breadth of the compartment.

- (vii) During the voyage the strapping shall be regularly inspected and set up where necessary.

(B) Overstowing Arrangements

Where bagged grain or other suitable cargo is utilised for the purpose of securing "partly filled compartments" the free grain surface shall be covered with a separation cloth or equivalent or by a suitable platform. Such platforms shall consist of bearers spaced not more than 1.2 metres apart and 25 mm boards laid there on spaced not more than 100 mm apart. Platforms may be constructed of other materials provided they are deemed to be equivalent.

(C) BAGGED GRAIN

Bagged grain shall be carried in sound bags which shall be well filled and securely closed.

[No. 5-MSR(18)/74-MA]

S.V. BHAVE, Director General

नई दिल्ली, 20 जून, 1977

कांशा० 2252.—नौवहन विकास निधि समिति (सामान्य) नियम 1960 के नियम (4) के साथ पठित व्यापार पोत अधिनियम, 1958 (1958 का 44) की धारा 15 की उपधारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए केन्द्रीय सरकार एतद्वारा श्री पी०जी० गवार्डे, नौवहन महानिदेशक, बम्बई को श्री एस०वी० भावे के स्थान पर 14 जून, 1977 से नौवहन विकास निधि समिति का अध्यक्ष नियुक्त करती है और भारत सरकार के भूतपूर्व परिवहन और संचार मंत्रालय (परिवहन विभाग-परिवहन पक्ष) की अधिसूचना सं० सांशा० 628, दिनांक 17 मार्च, 1959 में निम्नलिखित संशोधन करती है, अर्थात् :—

उक्त अधिसूचना में क्रम सं० 7 तथा तत्संबंधी प्रविष्टियों के स्थान पर निम्नलिखित प्रतिस्थापित किया जाए, अर्थात् :—

"7. श्री पी० जी० गवार्डे,

नौवहन महानिदेशक, 14 जून, 1977
बम्बई।"

[सं० एम एस डी (19)/77-एमडी]

बी० के० जुझी, निदेशक

New Delhi, the 20th June, 1977

S.O. 2252.—In exercise of the powers conferred by sub-section (1) of Section 15 of the Merchant Shipping Act, 1958 (44 of 1958), read with rule 4 of the Shipping Development Fund Committee (General) Rules, 1960, the Central Government hereby appoints Shri P.G. Gavai, Director General of Shipping Bombay, as a member of the Shipping Development Fund Committee with effect from 14th June 1977 vice Shri S. V. Bhawe and makes the following amendment in the Notification of the Government of India in the late Ministry

of Transport and Communications (Department of Transport—Transport Wing) No. S.O. 628 dated the 17th March 1959, namely :—

In the said Notification, for serial number 7 and the entries relating thereto, the following shall be substituted, namely :—

"7. Shri P. G. Gavai, Director General of Shipping, Bombay."

14th June, 1977.

[No. MSD/19/77-MD]

B. K. ZUTSHI, Director.

नई दिल्ली, 22 जून, 1977

(व्यापार पोत)

कांशा० 2253.—व्यापार पोत अधिनियम, 1958 (1958 का 44) की धारा 7 की उपधारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए केन्द्रीय सरकार एतद्वारा श्री एस०वी० भावे, आई०ए०एस० के स्थान पर श्री पी०जी० गवार्डे, आई०ए०एस० को 14 जून, 1977 के पश्चात् से बम्बई में नौवहन महानिदेशक नियुक्त करती है।

[सं० 1-एम डी एस (45)/77-एमएस]

New Delhi, the 22nd June, 1977

(Merchant Shipping)

S.O. 2253.—In exercise of the powers conferred by sub-section (1) of section 7 of the Merchant Shipping Act, 1958 (44 of 1958), the Central Government hereby appoints with effect from the fore-noon of the 14th June, 1977, Shri P.G. Gavai, I.A.S. as Director General of Shipping, Bombay vice Shri S. V. Bhawe, I.A.S.

[No. 1-MDS(45)/77-MA]

नई दिल्ली, 23 जून, 1977

कांशा० 2254.—नाविक भविष्य निधि योजना, 1966 के पैरा 4 के साथ पठित नाविक भविष्य निधि अधिनियम, 1966 (1966 का 4) की उपधारा 3 के अनुसरण में तथा नौवहन और परिवहन मंत्रालय (परिवहन पक्ष), भारत सरकार की अधिसूचना सं० कां० शां० 1521 दिनांक 30-4-1977 के क्रम में केन्द्रीय सरकार एतद्वारा निवेश देती है कि भविष्य निधि अंशदान, ब्याज तथा अन्य प्राप्तियों की आय, आवश्यक खर्चें घटाने के बाद, का निवेश निम्नलिखित नमूने के अनुसार होगा, अर्थात् :—

- (1) केन्द्रीय सरकार द्वारा सृजित तथा निर्गत 25 प्रतिशत से कम नहीं। लोक ऋण अधिनियम, 1944 (1944 का 18) की धारा 2 के खंड (2) में यथा परिभाषित सरकारी प्रतिभूतियां।
- (2) किसी राज्य सरकार द्वारा सृजित तथा 25 प्रतिशत से कम नहीं। निर्गत ऋण अधिनियम, 1944 (1944 का 18) की धारा 2 के खंड (2) में यथा परिभाषित सरकारी प्रतिभूतियां।
- (3) अन्य हस्तांतरणीय प्रतिभूतियां अथवा 25 प्रतिशत से कम नहीं। बंधपत्र जिनके मूलधन और उन पर व्याज की बिना शर्त पूरी गारंटी केन्द्रीय सरकार अथवा किसी राज्य सरकार द्वारा हो गई हो।
- (4) 7 वर्षीय राष्ट्रीय बचत प्रमाणपत्र (द्वितीय 30 प्रतिशत से अधिक नहीं। तथा तृतीय निर्गमन) अथवा डाकघर नाविक जमा।

(V) भारत सरकार के वित्त मंत्रालय (आर्थिक 20 प्रतिशत से अधिक नहीं कार्य विभाग) की अधिसूचना सं० एफ०-16(1)-पी डी /75 दिनांक 30-6-75 द्वारा चालू की गई विशेष जमा योजना।

उपर्युक्त व्यवस्था 1 जुलाई, 1977 से श्रौर आदेश होने तक के लिए लागू रहेगी। इस अवधि के दौरान परिपक्व होने वाली डाकघर सावधिक जमा का पुनर्निवेश 50 प्रतिशत डाकघर सावधिक जमा में और 50 प्रतिशत विशेष जमा में किया जाएगा। इसके अधीन, भविष्य निधि संघ की अन्य सभी परिपक्व राशियों का पुनर्निवेश किया जाता रहेगा।

[सं० एस डब्ल्यूएस (20)/77-एसआर]

New Delhi, the 23rd June, 1977

S. O. 2254—In pursuance of sub-section (3) of Section 4 of the Seamen's Provident Fund Act, 1966 (4 of 1966), read with paragraph 44 of the Seamen's Provident Fund Scheme, 1966, and in continuation of the notification of the Government of India, in the Ministry of Shipping and Transport (Transport Wing) No. S.O. 1521 dated 30-4-1977, the Central Government hereby directs that accumulations out of provident fund contributions, interest and other receipts as reduced by obligatory out goings, shall be invested in accordance with the following pattern, namely:—

- | | |
|--|---------------------|
| (i) Government securities as defined in clause (2) of section 2 of the Public Debt Act, 1944 (18 of 1944) created and issued by the Central Government. | Not less than 25% |
| (ii) Government securities as defined in clause (2) of section 2 of the Public Debt Act, 1944 (18 of 1944) created and issued by any State Government | Not less than 25% |
| (iii) Any other negotiable securities or bonds, the principal where of and interest whereon is fully and unconditionally guaranteed by the Central Government or any State Govt. | |
| (iv) 7-Year National Saving Certificates (Second Issue and Third Issue) or Post Office Time Deposits. | Not exceed- ing 30% |
| (v) Special Deposit Scheme introduced by the notification of the Govt. of India in the Ministry of Finance (Deptt. of Economic Affairs) No. F. 16(1)-PD/75, dated 30-6-1975. | Not exceed- ing 20% |

2. The above pattern will be in force from the 1st July, 1977 until further orders. Re-investment of Post Office Time Deposit maturing during this period shall be made 50% in Post Office Time Deposits and 50% in Special Deposits. Subject to this, re-investment of all other maturities of Provident Fund accumulations shall continue to be made in accordance with the pattern mentioned in paragraph 1 above.

[No. MWS (20)/77-M]

(व्यापार नौवहन)

क्रा० 2255.—व्यापार पोत परिवहन अधिनियम, 1958 (1958 का 44) की धारा 358 की उपधारा (2) के अनुसरण में, केन्द्रीय सरकार भारत सरकार के भूतपूर्व वाणिज्य विभाग की अधिसूचना सं० 70-एम 1(30)/29, तारीख 18-11-1933 में, जो उन अधिकारियों की नियुक्तियों के सम्बन्ध में है, जिन्हें नौवहन दुर्घटनाओं की सूचना दी जानी चाहिए, निम्नलिखित और संशोधन करती है, अर्थात् :—

उन अधिसूचना के साथ उपाबद्ध अनुसूची में—

(क) तुतीकोरिन पत्तन के मामले, शीर्षक "अधिकारी" और "दुर्घटनाएं" के अन्तर्गत वर्तमान प्रविष्टियों के स्थान पर क्रमशः निम्नलिखित प्रविष्टियाँ रखी जाएंगी, अर्थात् :—

तुतीकोरिन "(1) नव तुतीकोरिन वे दुर्घटनाएं जिनका प्रभाव केवल पत्तन के उप संरक्षक निम्नलिखित पर पड़ता है—

- (क) नव तुतीकोरिन पत्तन के डाक अथवा मूरिंग में खड़े जहाज।
- (ख) दुर्घटना के समय नव तुतीकोरिन पत्तन के नियोजन में कार्यरत बन्दरगाह मास्टर अथवा पायलट के प्रभाराधीन जहाज।
- (ग) नव तुतीकोरिन पत्तन के जहाज।

(2) पत्तन अधिकारी, उपरोक्त दुर्घटनाओं को छोड़ शेष सभी दुर्घटनाएं।

(ख) मंगलौर पत्तन के मामले, शीर्षक "अधिकारी" और "दुर्घटनाएं" के अन्तर्गत वर्तमान प्रविष्टियों के स्थान पर क्रमशः निम्नलिखित प्रविष्टियाँ रखी जाएंगी, अर्थात् :—

मंगलौर "(1) नव मंगलौर पत्तन वे दुर्घटनाएं जिनका प्रभाव केवल के उपसंरक्षक निम्नलिखित पर पड़ता है—

- (क) नव मंगलौर पत्तन के डाक अथवा मूरिंग में खड़े जहाज।
- (ख) दुर्घटना के समय नव मंगलौर पत्तन के नियोजन में कार्यरत बन्दरगाह मास्टर अथवा पायलट के प्रभाराधीन जहाज,
- (ग) नव मंगलौर पत्तन के जहाज।

(2) पत्तन अधिकारी, उपरोक्त दुर्घटनाओं को छोड़ मंगलौर शेष सभी दुर्घटनाएं।

(ग) अन्त में निम्नलिखित प्रविष्टि रखी जाएंगी, अर्थात् :—

"पारादीप—पारादीप पत्तन के उपसंरक्षक सभी दुर्घटनाएं

[सं० 12 एम ए ओ/95)/74 एम ए]

उमाशंकर कौशिक, अव्वर सचिव

(Merchant Shipping)

S. O. 2255.—In pursuance of sub-section (2) of Section 358 of the Merchant Shipping Act, 1958 (44 of 1958), the Central Government hereby makes the following further amendments in the notification of the Government of India in the late Department of Commerce No. 70-M. I (30)/29, dated the 18th November, 1933, relating to the appointment of officers to whom notice of the shipping casualties should be given, namely :—

In the Schedule annexed to the said notification,—

(a) for the existing entries under the headings "Officers" and "Casualties" against the port of Tuticorin, the following entries shall respectively be substituted, namely:—

TUTICORIN "(1) The Deputy Conservator of the New Tuticorin Port.

(b) ships in charge, at the time of the casualty, of Harbour Masters or Pilots in the employ of the New Tuticorin Port.

(c) ships belonging to the New Tuticorin Port.

(2) The Port Officer Tuticorin. All casualties other than those mentioned above."

(b) for the existing entries under the headings "Officers" and "Casualties" against the port of Mangalore, the following entries shall respectively be substituted, namely:—

MANGA-LORE "(1) The Deputy Conservator of the New Mangalore Port.

(b) ships in charge, at the time of casualty, of Harbour Masters or Pilots in the employ of the New Mangalore Port.

(c) ships belonging to the New Mangalore Port.

(2) The Port Officer, Mangalore. All casualties other than those mentioned above."

(c) the following entries shall be inserted at the end, namely:—

"PARADIP The Deputy Conservator Paradip Port. All casualties."

[No. 12-MAO (95)/74-MA]

U. S. KAUSHIK, Under Secy.

निर्माण और आवास मंत्रालय

(निर्माण प्रबंध)

नई दिल्ली, 22 जून, 1977

क्र० प्रा० 2256.—केन्द्रीय सरकार, राजघाट समाधि अधिनियम, 1951 (1951 का 41) की धारा 4 की उपधारा (1) के खण्ड (ख) और उपधारा (2) द्वारा प्रवृत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, श्री डी० आर० कोहली उपराज्यपाल दिल्ली, का राजघाट समाधि समिति का शासकीय सदस्य नामनिर्देशित करती है और उन्हें श्री कृष्णचन्द के स्थान पर उक्त समिति का अध्यक्ष भी नियुक्त करती है, और भारत सरकार के भूतपूर्व निर्माण, आवास और पूर्ति मंत्रालय की अधिसूचना सं० 19/2/62-डब्ल्यू०आई०, तारीख 22 अगस्त, 1962 में निम्नलिखित और संशोधन करती है, अर्थात्:—

उक्त अधिसूचना में प्रविष्टि "श्री कृष्णचन्द" के स्थान पर, दो स्थानों पर जहाँ वह आई है, प्रविष्टि "श्री डी० आर० कोहली" रखी जाएगी।

[सं० 25012(3)/72-डब्ल्यू-3]

मेहर सिंह, उप सचिव

MINISTRY OF WORKS AND HOUSING

(Works Division)

New Delhi, the 22nd June, 1977

S.O. 2256.—In exercise of the powers conferred by clause (b) of sub-section (1) and sub-section (2) of section 4 of the Rajghat Samadhi Act, 1951 (41 of 1951), the Central Government hereby nominates Shri D. R. Kohli, I.t. Governor of Delhi, to be an official member of the Rajghat Samadhi Committee and also appoints him as the Chairman of the said Committee vice Shri Krishan Chand, and hereby makes the following further amendment in the notification of the Government of India in the late Ministry of Works, Housing and Supply No. 19/2/62-W1 dated the 22nd August, 1962, namely:—

In the said notification, for the entry "Shri Krishan Chand" at the two places where it occurs, the entry "Shri D. R. Kohli" shall be substituted.

[No. 25012(3)/72-WIII]

MEHAR SINGH, Dy. Secy.

दिल्ली विकास प्राधिकरण

नई दिल्ली, 2 जुलाई, 1977

क्र० प्रा० 2257.—एतद्वारा संकल्प सं० 60 दिनांक 21-2-70 के संशोधन एवं संकल्प सं० 153 दिनांक 26-5-77 के अनुसरण में दिल्ली विकास प्राधिकरण द्वारा 5ए की उपधारा (1) जिसे दिल्ली डब्ल्यूमेंट ऐक्ट, 1957 की धारा 52 की उपधारा (1) के साथ पढ़ा जाए, के अन्तर्गत प्रवृत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए आवास एवं सम्बन्धित योजनाओं के परिपालन हेतु एक कमेटी जिसका नाम आवास कमेटी होगा, गठन करती है, तथा जिसके सदस्यों के चयन का अधिकार अध्यक्ष, दिल्ली विकास प्राधिकरण को प्रदान करती है।

2. उक्त प्रवृत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए अध्यक्ष, दिल्ली विकास प्राधिकरण आवास कमेटी का निम्न रूप से पुनर्गठन करते हैं:—

1. अध्यक्ष, दिल्ली विकास प्राधिकरण . . . अध्यक्ष, आवास कमेटी
2. उपाध्यक्ष, दिल्ली विकास प्राधिकरण . . . सदस्य
3. संयुक्त सचिव (यू०डी०) निर्माण एवं आवास सचय मंत्रालय . . . सदस्य
4. अभियन्ता सदस्य . . . सदस्य
5. वित्त सदस्य . . . सदस्य
6. योजना सदस्य . . . सदस्य
7. आयुक्त, दिल्ली नगर निगम . . . सदस्य
8. महाप्रबंधक, दिल्ली विद्युत प्रदाय संस्थान . . . सदस्य
9. अध्यक्ष, दिल्ली परिवहन निगम . . . सदस्य
10. आयुक्त, आवास/ग्रन्थ सम्बन्धित अधिकारी सचय-सचिव जिसके अधीन दिल्ली विकास प्राधिकरण में आवास कार्य हो रहा है।

[सं० पी०ए०/डी०सी०/77/541]

पी० के० बी० सिंह, सचिव

DELHI DEVELOPMENT AUTHORITY

New Delhi, the 2nd July, 1977

S.O. 2257.—In modification of Resolution No. 60, dated 21-2-70 and pursuant to Resolution No. 153, dated 26-5-77 and in exercise of the powers conferred under sub-section (1) of Section 5-A read with sub-section (1) of Section 52 of the Delhi Development Act, 1957, the Delhi Development Authority constitutes a Committee known as Housing Committee for implementing housing and allied schemes and delegates the powers to name its members to the Chairman, DDA.

2. In exercise of the powers conferred on him, the Chairman, DDA, reconstitutes the Housing Committee as under :—

- | | |
|---|-----------------------------|
| (1) Chairman, DDA | Chairman, Housing Committee |
| (2) Vice-Chairman, DDA | Member. |
| (3) Joint Secretary (UD),
Ministry of Works & Housing. | " |
| (4) Engineer Member | " |
| (5) Finance Member | " |
| (6) Planning Member | " |
| (7) Commissioner, MCD | " |
| (8) General Manager, DESU | " |
| (9) Chairman, DTC | " |
| (10) Commissioner Housing Member-Secretary, or such
other officer concerned looking after the housing
works in the DDA. | |

[No. F. PA/VC/77/541]

P. K. B. SINGH, Secy.

पूति और पुनर्वास मंत्रालय

(पुनर्वास विभाग)

(सेटलमेंट विंग)

नई दिल्ली, 4 जून, 1977

कां.प्रा. 2258.—विस्थापित व्यक्ति (प्रतिकर तथा पुनर्वास) अधिनियम 1954 (1954 का 44) की धारा 3 की उपधारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए केन्द्रीय सरकार इसके द्वारा पुनर्वास विभाग में कार्य कर रहे बंदोबस्त अधिकारी श्री सरदारी लाल को उक्त अधिनियम द्वारा या उसके अधीन प्रबंध अधिकारी को सौंपे गए कार्यों को निष्पादित करने के लिए प्रबंध अधिकारी के रूप में नियुक्त करती है।

[सं.ए.०-36016(1)/75-प्रशासन (राज.०)/ए.जी.०.जेड/सैविंग]

एच.के. टेकचन्दानी, प्रवर सचिव

MINISTRY OF SUPPLY & REHABILITATION

(Department of Rehabilitation)

(SETTLEMENT WING)

New Delhi, the 4th June, 1977

S.O. 2258.—In exercise of the powers conferred by Sub-Section (1) of Section 3 of the Displaced Persons (Compensation and Rehabilitation) Act, 1954 (No. 44 of 1954) the Central Government hereby appoints Shri Sardari Lal, Settlement Officer in the Department of Rehabilitation as Managing Officer for the purpose of performing the functions assigned to such officers by or under the said Act.

[No. A. 36016(1)/75-Ad(GZ)/AGZ/SW]

H. K. TECKCHANDANI, Under Secy.

भ्रम मंत्रालय

नई दिल्ली, 20 जून, 1977

कां.प्रा. 2259.—केन्द्रीय सरकार ने, यह समाधान हो जाने पर कि लोकहित में ऐसा करना अपेक्षित था, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 (1947 का 14) की धारा 2 के खण्ड (ड) के उप-खण्ड (6) के उपबन्धों के अनुसरण में, भारत सरकार के भ्रम मंत्रालय की अधिसूचना संख्या कां.प्रा. 4863, सारीख 7 दिसम्बर, 1976 द्वारा दिल्ली बुद्ध योजना के अधीन बुद्ध प्रवाय उद्योग को उक्त अधिनियम के प्रयोजनों के लिए 22 दिसम्बर, 1976 से छः मास की कालावधि के लिए लोक उपयोगी सेवा घोषित किया था;

और केन्द्रीय सरकार की राय है कि लोकहित में उक्त कालावधि को छः मास की और कालावधि के लिए बढ़ाया जाना अपेक्षित है;

अतः, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 (1947 का 14) की धारा 2 के खण्ड (ड) के उपखण्ड (6) के परन्तुक द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार उक्त उद्योग को उक्त अधिनियम के प्रयोजनों के लिए 22 जून, 1977 से छः मास की और कालावधि के लिए लोक उपयोगी सेवा घोषित करती है।

[सं.एम. 11017/11/77-डी 1 (ए.)]

MINISTRY OF LABOUR

New Delhi, the 20th June, 1977

S.O. 2259.—Whereas, the Central Government, having been satisfied that the public interest so required, had in pursuance of the provisions of sub-clause (vi) of clause (n) of section 2 of the Industrial Disputes Act, 1947 (14 of 1947), declared by the notification of the Government of India in the Ministry of Labour No. S.O. 4863 dated the 7th December, 1976, the industry for the supply of milk under the Delhi Milk Scheme to be a public utility service for the purposes of the said Act for a period of six months from the 22nd December, 1976;

And whereas, the Central Government is of opinion that public interest requires the extension of the said period by a further period of six months.

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by the proviso to sub-clause (vi) of clause (n) of section 2 of the Industrial Disputes Act, 1947 (14 of 1947), the Central Government hereby declares the said industry to be a public utility service for the purposes of the said Act, for a further period of six months from the 22nd June, 1977.

[No. S. 11017/11/77/DI(A)]

नई दिल्ली, 30 जून, 1977

कां.प्रा. 2260.—यतः भारत सरकार के भ्रम मंत्रालय की अधिसूचना संख्या कां.प्रा. 216 (ई) दिनांक 19 मार्च, 1976 द्वारा केन्द्रीय सरकार ने रिजर्व बैंक इंडिया में नियोजन को एक एमि नियोजन के रूप में घोषित कर दिया था जिस पर भारतीय सुरक्षा और आन्तरिक सुरक्षा नियम, 1971, का नियम 119 लागू होता है;

और यतः केन्द्रीय सरकार का विचार है कि उक्त अधिसूचना को और प्रागे जारी रखना आवश्यक नहीं है;

अतः, अब, उक्त नियम 119 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए केन्द्रीय सरकार एतद्वारा पूर्वोक्त अधिसूचना को निर्रिक्त करती है।

[संख्या एम-42012/1/77-डी-1(ए.)]

New Delhi, the 30th June, 1977

S.O. 2260.—Whereas by the notification of the Government of India in the Ministry of Labour No. S.O. 216(E) dated the 19th March, 1976, the Central Government had declared any employment in the Reserve Bank of India as an employment to which rule 119 of the Defence and Internal Security of India Rules, 1971; applies;

And whereas the Central Government is of opinion that it is no more necessary to continue the said notification in force;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by the said rule 119, the Central Government hereby rescinds the aforesaid notification.

[No. S. 42012/1/77/DI(A)]

आदेश

नई दिल्ली, 30 जून, 1977

कां०आ० 2261.—यतः भारत सरकार के श्रम मंत्रालय के आदेश सख्या का० आ० 688 (ई) दिनांक 21 अक्टूबर, 1976 द्वारा केन्द्रीय सरकार ने बम्बई स्थित पत्तन और गोदियों में नियोजन को एक ऐसे नियोजन के रूप में घोषित कर दिया था जिस पर भारतीय रक्षा और आन्तरिक सुरक्षा नियम, 1971 का नियम 119 लागू होता है ;

और यतः केन्द्रीय सरकार का विचार है कि उक्त आदेश को और आगे जारी रखना आवश्यक नहीं है ;

अतः, अब, उक्त नियम 119 द्वारा प्रवृत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार एतद्वारा पूर्वोक्त आदेश को विखण्डित करती है।

[संख्या एस० 42025/3/77-डी-1(ए)(i)]

ORDER

New Delhi, 30th June, 1977

S.O. 2261.—Whereas by the order of the Government of India in the Ministry of Labour No. S.O. 688(E) dated the 21st October, 1976, the Central Government had declared any employment in Port and Docks at Bombay as an employment to which rule 119 of the Defence and Internal Security of India Rules, 1971, applies ;

And whereas the Central Government is of opinion it is no more necessary to continue the said order in force.

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by the said rule 119, the Central Government hereby rescinds the aforesaid order.

[No. S. 42025/3/77/DI(A)(i)]

आदेश

कां०आ० 2262.—यतः भारत सरकार के श्रम मंत्रालय के आदेश सख्या कां० आ० 714(ई) दिनांक 5 नवम्बर, 1976 द्वारा केन्द्रीय सरकार ने गोवा शिपयार्ड लिमिटेड, वास्को-डि-गामा, गोवा में नियोजन को एक ऐसे नियोजन के रूप में घोषित कर दिया था जिस पर भारतीय रक्षा और आन्तरिक सुरक्षा नियम, 1971 का नियम 119 लागू होता है ;

और यतः केन्द्रीय सरकार का विचार है कि उक्त आदेश को और आगे जारी रखना आवश्यक नहीं है,

अतः, अब, उक्त नियम 119 द्वारा प्रवृत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार एतद्वारा पूर्वोक्त आदेश को विखण्डित करती है।

[संख्या एस० 42025/3/77-डी-1(ए)(ii)]

एस० के० नारायणन, डेस्क अधिकारी

ORDER

S.O. 2262.—Whereas by the Order of the Government of India in the Ministry of Labour No. S.O. 714(E) dated the 5th November 1976, the Central Government had declared any employment in Goa Shipyard Limited, Vasco-Da-Gama, Goa, as an employment to which rule 119 of the Defence and Internal Security of India Rules, 1971, applies ;

And whereas the Central Government is of opinion it is no more necessary to continue the said order in force;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by the said rule 119, the Central Government hereby rescinds the aforesaid order.

[No. S. 42025/3/77/DI(A)(ii)]

L. K. NARAYANAN, Desk Officer

नई दिल्ली, 21 जून, 1977

कां०आ० 2263.—केन्द्रीय सरकार, कर्मचारी भविष्य निधि स्कीम, 1952 के पैरा 4 के उपपैरा (1) के खण्ड (ग) के अनुसरण में, जेसिको मेटल वेयर फैक्टरी, पाण्टा साहिब, हिमाचल प्रदेश के प्रबंध निदेशक, श्री पी० एम० गंग का, हिमाचल प्रदेश राज्य के लिए गठित प्रादेशिक समिति के सदस्य के रूप में नियुक्त करती है और भारत सरकार के

श्रम मंत्रालय की अधिसूचना सं० एस० ओ० 4441, तारीख 2 नवम्बर, 1976 में निम्नलिखित और संशोधन करती है, अर्थात् :—

उक्त अधिसूचना में, क्रम सं० 5 के सामने की प्रविष्टियों में, "श्री के० जी० खन्ना, वित्त निदेशक, मोहन मीकंस ब्रेवरीज लिमिटेड, सोलन, हिमाचल प्रदेश" के स्थान पर निम्नलिखित रखा जाएगा, अर्थात् :—

"श्री पी० एम० गंग, प्रबंध निदेशक, जेसिको मेटल वेयर फैक्टरी, पाण्टा साहिब, हिमाचल प्रदेश"।

[सं० बी०-20012/1/77-पी० एफ० 2]

New Delhi, the 21st June, 1977

S.O. 2263.—In pursuance of clause (c) of sub-paragraph (1) of paragraph 4 of the Employees' Provident Funds Scheme, 1952, the Central Government hereby appoints Shri P. S. Garg, Managing Director, Jesico Metalware Factory, Paonta Sahib, Himachal Pradesh as a member of the Regional Committee set up for the State of Himachal Pradesh and makes the following further amendment in the notification of the Government of India in the Ministry of Labour No. S.O. 4441, dated the 2nd November, 1976, namely :—

In the said notification, in the entries against serial number 5, for "Shri K. G. Khanna, Director Finance, Mohan Meaking Breweries Limited, Solan, Himachal Pradesh", the following shall be substituted, namely :—

"Shri P. S. Garg, Managing Director, The Jesico Metalware Factory, Paonta Sahib, Himachal Pradesh".

[No. V. 20012/1/71-PF. II]

नई दिल्ली, 24 जून, 1977

कां०आ० 2264.—तमिलनाडु राज्य सरकार ने कर्मचारी राज्य बीमा अधिनियम, 1948 (1948 का 34) की धारा 4 के खण्ड (घ) के अनुसरण में श्री टी० वी० एन्टोनी के स्थान पर श्री सी० रामाचन्द्रन, सचिव, तमिलनाडु सरकार, मद्रास का कर्मचारी राज्य बीमा निगम में उस राज्य का प्रतिनिधित्व करने के लिए नामनिर्दिष्ट किया है;

अतः, अब, केन्द्रीय सरकार कर्मचारी राज्य बीमा अधिनियम, 1948 (1948 का 34) की धारा 4 के अनुसरण में, भारत सरकार के श्रम मंत्रालय की अधिसूचना संख्या कां०आ० 1517 तारीख 14 अप्रैल, 1976 में निम्नलिखित संशोधन करती है, अर्थात् :—

उक्त अधिसूचना में, "(राज्य सरकारों द्वारा धारा 4 के खण्ड (घ) के अधीन नामनिर्दिष्ट)" शीर्षक के नीचे क्रमांक 24 के सामने की प्रविष्टि के स्थान पर, निम्नलिखित प्रविष्टि रखी जाएगी, अर्थात् :—

"श्री सी० रामाचन्द्रन,
सचिव, तमिलनाडु सरकार,
श्रम और रोजगार विभाग,
मद्रास।"

[संख्या यू-16012(2)/77-एच० आई०]

New Delhi, the 24th June, 1977

S.O. 2264.—Whereas the State Government of Tamil Nadu has, in pursuance of clause (d) of section 4 of the Employees' State Insurance Act, 1948 (34 of 1948) nominated Shri C. Ramachandran, Secretary to the Government of Tamil Nadu, Madras, to represent that State on the Employees' State Insurance Corporation, in place of Shri T. V. Antony;

Now, therefore, in pursuance of section 4 of the Employees' State Insurance Act, 1948 (34 of 1948), the Central

Government hereby makes the following amendment in the notification of the Government of India in the Ministry of Labour No. S.O. 1517, dated the 14th April, 1976, namely:—

In the said notification, under the heading "(Nominated by the State Governments under clause (d) of section 4)", for the entry against serial number 24, the following entry shall be substituted, namely :—

"Shri C. Ramachandran,
Secretary to the Government of Tamil Nadu,
Labour and Employment Department, Madras".

[No. U-16012/2/77-HI]

नई दिल्ली, 25 जून, 1977

कां० प्रा० 2265.—केन्द्रीय सरकार ने, कर्मचारी भविष्य निधि और प्रकीर्ण उपबन्ध अधिनियम, 1952 (1952 का 9) की धारा 17 की उपधारा (1) के खण्ड (क) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, भारत सरकार के भूतपूर्व श्रम, रोजगार और पुनर्वासि मंत्रालय (श्रम और रोजगार विभाग) की अधिसूचना सं० कां० प्रा० 3056, तारीख 25 अगस्त, 1967 द्वारा, उक्त अधिसूचना की अनुसूची में निर्दिष्ट शर्तों के अधीन रहते हुए, मैसर्स थोमस कुक एण्ड सन्स (कान्टीनेंटल एण्ड ओवरसीज) लिमिटेड को कर्मचारी भविष्य निधि स्कीम, 1952 के सभी उपबन्धों के प्रवर्तन से छूट दे दी है;

और पूर्वोक्त "मैसर्स थोमस कुक एण्ड सन्स (कान्टीनेंटल एण्ड ओवरसीज) लिमिटेड" ने अपने स्थापन का नाम 2 दिसम्बर, 1974 से "मैसर्स थोमस कुक ओवरसीज लिमिटेड" परिवर्तित कर दिया है;

अतः, अब, केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम की धारा 17 की उपधारा (1) के उपबन्धों का प्रयोग करते हुए, भारत सरकार के भूतपूर्व श्रम, रोजगार और पुनर्वासि मंत्रालय (श्रम और रोजगार विभाग) की अधिसूचना सं० कां० प्रा० 3056 तारीख 25 अगस्त, 1967 में निम्नलिखित संशोधन करती है, अर्थात् :—

उक्त अधिसूचना में उद्देशिका के पैरा 1 में, पद "मैसर्स थोमस कुक एण्ड सन्स, (कान्टीनेंटल एण्ड ओवरसीज) लिमिटेड" के स्थान पर "मैसर्स थोमस कुक ओवरसीज लिमिटेड" पद प्रतिस्थापित किया जाए।

[सं० एम० 35014(12)/77-पी० एफ०-II]

New Delhi, the 25th June, 1977

S.O. 2265.—Whereas in exercise of the powers conferred by clause (a) of sub-section (i) of section 17 of the Employees' Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952), the Central Government had, by the notification of the Government of India in the late Ministry of Labour, Employment and Rehabilitation (Department of Labour and Employment) number S.O. 3056 dated the 25th August, 1967, exempted, subject to the conditions specified in the Schedule to the said notification, Messrs Thos Cook and Sons (Continental and Overseas) Limited from the operation of all the provisions of the Employees' Provident Funds Scheme, 1952;

And whereas the aforesaid Messrs Thos Cook and Sons (Continental and Overseas) Limited, have changed the name of their establishment to "Messrs Thomas Cook Overseas Limited", with effect from 2nd December, 1974;

Now, therefore, in exercise of the Provision of sub-section (1) of section 17 of the said Act, the Central Government hereby makes the following amendment in the notification of the Government of India in the late Ministry of Labour, Employment and Rehabilitation (Department of Labour and Employment) number S.O. 3056 dated the 25th August, 1967 :—

In the said notification, in Paragraph 1 of the preamble, for the expression "Thos Cook and Sons (Continental and Over-

seas) Limited", the expression "Messrs Thomas Cook Overseas Limited" shall be substituted.

[No. S. 35014(12)/77-PF. II]

नई दिल्ली, 27 जून, 1977

कां० प्रा० 2266.—केन्द्रीय सरकार, कोयला खान भविष्य निधि और प्रकीर्ण उपबन्ध अधिनियम, 1948 (1948 का 46) की धारा 10 की उपधारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, भारत सरकार के श्रम मंत्रालय की अधिसूचना संख्या कां० प्रा० 4525, तारीख 8 नवम्बर, 1976 में निम्नलिखित संशोधन करती है, अर्थात् :—

उक्त अधिसूचना में "प्रादेशिक भविष्य निधि आयुक्त" शब्दों के पश्चात् "ज्येष्ठ वित्त अधिकारी, वित्त अधिकारी, सहायक वित्त अधिकारी" शब्द अन्तः स्थापित किए जाएंगे।

[संख्या ए० 12034 (1)/77-पी० एफ०-I]

एस०एस० सहस्रनामन, उप सचिव

New Delhi, the 27th June, 1977

S.O. 2266.—In exercise of the powers conferred by sub-section (1) of section 10 of the Coal Mines Provident Fund and Miscellaneous Provisions Act, 1948 (46 of 1948), the Central Government hereby makes the following amendment in the notification of the Government of India in the Ministry of Labour No. S.O. 4525 dated the 8th November, 1976, namely :—

In the said notification, after the words "Regional Provident Fund Commissioner", the words "Senior Finance Officer, Finance Officer, Assistant Finance Officer, Coal Mines Provident Fund Organisation", shall be inserted.

[No. A-12034(7)/77-PF. I]

S. S. SAHASRANAMAN, Dy. Secy.

नई दिल्ली, 1 जुलाई, 1977

कां० प्रा० 2267.—केन्द्रीय सरकार, समान वेतन अधिनियम, 1976 (1976 का 25) की धारा 6 की उप धारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, इससे उपाबद्ध अनुसूची में उल्लिखित थोक और खुदरा व्यापार तथा रेस्तरां और होटल के नियोजनों को समुचित सरकार द्वारा एक या उससे अधिक सलाहकार समितियां गठित करने के लिए निविष्ट करती है, जो इस सम्बन्ध में सलाह देगी कि ऐसे नियोजनों में किम सीमा तक महिलाओं को नियोजित किया जाए।

अनुसूची

खाद्य वस्त्र, जीवन पशुओं, पेय और मादक वस्तुओं का थोक व्यापार :

1. अनाज और दालों का थोक व्यापार।
2. अनाज और दालों से भिन्न खाद्य पदार्थों का थोक व्यापार।
3. कपड़ा और कपड़े के उत्पादों, जैसे हर प्रकार के कपड़ों, पोशाकों, कमीज के कपड़ों, सूट के कपड़ों और सोजे, बनियान आदि का थोक व्यापार।
4. फिनिलपेय जैसा मादक द्रव्यों से भिन्न पेयों का थोक व्यापार।
5. शराब और मरिचा जैसे मादक द्रव्यों का, जिसके अन्तर्गत शराब और मरिचा का थोक व्यापार।
6. अफीम और गांजा जैसी तशीली वस्तुओं का थोक व्यापार।
7. तम्बाकू और तम्बाकू के उत्पादों का थोक व्यापार।
8. पशुओं का थोक व्यापार।
9. भूसे और चारे का थोक व्यापार।

ईंधन, रोजमी, रसायन, सुगन्धित सामग्री, चीनी मिट्टी की वस्तुओं और भीजे का थोक व्यापार :

10. औषध और रसायन का थोक व्यापार।
11. ईंधन और प्रकाश सम्बन्धी उत्पादों का थोक व्यापार।
12. प्रसाधन, सुगन्धित सामग्री और चीनी मिट्टी (कास्मेटिक्स) की वस्तुओं का थोक व्यापार।
13. धातु, पॉलिस्तेन और शीशे के बर्तन, काकरी और चीनी मिट्टी के बर्तन का थोक व्यापार।
- काष्ठ, कागज, चमड़े और अखाद्य तेलों का थोक व्यापार :
14. पेट्रोल, मोबिल आयल तथा सहबद्ध उत्पादों का थोक व्यापार।
15. काष्ठ, बेत, बाम फूय और इस प्रकार की अन्य वस्तुओं का थोक व्यापार।
16. कागज और अन्य लेखन-सामग्री का थोक व्यापार।
17. जाल, जमड़ा और लोमछर्म (फर) तथा इस प्रकार की अन्य वस्तुओं का थोक व्यापार।
- परिवहन एवं बिजली के उपस्कर सहित सभी प्रकार की मशीनरी, उपस्कर का थोक व्यापार :
18. कृषि और औद्योगिक मशीनरी, कटाई, भूसी निकालने एवं बूझाई की मशीनों और इस प्रकार के अन्य सामान का थोक व्यापार।
19. बिजली की मशीनों और उपस्करों का थोक व्यापार।
20. परिवहन और संग्रहण उपस्करों का थोक व्यापार।

प्रकीर्ण विनिर्माण सामान का थोक व्यापार :

21. फर्नीचर और फिक्सचरों का थोक व्यापार।
22. रबड़ और रबड़ के उत्पादों का थोक व्यापार।
23. ऐसे घरेलू उपस्करों का थोक व्यापार, जो अन्यत्र वर्गीकृत नहीं हैं।
24. भवन निर्माण सामग्री का थोक व्यापार।
25. बीनाल षडियों और चर्मों (नजर के शीशे के फ्रेमों सहित) का थोक व्यापार।
26. लोहे का सामान और सफाई उपस्करों का थोक व्यापार।
27. बैज्ञानिक, चिकित्सीय और शल्य उपकरणों का थोक व्यापार।
28. कीमती धातु, रत्न और जेवर का थोक व्यापार।
29. ऐसे सामान का थोक व्यापार जो अन्यत्र विनिर्दिष्ट नहीं हैं।
- खाद्य और खाद्य पदार्थों, पेय तम्बाकू और मादक द्रव्यों का खुदरा व्यापार :
30. अनाज और किराना भंडार।
31. सब्जी और फल विक्रय।
32. मांस, मछली और मुर्गी-पालन का व्यापार।
33. मिष्ठान, बेकरी उत्पादों, डेरी उत्पादों और अण्डे का व्यापार।
34. पान, बीड़ी और सिगरेट की दुकानें।
35. फेनिलपेय (एरीटेज वाटर) मद्य सहित पेय और आईस क्रीम का व्यापार।
36. शराब और मदिरा की दुकानें।
37. ऐसे खाद्य और खाद्य पदार्थ, पेय, तम्बाकू और मादक द्रव्य में खुदरा व्यापार जो अन्यत्र विनिर्दिष्ट नहीं हैं।
- वस्त्र उद्योगों में खुदरा व्यापार :
38. वस्त्र उद्योग (बिना सिले हुए कपड़े) का व्यापार।
39. सिले हुए कपड़ों का व्यापार।
- ईंधन और अन्य घरेलू उपयोगी और टिकाऊ वस्तुओं का खुदरा व्यापार :
40. ईंधन की लकड़ी, कोयला, मिट्टी के तेल का व्यापार।
41. बर्तनों की दुकान।

42. फील्मी स्टोर (काकरी और शीशे के सामान का व्यापार करने वाले भंडारों सहित)।
43. विद्युत और इलेक्ट्रॉनिकी सामानों का व्यापार।
44. फर्नीचर की दुकानें।
45. जेवर की दुकानें।
46. जूतों की दुकानें।
47. ऐसे ईंधन और अन्य घरेलू उपयोगी और टिकाऊ वस्तुओं में खुदरा व्यापार जो अन्यत्र विनिर्दिष्ट नहीं हैं।

कुछ अन्य सामानों के संबंध में खुदरा व्यापार :

48. दवाइयों की दुकानें।
49. पुस्तक विक्रेता और लेखन-सामग्री बेचने वाले।
50. भवन निर्माण सामग्री का व्यापार।
51. परिवहन उपस्कर का व्यापार।
52. पेट्रोल बेचने वाले स्टेशन।
53. ऐसे सामानों का खुदरा व्यापार, जो अन्यत्र वर्गीकृत नहीं हैं।

रेस्तरा और होटल

54. रेस्तरा के और खाने पीने के अन्य स्थान।
55. होटल, अस्थायी निवास गृह, कैम्प और अन्य यात्री निवास भवन।

[यववा एम-42013/23/76-डब्ल्यू० सी०]

New Delhi, the 1st July, 1977

S.O. 2267.—In exercise of the powers conferred by sub-section (1) of section 6 of the Equal Remuneration Act, 1976 (25 of 1976), the Central Government hereby specifies the employments in wholesale and retail trade and restaurants and hotels specified in the Schedule annexed hereto for the purpose of constitution of one or more Advisory Committees by the appropriate Governments to advise it with regard to the extent to which women may be employed in such employments.

SCHEDULE

Wholesale trade in food, textiles, live animals, beverages and intoxicants :—

1. Wholesale trade in cereals and pulses.
2. Wholesale trade in food stuffs other than cereals and pulses.
3. Wholesale trade in textiles and textile products like all kinds of fabrics, garments, shirtings, suitings and hosiery goods.
4. Wholesale trade in beverages other than intoxicants such as aerated water.
5. Wholesale trade in intoxicants like wines and liquors including bottling of wines and liquors.
6. Wholesale trade in narcotics like opium and ganja.
7. Wholesale trade in tobacco and tobacco products.
8. Wholesale trade in animals.
9. Wholesale trade in straw and fodder.

Wholesale trade in fuel, light, chemicals, perfumery, ceramics and glass :—

10. Wholesale trade in medicines and chemicals.
11. Wholesale trade in fuel and lighting products.
12. Wholesale trade in toilets, perfumery and cosmetics.
13. Wholesale trade in metal, porcelain and glass utensils, crockery and chinaware.

Wholesale trade in wood, paper, skins and inedible oils :—

14. Wholesale trade in petrol, mobil oil and allied products.

15. Wholesale trade in wood, cane, bamboo, thatches and such other articles.
16. Wholesale trade in paper and other stationery goods.
17. Wholesale trade in skin, leather and fur and such other articles.

Wholesale trade in all types of machinery, equipment including transport and electrical equipment :—

18. Wholesale trade in agricultural and industrial machinery, harvestors threshers sowing machines and such other articles,
19. Wholesale trade in electrical machinery and equipment.
20. Wholesale trade in transport and storage equipment.

Wholesale trade in miscellaneous manufactures :—

21. Wholesale trade in furniture and fixtures.
22. Wholesale trade in rubber and rubber products.
23. Wholesale trade in household equipment not elsewhere classified.
24. Wholesale trade in building materials.
25. Wholesale trade in clocks and eye-glasses (including frames of eye-glasses).
26. Wholesale trade in hardware and sanitary equipment.
27. Wholesale trade in scientific, medical and surgical instruments.
28. Wholesale trade in precious metals, stones and jewellery.
29. Wholesale trade in goods not elsewhere specified.

Retail trade in food and food articles, beverages, tobacco and intoxicants :

30. Grain and grocery store.
31. Vegetable and fruit selling.
32. Dealers in meat, fish and poultry.
33. Dealers in sweetmeat, bakery products, dairy products and eggs.
34. Pan, bidi and cigarette shops.
35. Dealing in aerated water, soft drinks and ice cream.
36. Wine and liquor shops.
37. Retail trade in food and food articles, beverages, tobacco and intoxicants not elsewhere specified.

Retail trade in textiles :—

38. Dealing in textiles (now readymade).
39. Dealing in readymade garments.

Retail trade in fuel and other household utilities and durables :—

40. Dealing in firewood, coal and kerosene oil.
41. Utensil shops.
42. Fancy stores (including stores dealing in crockery and glassware).
43. Dealing in electrical and electronic goods.
44. Furniture shops.
45. Jewellery marts.
46. Footwear shops.
47. Retail trade in fuel and other household utilities and durables not elsewhere classified.

Retail trade in relation to certain other goods :—

48. Medical shops.
49. Booksellers and stationers.
50. Dealing in building material.
51. Dealing in transport equipment.
52. Petrol filling stations.
53. Retail trade in goods not elsewhere classified.

Restaurants and hotels :—

54. Restaurants, cafes and other eating and drinking places.
55. Hotels, rooming houses, camps and other lodging places.

[No. S-42013/23/76-WC]

क्रा०अ०२२६८.—केन्द्रीय सरकार समान पारिश्रमिक अधिनियम, 1976 (1976 का 25) की धारा 1 की उप-धारा (3) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, 1 जुलाई, 1977 को उस मशीन के रूप में नियम करती है जिसको उक्त अधिनियम इससे उपाबद्ध अनुसूची में विनिर्दिष्ट थोक और खुदरा व्यापार तथा रेस्तरां और होटलों के नियोजनों के संबंध में प्रवृत्त होगा।

अनुसूची

खाद्य, वस्त्र, जीवित पशुओं, पेय और मादक वस्तुओं का थोक व्यापार

1. अनाज और दालों का थोक व्यापार।
2. अनाज और दालों से भिन्न खाद्य पदार्थों का थोक व्यापार।
3. कपड़ा और कपड़ों के उत्पादों, जैसे हर प्रकार के कपड़ों, पोशाकों, कभीज के कपड़ों, सूट के कपड़ों और मोजे, बमियान आदि का थोक व्यापार।
4. फैनिलपेय जैसे मादक द्रव्यों से भिन्न पेयों का थोक व्यापार।
5. शराब और मदिरा जैसे मादक द्रव्यों का, जिसके अन्तर्गत शराब और मदिरा को बोतलों में भरना भी है, थोक व्यापार।
6. अफीम और गांजा जैसी नशीली वस्तुओं का थोक व्यापार।
7. तम्बाकू और तम्बाकू के उत्पादों का थोक व्यापार।
8. पशुओं का थोक व्यापार।
9. भूसे और चारे का थोक व्यापार।

ईंधन, रोगनी, रसायन, युगन्धित सामग्री, चीनी मिट्टी की वस्तुओं और शीशे का थोक व्यापार

10. ओषध और रसायन का थोक व्यापार।
11. ईंधन और प्रकाश संबंधी उत्पादों का थोक व्यापार।
12. प्रसाधन, युगन्धित सामग्री और चीनी मिट्टी (कस्मेटिक्स) की वस्तुओं का थोक व्यापार।
13. धातु, पॉलिमर और शीशे के बर्तन, काकरी और चीना मिट्टी के बर्तन का थोक व्यापार।

काष्ठ, कागज, लकड़ी और अखाद्य तेलों का थोक व्यापार

14. पेट्रोल, मोबिल आयल, तथा शहबद्ध उत्पादों का थोक व्यापार।
15. काष्ठ, बेंग, बांस, फूस और इस प्रकार की अन्य वस्तुओं का थोक व्यापार।
16. कागज और अन्य लेखन-सामग्री का थोक व्यापार।
17. खान, चमड़ा और लोमचर्म (फर) तथा इस प्रकार की अन्य वस्तुओं का थोक व्यापार।

परिवहन एवं बिजली के उपकरण सहित सभी प्रकार का मशीनरी, उपकरण का थोक व्यापार

18. कृषि और औद्योगिक मशीनरी, कटाई, भूसी निकालने एवं बुवाई की मशीनों और इस प्रकार के अन्य सामान का थोक व्यापार।
19. बिजली की मशीनों और उपकरणों का थोक व्यापार।
20. परिवहन और संग्रहण उपकरणों का थोक व्यापार।
- प्रकीर्ण विनिर्माण सामान का थोक व्यापार
21. फर्नीचर और फिक्सचरों का थोक व्यापार।
22. रबड़ और रबड़ के उत्पादों का थोक व्यापार।
23. ऐसे घरेलू उपकरणों का थोक व्यापार, जो अन्यत्र वर्गीकृत नहीं हैं।
24. भवन निर्माण सामग्री का थोक व्यापार।
25. दीवाल बहियों और चश्मों (नजर के शीशों के फ्रेमों सहित) का थोक व्यापार।
26. लोहे का सामान, और सफाई उपकरणों का थोक व्यापार।
27. वैज्ञानिक, चिकित्सीय और शल्य उपकरणों का थोक व्यापार।
28. कीमती घातु, रत्न और जेवर का थोक व्यापार।
29. ऐसे सामान का थोक व्यापार जो अन्यत्र विनिर्दिष्ट नहीं हैं।
- खाद्य और खाद्य पदार्थों, पेय तम्बाकू और मादक द्रव्यों का खुदरा व्यापार
30. अनाज और किराना भंडार।
31. सब्जों और फल विक्रय।
32. सांभ, मछली और मुरगी-पालन का व्यापार।
33. मिष्ठान, बेकरी उत्पादों, डेरी उत्पादों, और अण्डे के व्यापारों।
34. पान, बीड़ी और सिगरेट की दुकानें।
35. फैनिलपेय (एन्टेड वाटर) मद्य सहित पेय और आईस क्रीम का व्यापार।
36. शराब और मदिरा की दुकानें।
37. ऐसे खाद्य और खाद्य पदार्थों, पेय, तम्बाकू और मादक द्रव्य में खुदरा व्यापार, जो अन्यत्र विनिर्दिष्ट नहीं हैं।
- वस्त्र उद्योगों में खुदरा व्यापार
38. वस्त्र (बिना मिले हुए कपड़े) का व्यापार।
39. मिले हुए कपड़ों का व्यापार।
- ईंधन और अन्य घरेलू उपयोगी और टिकाऊ वस्तुओं का खुदरा व्यापार
40. ईंधन की लकड़ी, कोयला, मिट्टी के तेल का व्यापार।
41. बर्तनों की दुकान।
42. फेंसी स्टोर (क्राफ्टरी और शीशे के सामान का व्यापार करने वाले भंडारों सहित)
43. विद्युत् और इलेक्ट्रॉनिकी सामानों का व्यापार।
44. फर्नीचर की दुकानें।
45. जेवर की दुकानें।
46. जूतों की दुकानें।
47. ऐसे ईंधन और अन्य घरेलू उपयोगी और टिकाऊ वस्तुओं में खुदरा व्यापार, जो अन्यत्र विनिर्दिष्ट नहीं हैं।
- कुछ अन्य सामानों के संबंध में खुदरा व्यापार
48. दवाइयों की दुकानें।
49. पुस्तक विक्रेता और लेखन सामग्री बेचने वाले।
50. भवन निर्माण सामग्री का व्यापार।
51. परिवहन उपकरण का व्यापार।
52. पेट्रोल बेचने वाले स्टेशन।
53. ऐसे सामानों का खुदरा व्यापार, जो अन्यत्र वर्गीकृत नहीं हैं।

रेस्तरां और होटल :—

54. रेस्तरां, कैफे और खाने और पीने के अन्य स्थान।
55. होटल, अस्थायी निवास गृह, कैम्प और अन्य यात्री निवास भवन।

[संख्या एस०-42013(23)/76-डब्ल्यू०सी०]

मीना गुप्ता, अवर सचिव

S.O. 2268.—In exercise of the powers conferred by sub-section (3) of section 1 of the Equal Remuneration Act, 1976 (25 of 1976), the Central Government hereby appoints the 1st day of July 1977 as the date on which the said Act shall come into force in respect of employments in wholesale and retail trade and restaurants and hotels specified in the Schedule annexed hereto :

SCHEDULE

Wholesale trade in food textiles, live animals, beverages and intoxicants :—

1. Wholesale trade in cereals and pulses.
2. Wholesale trade in food stuffs other than cereals and pulses.
3. Wholesale trade in textiles and textile products like all kinds of fabrics, garments, shirtings, suitings and hosiery goods.
4. Wholesale trade in beverages other than intoxicants such as aerated water.
5. Wholesale trade in intoxicants like wines and liquors including bottling of wines and liquors.
6. Wholesale trade in narcotics like opium and ganja.
7. Wholesale trade in tobacco and tobacco products.
8. Wholesale trade in animals.
9. Wholesale trade in straw and fodder.

Wholesale trade in fuel, light, chemicals, perfumery, ceramics and glass :—

10. Wholesale trade in medicines and chemicals.
11. Wholesale trade in fuel and lighting products.
12. Wholesale trade in toilets, perfumery and cosmetics.
13. Wholesale trade in metal, porcelain and glass utensils, crockery and chinaware.

Wholesale trade in wood, paper, skins and inedible oils :—

14. Wholesale trade in petrol, mobil oil and allied products.
15. Wholesale trade in wood, cane, bamboo, thatches and such other articles.
16. Wholesale trade in paper and other stationery goods.
17. Wholesale trade in skin, leather and fur and such other articles.

Wholesale trade in all types of machinery, equipment including transport and electrical equipment :—

18. Wholesale trade in agricultural and industrial machinery, harvestors, threshers, sowing machines and such other articles.
19. Wholesale trade in electrical machinery and equipment.
20. Wholesale trade in transport and storage equipment.

Wholesale trade in miscellaneous manufactures :—

21. Wholesale trade in furniture and fixtures.
22. Wholesale trade in rubber and rubber products.
23. Wholesale trade in household equipment not elsewhere classified.
24. Wholesale trade in building materials.
25. Wholesale trade in clocks and eye-glasses (including frames of eye-glasses).
26. Wholesale trade in hardware and sanitary equipment.
27. Wholesale trade in scientific, medical and surgical instruments.

28. Wholesale trade in precious metals, stone and jewellery.

29. Wholesale trade in goods not elsewhere specified.

Retail trade in food and food articles, beverages, tobacco and intoxicants :

30. Grain and grocery store.

31. Vegetable and fruit selling.

32. Deal in meat, fish and poultry.

33. Deal in sweetmeat, bakery products, dairy products and eggs.

34. Pan, bidi and cigarette shops.

35. Dealing in aerated water, soft drinks and ice cream.

36. Wine and liquor shops.

37. Retail trade in food and food articles, beverages, tobacco and intoxicants not elsewhere specified

Retail trade in textiles :—

38. Dealing in textiles (non-readymade)

39. Dealing in readymade garments.

Retail trade in fuel and other household utilities and durables :—

40. Dealing in firewood, coal and kerosene oil.

41. Utensil shops.

42. Fancy stores (including stores dealing in crockery and glassware).

43. Dealing in electrical and electronic goods.

44. Furniture shops.

45. Jewellery marts.

46. Footwear shops.

47. Retail trade in fuel and other household utilities and durables not elsewhere classified.

Retail trade in relation to certain other goods :—

48. Medical shops.

49. Booksellers and stationers.

50. Dealing in building material.

51. Dealing in transport equipment.

52. Petrol filling stations.

53. Retail trade in goods not elsewhere classified.

Restaurants and hotels :—

54. Restaurants, cafes and other eating and drinking places.

55. Hotels, rooming houses, camps and other lodging places.

[No. S-42013/23/76-WC]

MEENA GUPTA, Under Secy.

आदेश

नई दिल्ली, 27 जून, 1977

का०आ० 2269—केन्द्रीय सरकार की राय है कि इससे उपाबद्ध अनुसूची में विनिर्दिष्ट विषयों के बारे में मैसर्स एसोसिएटेड सीमेंट कम्पनीज लिमिटेड, मदुक्कराई के प्रबन्धतन्त्र और उनके कर्मचारियों के बीच एक औद्योगिक विवाद विद्यमान है;

और, केन्द्रीय सरकार उक्त विवाद को न्यायनिर्णयन के लिये निर्देशित करना वांछनीय समझती है;

अतः, अब, केन्द्रीय सरकार औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 (1947 का 14) की धारा 7क और धारा 10 की उप-धारा (1) के खण्ड (ब) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए एक औद्योगिक अधिकरण का गठन करती है जिसके पीठासीन अधिकारी श्री टी० एन०

शिगारवेल होंगे, जिनका मुख्यालय मद्रास में होगा और उक्त विवाद को उक्त अधिकरण को न्यायनिर्णयन के लिये निर्देशित करती है।

अनुसूची

1. "क्या मैसर्स एसोसिएटेड सीमेंट कम्पनीज लिमिटेड, मदुक्कराई, डाकघर, कोयम्बतूर जिला के प्रबन्धतन्त्र द्वारा 13-9-1974 से श्री कुमारन, टी० सं० 51, ड्रिलर को 'ग' ग्रेड से 'ब' ग्रेड में पदोन्नत करना और 'ग' ग्रेड के निम्नलिखित ड्रिलरों, अर्थात् :—

(1) श्री एस० रामलिंगम, आर० सं० 15;

(2) श्री एम० वेलुस्वामी, टी० सं० 153;

(3) श्री एस० अरुमुघम, टी० सं० 26;

(4) श्री चिन्नाकरुप्पन, टी० सं० 154; और

(5) श्री शंकरन, टी० सं० 158;

के दावों की उपेक्षा करना न्यायोचित है? यदि नहीं, तो वे किस अनुवीध के और किस तारीख से हकदार हैं?"

2. 'जैक हैम्बर ड्रिलरों' को 'हाल्को ड्रिलरों' की श्रेणी में पदोन्नत करने का मापदण्ड क्या होना चाहिये तथा क्या केवल जैक हैम्बर ड्रिलरों के लिये वर्तमान ग्रेड 'ब' और 'ग' और हाल्को ड्रिलरों के लिये 'ब', 'ग' और 'ख' न्यायोचित हैं?

[सं० एन०-29011/34/76-डी०-III-बी]

बी० वेलायुधन, अवसर सचिव

ORDER

New Dehi, the 27th June, 1977

S.O. 2269.—Whereas, the Central Government is of opinion that an industrial dispute exists between the Management of Messrs Associated Cement Companies Limited, Madukkarai and their workmen is respect of the matters specified in the Schedule hereto annexed;

And, whereas, the Central Government considers it desirable to refer the said dispute for adjudication;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by section 7A, and clause (d) of sub-section (1) of section 10 of the Industrial Disputes Act, 1947 (14 of 1947), the Central Government hereby constitutes an Industrial Tribunal of which Shri T. N. Shingaravelu shall be the Presiding Officer with headquarters at Madras, and refer the said dispute for adjudication, to the said Tribunal.

SCHEDULE

1. "Whether the management of Messrs Associated Cement Companies Limited, Madukkarai, P.O. Coimbatore District in promoting Shri Kumaran T. No. 51, Driller from 'C' grade to 'B' grade with effect from 13-9-1974 overlooking the claims of the following drillers in 'C' grade namely (i) Shri S. Ramalingam. R. Nos. 13; (ii) Shri S. Veluswamy. T. No. 153, (iii) Shri S. Arumugham, T. No. 26, (iv) Shri Chinnakaruppan, T. No. 154 and (v) Shri Sankaran, T. No. 158 is justified? If not to what relief are they entitled to and from what date?"

2. "What should be the criteria for promotion of 'Jack Hammer Drillers' to the category of 'Halco Drillers' and also whether the existing grades 'D' and 'C' only for Jack Hammer Drillers and Grades 'D', 'C' and 'B' for Halco Drillers are justified?"

[No. L-29011/34/76-D. III.B.]

V. VELAYUDHAN, Under Secy.

नई दिल्ली, 25 जून, 1977

ANNEXURE 'A'

कां० 2270—केन्द्रीय सरकार, कोल माइन्स पिट-हेड बाथ रूलस, 1959 के नियम 2 के उपनियम (ख) के अनुसरण में और भारत सरकार के भूतपूर्व धर्म और रोजगार मंत्रालय की अधिसूचना सं० एस० ओ० 3443, तारीख 24 अक्टूबर, 1970 को अधिकांत करने हुए श्री एच०एच० खुरेशी को, उक्त नियमों के अधीन सक्षम प्राधिकारी के, सभी कृत्यों का पालन करने के लिये, कोयला खान कल्याण का अपर आयुक्त नियुक्त करती है।

[सं० ए०/12026/2/77-एम०-II]

सं० न० सखसेना, कल्याण आयुक्त (हैडक्वार्टर्स)

New Delhi, the 25th June, 1977

S.O. 2270.—In pursuance of sub-rule (b) of rule 2 of the Coal Mines Pit-head Bath Rules, 1959 and in supersession of the notification of the Government of India in the late Ministry of Labour and Employment No. S. O. 3443, dated the 24th October, 1970, the Central Government hereby appoints Shri H. H. Quraishy, Additional Coal Mines Welfare Commissioner, to perform all the functions of a competent authority under the said rules.

[No. A-12026/2/77-MII]

S. N. SAXENA, Welfare Commissioner (H.Q.)

New Delhi, the 28th June, 1977

S.O. 2271.—In pursuance of section 17 of the Industrial Disputes Act, 1947 (14 of 1947), the Central Government hereby publishes the following award of the Central Government Industrial Tribunal, Calcutta in the industrial dispute between the employers in relation to the management of Allahabad Bank, Calcutta and their workmen, which was received by the Central Government on 22-6-77.

CENTRAL GOVERNMENT INDUSTRIAL TRIBUNAL
AT CALCUTTA

Reference No. 9 of 1977

PARTIES: Employers in relation to the management of the Allahabad Bank, Calcutta,

AND

Their Workmen.

APPEARANCE:

On behalf of Employers	Absent
On behalf of Workmen	Absent.
State : West Bengal	Industry : Banking.

AWARD

The Government of India, Ministry of Labour, by their Order No. L-12011/3/77-D. II. A. dated 22-4-1977, referred an industrial dispute existing between the employers in relation to the management of the Allahabad Bank, Calcutta and their workmen, to this Tribunal, for adjudication. The reference reads:

“Whether the action of the management of Allahabad Bank, Calcutta in appointing 35 workmen mentioned in Annexure 'A' as permanent Cashiers with effect from 29-1-75 without giving them the benefit of their temporary service in the Bank is justified? If not, to what relief are these workmen entitled?”

47 GI/77—10

Sl. No.	Name	Date of Initial Appointment
1.	Shri Bijoy Laha	27-12-72
2.	Shri Amrit Sharma	27-12-72
3.	Shri Bhagavati Pd. Kapoor	21-6-72
4.	Shri Arun Mustafi	29-12-72
5.	Shri Swapan Kumar Ghosh	3-1-73
6.	Shri Nirmal Kumar Banerjee	9-1-73
7.	Shri Amit Kumar Chakraborty	24-1-73
8.	Shri Prithwis Chowlia	24-1-73
9.	Shri Subrata Mukherjee	24-1-73
10.	Shri Haridas Day	24-1-73
11.	Shri Surendra Rai	24-1-73
12.	Shri Dipankar Das	27-1-73
13.	Shri Dilip Kukar Ghosh	29-1-73
14.	Shri Ganga Pd. Singh	1-2-73
15.	Shri Prem Ch. Khanna	1-2-73
16.	Shri Debandra Pd. Mishra	1-2-73
17.	Shri Prabir Kumar Biswas	7-2-73
18.	Shri Shree Chand Tandon	16-2-73
19.	Shri Sukhendu Das	14-5-73
20.	Shri Satya Brata Chatterjee	15-5-73
21.	Shri Tarun Kumar Dutta	14-5-73
22.	Shri Nemai Banerjee	9-7-73
23.	Shri Chitta R. Dutta	8-8-73
24.	Shri Uttam Kumar Chatterjee	3-9-73
25.	Shri Pradip Kr. Ghosal	17-9-73
26.	Shri Md. Fahimuddin	3-9-73
27.	Shri Ram Kr. Saha	23-7-73
28.	Shri Dilip Kr. Tandon	8-11-73
29.	Shri Bijay Kumar Chakraborty	10-9-73
30.	Shri Susanta Kr. Sarkar	13-9-73
31.	Shri Jayan Kr. Samanta	10-9-73
32.	Shri Baban Pandey	10-9-73
33.	Shri Uttam Kr. Mishra	13-9-73
34.	Shri Swapan R. Chakraborty	13-9-73
35.	Shri Shyam Sunder Mehra	27-9-73

2. The parties did not file written statement even after the summons was received by them.

3. However they have now filed a joint application stating that the subject matter of the Reference is settled out of Court

4. In the result, the Reference is rejected as settled out of Court.

Dated Calcutta,

15th June, 1977.

E. K. MOIDU, Presiding Officer,

[F. No. L-12011/3/77-D. II. A.]

S.O. 2272.—In pursuance of section 17 of the Industrial Disputes Act, 1947 (14 of 1947), the Central Government hereby publishes the following award of the Central Government Industrial Tribunal, Jabalpur in the industrial dispute between the employers in relation to the State Bank of India, Mandla Branch and their workmen, which was received by the Central Government on the 22-6-77.

CENTRAL GOVERNMENT INDUSTRIAL TRIBUNAL-
CUM-LABOUR COURT,
JABALPUR (M.P.)

Case No. CGIT/LC(R)(12)/1976

PARTIES :

Employers in relation to the State Bank of India, Mandla Branch and their workman, Shri Nannhelal Koshti, Watchman.

APPEARANCES :

For workman.—Shri P. S. Nair, Advocate.

For Bank.—Shri S. S. Sharma, Officer of the Bank.

INDUSTRY : Banking

DISTRICT : Mandla (M.P.).

Dated June 16, 1977

AWARD

This is a reference made by the Government of India in the Ministry of Labour vide its order No. L-12012/65/76-DII A Dated 27-8-1976 for the adjudication of the following industrial dispute:—

"Whether the action of the management of State Bank of India, Mandla Branch in discharging Shri Nannhelal Koshti, Watchman from service with effect from 18-8-1975 is justified? If not, to what relief is the workman entitled?"

2. Shri Nannhelal Koshti, Watchman, admittedly burnt certain papers in the night between 29th and 30th September, 1972 in the Bank premises of Mandla Branch of State Bank of India. In the morning ashes were thrown away in an open place outside the premises of the bank from where they were collected at about 11 a.m. on 30th September, 1972. The ashes contain some pieces of burnt vouchers such as cheques, drafts etc. The enquiry was conducted by Shri G. G. Vaidya, Enquiry Officer. It has been held vide order dated 15-3-1977 that the enquiry was proper and no principle of natural justice was violated. Proper opportunity of defence was given to the delinquent. The Enquiry Officer submitted a report holding that the charge of burning some vouchers of 29th September, 1972 belonging to the Bank was established against Shri Nannhelal Koshti. However, he submitted that no motive was established against the delinquent and that could be a mitigating circumstance. The disciplinary officer proposed the punishment of discharge and after considering the representation of Shri Nannhelal Koshti discharged him from the service with effect from 18th August, 1975.

3. Now the questions raised on behalf of the workman before this Tribunal are :

That the delay in framing the charge was fatal and amounted to waiver of the proposed action. There was violation of the mandatory provision of Sastri Award inasmuch as the intention to take the proposed action was not communicated within three days. The Enquiry report was perverse as the findings were not based on legal evidence. The burden was wrongly placed on the workman and the guilt was not fully established against Shri Koshti. There was discrimination between one workman and the other as the accountant was simply warned and transferred for the loss of the same vouchers while Shri Nannhelal Koshti was discharged from service. This affected the validity of the order. In any case the punishment awarded was grossly disproportionate to the nature and seriousness of delinquency and requires to be revised specially because the factors necessary to be considered for awarding the punishment were ignored at the time of awarding the same.

4. The management has denied all these allegations. The points so raised shall be taken up one after the other in the following paragraphs.

5. The paper which is marked as Ex. 11 in the enquiry file is an application tagged to the register. It was given by Shri Nannhelal on 4-10-1972. In that application he

admitted that the Agent of the Bank had served him with a memo on 30th September, 1972 at 6 p.m. enquiring about five bundles. Shri Sharma appearing for the management argued that the service of this memo on Shri Nannhelal Koshti amounted to giving notice to the delinquent that the management proposed to initiate departmental enquiry against him. It amounted to substantial compliance of the direction given in sub-clause (9) of Clause 521 of Sastri Award, which runs as follows :—

"When it is decided to take any disciplinary action against an employee such decision shall be communicated to him within three days thereof."

6. The sub-clause envisages that at first the management should decide to take disciplinary action and then the communication should follow within three days of such a decision. There is absolutely no evidence as to when the management took a decision to start domestic enquiry against him. Such a decision could not be taken on 30th September, 1972 itself. The papers of enquiry proceedings vide Ex. 2 to Ex. 11 attached to the register go to show that some fact finding enquiry was instituted about that incident which enquiry continued upto 5-10-1972. All concerned persons were served with the notices. The management had to decide as to how many persons were involved and who others were negligent so that the vouchers, which should have been in the safe, were left in the waste paper basket affording an opportunity of being burnt at the hands of the Chowkidar along with other waste papers. A decision on this point could not therefore be taken before 5-10-1972. It is thus obvious that the management could not have taken a decision on 30th September, 1972 to start domestic enquiry against Shri Nannhelal Koshti. Such a decision as said above is sine-qua-non for addressing the required communication to delinquent employee. It is thus clear that the memo of 30th September, 1972 could not be the memo desired to be given to the delinquent employee vide sub-clause 9 of Clause 521 of Sastri Award.

7. Moreover the reference of the memo dated 30th September, 1972 made in Ex. 11 says that under that memo Shri Koshti was asked to explain about five bundles. It is obvious from Ex. 2 to Ex. 11 (papers of fact finding enquiry) that such memos were addressed to several other employees and they were asked to explain the facts within their knowledge. The aforesaid reference of the memo addressed to Shri Nannhelal Koshti does not mention that the memo expressed management's intention to take disciplinary action against him. It was for the management to produce the office copy of that memo if it thought that the memo did give such intimation as is desired by sub-clause (9) of Clause 521. It failed to produce the document and this may give rise to adverse inference. Thus the said memo dated 30th September, 1972 could not be the one contemplated under the said provision.

8. The charge-sheet annexure A to the management's written statement states that Regional Manager had ordered to serve the charges upon Shri Koshti. This means that Regional Manager was the competent authority for taking disciplinary action. It necessarily follows that a decision to take disciplinary action could have been taken only by the Regional Manager and not by the Agent of the Branch. The memo dated 30th September, 1972 was from Branch Manager and not from the Regional Manager. In fact Regional Manager had not been informed of the incident by the time the said memo of 30th September, 1972 was issued to Shri Koshti. This again establishes very clearly that the said memo of 30th September, 1972 could not be the one contemplated under the aforesaid provision of Sastri Award.

9. Even the service of the charge-sheet could be deemed to be giving the information to the delinquent about the management's decision to start disciplinary proceedings against him provided the charge-sheet is served within three days of such a decision. But as said above it is not clear as to when that decision was taken by the competent authority and therefore it cannot be said that the charge-sheet was served within three days of such a decision. It was for the delinquent to prove that the requirements of sub-clause (9) of Clause 521 were not followed and for that it was necessary for him to prove the date of decision of the competent authority to initiate against him a domestic enquiry. He could have got the relevant documents produced or could have examined the concerned disciplinary officer. He cannot draw the benefit from his own mistake in not furnishing

proper proof of the non-compliance of the aforesaid provisions of Sastri Award. Thus though the document relied upon by the management is not the one which was issued in compliance of the directions contained in the said sub-clause yet the delinquent, who had raised the plea of non-compliance of the said provision of Sastri Award has failed to substantiate it by proper evidence.

10. Moreover the said provision is not mandatory. Sastri Award does not lay down the consequence of the non-compliance of that provision. The delay if any could not attract waiver or acquiescence. Many times, as in the present case, the provision as to the time limit is only directory. It was so held in *Remington Rand of India Vs. Workmen* (AIR 1968 SC 224) with respect to the provision of time within which an award should be published. An award published even after the lapse of that time will not become invalid on that account. So is the case here. Even if the delinquent is not informed within three days it would not render the proceedings illegal or void. This point has therefore no force.

11. The next point relating to the delay of seven months in serving the charge-sheet and starting the domestic enquiry has also no force even though there is no apparent explanation for this inordinate delay. The fact finding enquiry had finished by about 5th October, 1972, and there is nothing to show on the record as to why the matters were delayed till 19-4-1973 when the charge-sheet was framed. This point of delay has already been dealt with in the order dated 15-3-1977. There is no need to dilate upon it here. The delay will not give rise to any presumption of waiver of action nor shall it invalidate the proceedings.

12. Learned Counsel for the workman has argued that the charge does not make out any specific major misconduct and for a minor misconduct, if any, the punishment of discharge from service could not be awarded by the authority concerned. It is true that the charge fails to mention any specific sub-clause of Clause 521 of the Sastri Award. However, the act alleged can at the most be said to be covered either by sub-clause (4) (d) or (4) (j) of Clause 521 of Sastri Award. Sub-clause (4) (d) runs as follows:—

“wilful damage or attempt to cause damage to the property of the bank or any of its customers.”

The word ‘wilful’ has been used in the same sense as in the first explanation of Sec. 107 of Indian Penal Code. It speaks of mens-rea as a necessary ingredient and governs the clause ‘damage to the property of the bank’. It is thus apparent that in order to attract this provision the damage should be wilfully caused. The delinquent did admit that he wilfully burnt waste papers but there is no evidence nor admission that the Bank vouchers were also wilfully burnt along with waste papers. They could not be seen and were put on the fire rather inadvertently. Shri Sharma has admitted at the bar that there was neither any motive alleged nor any intention established for the delinquent to burn the Bank vouchers. The charge also fails to mention the mens-rea which is an essential ingredient of the misconduct contemplated under this sub-clause. Thus there is neither any charge nor any evidence to bring the act within the mischief of sub-clause (4) (d) of Clause 521.

13. Sub-clause (4)(j) runs as follows :—

“doing any act prejudicial to the interests of the bank or gross negligence or negligence involving or likely to involve the bank in serious loss.”

This sub-clause combines three independent major misconducts viz. :—

- (i) doing any act prejudicial to the interests of the bank; or
- (ii) gross negligence; or
- (iii) negligence resulting in or likely to result in serious loss.

The alleged act and the language of the charge point towards the misconduct conceived in the first part of this sub-clause i.e. doing any act prejudicial to the interests of the bank.

14. Learned Counsel for the delinquent employee has argued that mens-rea should be presumed to be an essential ingredient of the misconduct contemplated in the first part because the words indicating the mens-rea specifically appear in the second and third parts. Moreover the magnitude of the prejudicial act should be such as to be equivalent to the magnitude to the delinquency contemplated in the second and third parts i.e. the act should be of grossly prejudicial nature because all the three types of misconducts have been huddled together in one and the same sub-clause.

15. Simply because the words ‘gross negligence’ or ‘negligence’ resulting in serious loss’ appear in the latter two parts of the sub-clause, it cannot be presumed that similar mens-rea should be inherently in existence in the first part as well. The rule of ejusdem generis has no inverse application. It was so held by the Court of Appeal in *Re Wellsted's Will Trusts* (1949 (1) All.E.R.577 (588)), by the Privy Council in *Canadian National Railways Vs. Canada Steamship Lines Ltd.* (1945 S.C. 204 (211)) and by the Supreme Court in *Thakur Amar Singh Vs. State of Rajasthan* (AIR 1955 SC 504 (523)). What prevented the authors of the award to write that the act should be wilful or grossly prejudicial to the interest of the bank? No degree of seriousness can be added to the first part because of the degree of seriousness expressed in the latter two parts of the sub-clause (4)(j).

16. The first part therefore conceives of strict liability misconduct which means the actus-reus itself of punishable if it is prejudicial to the interests of the bank without there being any mens-rea or inadvertence on the part of the employee. The provision is conceived with a view to save the bank from all acts prejudicial to its interest whether they are done intentionally, knowingly, wilfully, negligently or foolishly. The quantum of punishment may differ according to the presence or absence of mens-rea or the gravity of the actus-reus.

17. In the leading case of *Sherras Vs. De-Rutzen* (1895-99) All.E.R. 1167 (1169), following three classes of cases were mentioned where the legislature enacted a strict liability offence—

- (i) cases where the act is not criminal in the real sense;
- (ii) cases where the act is prohibited in public interest under a penalty; and
- (iii) where the proceedings though criminal are in fact the summary mode of enforcing a civil right.

This misconduct of the acts prejudicial to the interests of the bank satisfies all the three aforesaid conditions. All acts prejudicial to the bank may not be strictly criminal. It is in public interest to restrain the employees of the bank from doing such acts and virtually this provision protects the civil right of the bank to carry on its business unobstructed. In some cases under Essential Commodities Act the Supreme Court observed that the severity of punishment provided may also be pointer for determining whether the provision carves out a strict liability offence. From that point of view also this major misconduct has been made punishable not simply by dismissal but by a range of punishments from stoppage of increments to the severest penalty of dismissal from service. Thus considering from all these angles it is clear that this first part of sub-clause (4)(j) conceives a strict liability misconduct for which mens-rea is not necessary. The charge and the alleged act squarely fall within the mischief of this sub-clause.

18. This brings us to the argument that the findings of the Enquiry Officer are perverse because they are not based on evidence, and the burden has been wrongly placed on the delinquent. The standard of proof required for establishing the charge has also been under estimated. It is argued that there is no evidence to prove that—

- (a) the vouchers burnt were of this bank;
- (b) the ash recovered at 11 a.m. from the open place was the same as of the papers burnt by the Watchman in the night; and
- (c) the vouchers burnt were of 29th September, 1972.

19. It is admitted that the Watchman, Shri Koshti, burnt the papers taking them from the waste paper basket. If they contained the vouchers it is obvious that those vouchers were the property of this branch of the Bank. Possession is the evidence of ownership.

20. Sheo Prasad Bajpai has stated that the ashes collected from the place outside the bank premises did contain bank vouchers. One half burnt piece indicates that it was the voucher for Rs. 500 a cheque executed in favour of Sitaram Khem Chand issued against the Savings Bank accounts in the Bank of India Mandla Branch. There is another piece under which Rs. 1000 were paid to Kailash. It bears a part of the seal in which letters 'NDLA' which are the last letters of 'Mandla' are clearly visible. These two vouchers are kept separately in the envelope marked 'A'. There are other 5/6 pieces of vouchers from which much of the particulars cannot be gathered. It is thus obvious that the ashes collected did contain half burnt pieces of vouchers of the Mandla branch of the State Bank of India.

21. The ash of the burnt papers was thrown away behind the Manager's room under a tree at about 7 in the morning and it was from the same place that this ash was collected at 11 a.m. Though the place was open and accessible yet there is neither any allegation nor any suggestion that anybody was interested in falsely implicating the Chowkidar or in tempering with the ash. Bank vouchers are not available on the road for being planted. Thus the suggestion at a late stage that there is no evidence to prove that between 7 a.m. and 11 a.m. anybody tempered with the ash or planted half burnt vouchers in it, cannot but be an extra-vagant hypothesis which is not sufficient to break the chain of circumstantial evidence as was held in *Govindareddy Vs. State of Mysore* (AIR 1960 SC 29). The Enquiry Officer believed the evidence and not unreasonably. His assessment of evidence cannot be lightly interfered with. It is permissible for him to believe even a sub-standard evidence which a Court of law may not hold to be of much credence yet that discretion is his and the tribunal is not competent to substitute its own assessment of evidence unless it comes to a finding that it is a case of no evidence. It is, therefore, held that the Enquiry Officer's finding that it was the same ash and the delinquent burnt the vouchers of this bank cannot be said to be perverse or based on no evidence.

22. However, there is no legal evidence to prove that the vouchers burnt were of 29th September, 1972. The charge is specific about the vouchers of that date. It did not speak of any and every voucher of any other date. The delinquent was required to meet that charge relating to the vouchers of 29-9-1972 and not something which was not in the charge. None of the half burnt pieces bear any impression of date, hence the fact that some half burnt pieces of vouchers were found in the ash, is by itself not sufficient to establish the charge of burning the vouchers of 29-9-1972.

23. The Branch Manager did state before the Enquiry Officer that the delinquent burnt the bank vouchers of 29th September, 1972 but it is obvious that he was not present at the time when the vouchers were burnt nor he had any direct knowledge on the point. His statement is only a hearsay inferential evidence which is not admissible and cannot be called legal evidence. It is true that in *State of Haryana Vs. Ratan Singh* [1977 (34) FIR 261] the High Court of Punjab and Haryana did observe that there is no allergy to the admission of hearsay evidence in domestic enquiries provided it has reasonable nexus and credibility but this observation even though circumscribed by several cautious statements cannot be said to be laying down good law in the face of the Supreme Court's categorical expression in *Central Bank of India Vs. Prakash Chand Jain* (7 SCLJ 541) that the hearsay evidence is not admissible hence the finding based on it in a domestic enquiry cannot be upheld. I am, therefore, of the view that the statement of the Branch Manager is not sufficient to prove that the vouchers that were burnt were of 29th September, 1972.

24. Shri L. N. Deshmukh stated that he was the last man to leave the bank at the closing hours on 29-9-72. He does not remember where the vouchers were kept by Shri L. P. Yadav but the latter was sent to send a telegram only

after he had put in all papers in the safe and the almirah and had locked them properly. Similar is the statement of Shri L. P. Yadav. However, Shiv Prasad Bajpai who is the Naik of the Bank stated categorically that he was present at the closing time that day because he was granted one hour's overtime, and saw that no voucher was left outside. All the vouchers and books were only kept inside the almirah before the accountant left the Bank.

25. Whereas Shri L. N. Deshmukh and closing messenger Shri L. P. Yadav do not say that on 29-9-72 the vouchers were left outside; they feign ignorance by giving non-committal replies in order to save their skin; Shri Shiv Prasad Bajpai is categorical that no paper was left outside. The impact of this positive evidence that there was no voucher of 29th left outside, so no voucher of that date could be burnt by Shri Koshti, was not considered by the Enquiry Officer. He only argued that when at the opening time vouchers, which are usually kept in the safe, were not found there on 30th September, 1972 it was obvious that they were left out the previous evening. He forgets that they could be misplaced anywhere else or could be got mixed up with other papers in the closing confusion. The inference drawn by him is not the necessary corollary hence it cannot belie the direct and positive testimony of the eye witness Shri Shiv Prasad Bajpai. The Enquiry Officer has not touched his evidence at all and has thus chosen to deal with only that evidence which conveniently supported his conclusion of guilt. This is not the proper way of marshalling the evidence.

26. Nannhelal is categorical that he burnt the waste papers. He said so at the earliest opportunity when he was questioned about the ash on 30th at 9.30 a.m. by Lal Bahadur. No enquiry had started till then. This was not the first time that waste papers were burnt in bank premises. Lal Bahadur recalls that previously also waste papers or refuse etc., used to be burnt in a cigri but not on the floor as in the present case. Simply because this time papers were burnt on the floor it cannot be presumed that some mischief was played or vouchers were burnt.

27. The only connecting link between the loss of vouchers of 29th and the pieces of burnt vouchers recovered from the ash which was thrown behind Manager's room under a tree, could be established by tracing out of the transactions evidence by the half burnt pieces specially those two which I have kept in envelope 'A'. It was not impossible to trace from the registers of the bank whether any cheque issued on the Savings Bank Account of Bank of India, Mandla Branch in the name of Sitaram Khem Chand for Rs. 500 was received or encashed that day. Similarly it could easily be traced whether Rs. 1000 were paid that day to Kailash. I think the Bank officers must have made such an attempt during all these 7 months for which period the enquiry was delayed, but these recovered half burnt vouchers must not have been of 29th hence they were unable to establish this important link. They could not even prepare a list of the vouchers of 29th September, 1972 during this long period of 7 months.

28. Thus though the evidence proves that vouchers of 29th were found missing on 30th yet it is clear that they were not left outside on the table or in waste papers basket and Shri Koshti had no opportunity to burn them. Nannhelal did burn the waste papers that night and inadvertently that might have included some discarded vouchers or dead or cancelled vouchers of some other date but there is absolutely no evidence that he burnt the vouchers of 29th nor the recovered ash indicates that the whole lot of vouchers of 29th, which must have been a fairly big bundle, was burnt that night. The ashes only indicate that some stray vouchers might have been burnt along with waste papers. In this way there is no evidence to establish the charge that vouchers of 29-9-1972 were burnt. It is strange that the one who misplaced the vouchers of 29th negligently suffers only a transfer and some warning while the poor Watchman with an honest career of 10/12 years is made the scape-goat and punished with discharge from service even when there is no evidence against him. This discrimination may not be illegal or unconstitutional but it is certainly unhappy and uncalled for. It is thus held that the Enquiry Officer's finding that the vouchers of that particular date were burnt is based on no-evidence and is therefore a perverse finding.

29. In any case I cannot help saying that the punishment awarded is grossly disproportionate to the gravity of the charge even if it is held to be proved. Its gravity cannot be enhanced on airy susceptibilities that the bank might have suffered any big amount of loss or the building might have caught fire and collapsed etc. These are hypothetical apprehensions. The following extenuating circumstances were present and yet were not considered by the disciplinary authority disregarding the directions in sub-clause (10)(c) of Clause 521 of Sastri Award :—

- (a) The nature of the incident though technically a gross misconduct appears to be flowing out of inadvertence, the gravity of which was not apprehended by the delinquent.
- (b) No loss or damage has been proved to have been caused to the bank by the said Act.
- (c) It is not proved as to what prejudice was actually caused to the bank or its business.
- (d) No cause or motive for acting against the interest of the bank has been alleged or proved against the delinquent employee.
- (e) Rendering of the honest faithful and unblemish service of 10/12 years was not considered at all. Visiting of minor inadvertence with the severest penalty (discharge and dismissal have not much of the distinctive features for an employee) may verge on victimisation.
- (f) Lastly the fact that Shri Koshti was never suspended and was allowed to discharge his normal duties even after the date of incident for almost three years till the date of discharge speaks volumes against the loss of confidence or alleged apprehensions against the security or interest of the bank.

30. Considering all these facts and circumstances it is held that the finding of the Enquiry Officer was perverse. The punishment awarded by the disciplinary authority is, therefore, set aside and the delinquent is reinstated with all back wages and other benefits. He shall report to the Branch Manager within one month from the date of publication of this award in the Gazette for rejoining his duties. The Bank shall pay Rs. 100 as costs of this litigation to the employee besides all his arrears of pay etc.

16-6-1977.

S. N. JOHRI, Presiding Officer

[F. No. L-12012/65/76-D.I.A.]
R. P. NARULA, Under Secy.

New Delhi, the 21st June, 1977

S.O. 2273.—In pursuance of section 17 of the Industrial Disputes Act, 1947 (14 of 1947), the Central Government hereby publishes the following award of the Central Government Industrial Tribunal No. 2, Bombay, in the industrial dispute between the employers in relation to the management of the Western Railway Carriage Workshops Canteen, Parel and Mahalaxmi, Bombay and their workmen, which was received by the Central Government on the 17th June, 1977.

BEFORE THE CENTRAL GOVERNMENT INDUSTRIAL
TRIBUNAL NO. 2, BOMBAY

Reference No. CGIT-2/4 of 1976

PARTIES :

Employers in Relation to the Management of the Western
Railway Carriage Workshops Canteen, Parel and
Mahalaxmi, Bombay,

AND

Their Workmen.

APPEARANCES :

For the Employers—Shri M. P. Pai, Advocate.

For the Workmen—Shri J. G. Gadkari, Advocate.

INDUSTRY : Railways.

STATE : Maharashtra.

Bombay, dated the 6th June, 1977

AWARD

The Government of India, Ministry of Labour acting under Section 10(1)(c) of the Industrial Disputes Act, 14 of 1947 has by its order No. L-41012(62)/72-LR.III/D.IIB, dated the 4th February, 1976 referred the following dispute to this Tribunal for adjudication.

“Whether the demands of the workmen of the Western Railway Carriage Workshops Canteen, Parel and Mahalaxmi, Bombay, for (i) grant of dearness allowance and (ii) for grant of sick leave and casual leave with wages, are justified? If so, to what reliefs are the workmen entitled?”

On behalf of the workmen of the Canteen the General Secretary, Hotel Muzdoor Sabha has filed statement of claim stating that the workmen are the employees of the Western Railway Carriage Workshops Canteens at Parel and Mahalaxmi (hereinafter referred to as 'Canteen'). The workmen organised themselves and joined the said Sabha in or about the month of May, 1971. The Union by its letter dated 12-6-1971 demanded better pay scales, Dearness Allowance, Casual Leave, Washing Allowance etc. The matter was referred for conciliation on or about 22-6-1971. The conciliation proceedings having failed the dispute was referred to the State Industrial Tribunal by the Government of Maharashtra, which by its award dated 27-7-1972 rejected the reference on the ground of want of jurisdiction as in its opinion the dispute pertained to an industry run by or under the authority of the Central Government. Thereafter the matter was referred to the Regional Labour Commissioner (C), Bombay for conciliation. The Assistant Labour Commissioner (C), Bombay submitted his failure of conciliation report in October, 1972. Thereafter the Central Government has referred this dispute to this Tribunal for adjudication by its order dated 4-2-1976. They say that the Western Railway Administration is obliged to run the Canteen under the provisions of Section 46 of the Factories Act. The Canteen is managed by a Committee constituted by the Railway Board. The Railway Board meets the expenses of the Canteen on account of purchase of utensils, furniture, coal, fuel and all types of vessels and utensils. It also reimburses the expenditure incurred by it in paying the wages to its workmen. It is run on no profit, no loss basis. If any profit is made the same is repaid to the Consumers by reducing the cost of eatables. The Union therefore submits that the question of financial capacity of the Canteen management to pay the enhanced wages does not enter the picture. The Union demands Dearness Allowance of Rs. 100 per month at cost of living index standing at 800 points, and for every 10 points rise in the cost of living index they claim additional D.A. of Rs. 3 per month. On this basis they claim of Rs. 210 per month for the unskilled workmen. The minimum wages that are now being paid by the Canteen to the lowest category of workmen viz., Cleaner is Rs. 110 p.m. basic pay and Rs. 20 as Ad-hoc D.A. Out of this pay Rs. 15 per month is deducted towards food that is supplied to the workers. They justify this demand on the basis of region-cum-industry wise, as well as the wages fixed under the Minimum Wages Act. The workers claim 10 days sick leave with wages and allowance with facility to accumulate the same for 30 days. The Canteen workers are not covered by the E.S.I. Scheme. The Union submits that the aforesaid demands of the Canteen workers are modest and are enjoyed by their counter-parts working in the industry.

On behalf of the management a written statement is filed saying that the Canteen in question is not an industry within the meaning of the Industrial Disputes Act and therefore this reference for adjudication is incompetent. They claim that the wages that are now being paid to the employees are above the minimum wages fixed under the statute and also the wages that are paid to the workers in the other Canteens. They deny the allegation that the Railway Administration is running the Canteen. According to them the Canteen is being run by a Committee and that the Railway Administration only sees to it that their workmen get the maximum benefit from this Canteen. They plead their inability to pay the higher wages that are now claimed. They say that the enhanced D.A. claimed by the workers is excessive. They also say that after the promulgation of the

emergency the prices have registered a downward trend and therefore the demand for D.A. on the basis of rising cost of living index is not justified. Regarding the demand for leave they submit that they are giving 21 days leave with pay besides 15 workshop holidays in a year with wages. For the aforesaid reasons they pray that this reference may be rejected.

On the above averments the points that arise for consideration are :—

- (1) Whether this Tribunal has no jurisdiction to entertain this reference ?
- (2) Whether there is a case for grant of D.A. and if so, to what D.A. are the workmen entitled and from what date ?
- (3) Whether the management has the capacity to bear the additional burden if any ?
- (4) Whether the workmen are entitled to sick leave and casual leave as prayed for ?
- (5) To what relief ?

Point 1 :

Originally this dispute was referred by the Maharashtra Government to the State Industrial Tribunal. Before this Tribunal it was contended on behalf of the management that this dispute pertains to an industry that was carried on by or under the authority of the Central Government and therefore the reference to the State Tribunal was incompetent. That contention was upheld by the State Tribunal by its award dated 26/27-27-1972. Thereafter there was a reference of the dispute to the Assistant Labour Commissioner (C), Bombay for conciliation and that attempt at conciliation failed in February, 1976. The dispute was referred to this Tribunal for adjudication on 4-2-1976. The learned Advocate for the Railways raised the plea that the Canteen in question is not an industry for the reason that it does not cater to the needs of outsiders, but only to the needs of the employees of the Railway Workshop. It is also pointed out that the Canteen is run on no profit no loss basis, and that there is no co-operation of capital and labour. It is unnecessary to consider the question whether this Canteen is an industry or not from this angle in view of the decisions reported in AIR, 1973, Supreme Court, 2297, *The Saraspur Mills Co. Ltd. Vs. Ramanlal Chimanlal and others* and 1975 Lab. IC 1574 *N. Jagga Rao and others vs. Union of India and others*. The case reported in AIR, 1973 Supreme Court 2297 arose under the Bombay Industrial Relations Act. The facts are that the persons employed in the Canteen of the mills claimed wages on a par with those working in the other sections of the Factory as per the Award. The Canteen in that case was being run by a Co-operative Society and the Canteen workers were appointed by the said Society. It was contended that since the employees of the Canteen were not directly appointed by the management of the mill but by the Co-operative Society that was running the Canteen, the Canteen workers were not entitled to claim wages on the same scale as those claimed by the persons directly working under the mills in terms of the Award. For the workmen it was urged that since the management was bound to run the Canteen under Section 46 of the Factories Act the running of the Canteen whether directly by the management or indirectly through the Co-operative Society, formed an integral part of the industrial activity carried on by the management. Therefore the Canteen workers also must be deemed to be persons employed in the industry. This contention was accepted. This point was decided on the basis of the definitions of the words 'employees' and 'employers' found in the Bombay Industrial Relations Act which definitions take in also the employees engaged by the Co-operative Society running the Canteen as the employees of the mills. It was urged on behalf of the workmen in this case that in view of the Supreme Court decision to the effect that the running of the Canteen by the Mill owner formed part of the Industry carried on by him, in the present case also it should be held that the running of the Canteen is an essential part of the Factory run by the Railway Administration. I agree. It follows that the Canteen in question also forms part of the industry viz. the workshop run by the Railway Administration and the persons working therein are industrial workers. The facts of the other case reported in 1975 Lab. IC. 1574 are the

persons working in the Canteen of the Railway Loco Carriage and Electrical Workshop, South-Eastern Railway Kharagpur filed a petition for the issue of a writ in the nature of mandamus directing the South-Eastern Railway to pay them enhanced D.A. on a par with the persons working in the other sections of the Factory. It was contended *inter-alia* by the Railways that since the Canteen workers were appointed by the management of the Canteen and not by them they were not entitled to claim enhanced D.A. along with their other employees. Repelling this contention it was held that in law the Canteen workers appointed by the Canteen under the Factories Act are to be deemed and treated as employees of the occupier, the Railways. The following passengers from the decision occurring at page 1578 are apposite :—

"Worker's under the Factories Act, means any person employed, direct by or through any agency in any manufacturing process or any other kind of work incidental to or connected with the manufacturing process. Through the workers of the canteen are not directly engaged in any manufacturing process or even any other work incidental thereto, on the terms of the definition in the statute and on the authority of the decisions cited above the establishment of the canteen must be deemed as being in course of conducting the undertaking as supplying basic and essential amenities to workers in the manufacturing process. The workers of the canteen thus are also be regarded in operations connected with the industry carried on by the employer and thus workers of the factory in which they are so employed. This is more so when the establishment and maintenance of the canteen is a statutory liability as in the present case.

.....
.....
at page 1578 It may be that the canteen workers are not included as Railway employees under the relevant rules. Under the statute under our consideration, we have seen that such workers are to be deemed as workers in the employ of the occupier of the Factory which is the Railway Administration. It may be the canteen workers constitute a separate and distinct class of employees and their terms and conditions may be governed by the contract contained in letters of appointment issued to them by the Canteen Management Committee. But the contention that employees of this category can be Railway employees by reason of their non-inclusion or absence of provision in Establishment Code can hardly be accepted as the Railways have always the power to employ servants by contract which power does not appear to have been expressly or otherwise taken away."

The above decision is directly applicable to the present case. It must be therefore held that the persons working in the Canteen are also employed in the industry carried on by the Railway Administration. Point 1 held against the management.

Points 2 and 3 :

The workmen herein demand wages on a par with those working in the Canteens attached to the Bank of India Staff Canteen and the Customs Office Staff Cooperative Canteen. On behalf of the workmen a comparative table Ex. W-6 is filed giving the wages that are being paid in the Canteen in dispute and the other two canteens. It shows that the basic minimum pay of the manager of the Railway Canteen is Rs. 210/-, the Asstt. Manager Rs. 175/-, Clerks Rs. 165/-, Head Cook Rs. 165/-, Asstt. Cook Rs. 150/-, Tea Master Rs. 150/-, Grinder Rs. 145/- and the Cleaners Rs. 110/- per month. The basic wages of the Railway Canteen are somewhat higher than the basic wages given to the corresponding employees of the other two canteens. While the Bank of India Staff Canteen and the Customs Office Staff Co-operative Canteen pay a uniform Dearness Allowance of Rs. 135/- and Rs. 147/- per month respectively to all categories of workmen the Railway canteen was not paying any Dearness Allowance to its employees till the Union raised a dispute in 1971 June. On 1-1-1974 the management ordered payment of Rs. 10/- per month and Rs. 20/- per month from 1-8-1974 to every employee in question on an *ad hoc* basis. Thereafter the wages remained stagnant. The workmen

demand that they should be paid Dearness Allowance at the same rates as are being paid to the Customs Office Canteen and the Bank of India Staff Canteen. The learned Advocate for the Union stated that the Dearness Allowance and other benefits that are being paid by the Bank of India Staff Canteen which are on the high side need not be taken into account for the purpose of this case. He submitted that the workmen in question would be satisfied if their total wages are brought on a level with the employees of the Customs Office Staff Canteen. They pray that the difference in wages may be paid in the shape of D.A. It may be noticed from the comparative statement of wages Ex. W-6 that the Customs Office Canteen is paying D.A. to its staff at Rs. 147/- p.m. on the basis of the cost of living index standing at 1370 points (in March and April, 1977). He also submits that for every further rise of 10 points in the Consumer Price Index a sum of Rs. 1.50 per month may be paid as additional D.A. to neutralize the rising prices.

Shri Pai, learned Advocate for the Railways objects to this demand on two grounds (1) the wages that are now being paid to the employees of the Railway Canteen are much higher than the minimum wages fixed by the State Government for canteen workers and also the wages paid to the workers working in other canteens in the city. (2) The Railway Canteen which is run on no profit no loss basis has not got the necessary capacity to bear the additional financial burden. In support of the first contention necessary information is not placed before the Court. Similarly there is absolutely no evidence regarding the Management's claim that the wages that are being paid to their Canteen employees compare favourably with those that are being paid to the Canteen workers elsewhere in the city. Shri Pai found fault with the Union for not filing a statement of wages that are being paid by the other canteens in the city. He contends that since this Union represents all the Canteen and hotel workers working in the city an adverse inference must be drawn against them for their failure to produce that information. I do not agree. It is for the party that wants to rely upon this circumstance to place the necessary material before the court. In the absence of such material it must be held that the claim that the salaries of the Canteen workers in question compare favourable with those of their counter-parts working elsewhere in the city of Bombay cannot be accepted.

On the question of higher D.A. that is demanded by the workers it is submitted that since the Canteen in question is not being run on a commercial basis for making profit it cannot bear the additional financial burden. He relies upon the balance-sheets and income and expenditure statements Exs. E-1 to E-8 for the years 1972 to 1975. He also submitted that there would be a furor from the Railway employees working in the workshop if the prices of the eatables are to be raised even by a paise to raise the extra funds necessary to pay the additional Dearness Allowance. He further submits that the persons patronising the Canteen in question being mostly mazdoors drawing very meagre salaries cannot be expected to pay higher prices for the edible articles sold at the Canteen. Shri Gadkari for the Union submits that for the sake of their employees the Railways cannot make the Canteen workers sweat paying them absolutely low wages. He further submits that the doubts expressed by Shri Pai regarding the financial capacity of the Canteen in question to bear the additional burden are more imaginary than real. He invited the attention of this Court to Rule 2834 of Chapter 28 of the Railway Manual, the relevant portion of which runs as follows :—

“2834 :—INCIDENCE OF COST.—When it is proposed to open a canteen, as outlined in the above paragraphs the incidence of cost shall be as under :—

(2) Canteens provided under the Factories Act, 1948 :—

Besides the facilities mentioned in item 1(a) above, the Administration will have to meet the statutory obligations, in respect of the expenditure on providing and maintaining canteens, arising from the provisions of the Factories Act and the rules framed by the State Government thereunder.

NOTE 1. The legal position is that expenditure on account of the following items is to be met by the Adminis-

tration and is not to be taken into account in fixing the cost of meals : (a) the cost of utensils including cooking vessels, plates, glasses and other articles which would be necessary to serve the meals to the workmen ;

(b) the cost of furniture ;

(c) the cost of coal, fuel and electricity ; and

(d) the salaries of the cooks and of the canteen staff.

2. In cases where the canteens are being run on a co-operative basis either by a Co-operative Society or by a Managing Committee of Staff and there subsists a relationship of master and servant between the Co-operative Society/Managing Committee and the canteen employees (i.e. where the canteen staff have been employed by the Co-operative Society/Managing Committee of Staff and not by the Administration as such), the canteen staff are not to be treated as Railway Servants, even though the cost of these staff is reimbursed to the Co-operative Society/Managing Committee under item (d) of Note 1 above.”

From the above it is crystal clear that the entire wage bill of the Canteen provided under the Factories Act has to be borne by the Railways. Therefore the question of financial capacity of the Canteen in question to pay the additional wage bill does not arise for consideration.

The learned Advocate for the Railways Shri Pai has not chosen to dispute the correctness of the statement Ex. W-6 giving the details of wages that are being paid by the Customs Office staff canteen and the Canteen in question to their respective employees. That shows when the Consumer Price Index number for industrial workers for Bombay stood at 1370 points the Dearness Allowance that was being paid by the Customs Office staff canteens was Rs. 147/- per month to bring the total pay to Rs. 193/- for the lowest paid staff in the minimum of the scale. Mr. Gadkari for the Union submits that between 1971 and March, 1977 the cost of living index for industrial workers moved up by 570 points. Therefore there is every justification for the demand for enhancement of pay in the shape of Dearness Allowance. There is force in this contention. The cost of living index figure for industrial workers ending with January, 1977 for Bombay is 1336 as can be seen from the figures given in the Indian Labour Journal in its April issue. Mr. Gadkari has filed a statement Ex. W-7 showing that the Consumer Price Index number stood at 1372 in the months of March and April 1977. This fact is not disputed by the learned Advocate for the Railways. Nor the fact that the cost of living index stood at 800 points in 1971. From this figure 1372 it can be seen that the cost of living index went up nearly by 570 points during the brief period 1971 to 1977. The Canteen management has begun to pay Rs. 20/- per month on an *ad hoc* basis from 1974 August and thereafter nothing more is being paid. Mr. Gadkari for the workmen submits that for the rise of 570 points in the Consumer Price Index number from 1971 to 1977 March a sum of Rs. 85.50 becomes payable by way of Dearness Allowance at the rate of Rs. 1.50 per month for every rise of 10 points. It may be noticed that in the statement of claim the workmen demanded Rs. 3/- for every rise of 10 points in the Consumer Price Index number, but during the course of arguments the demand is limited to Rs. 1.50 for every 10 points rise. For D.A. their claim is on an uniform basis for all categories of workmen, though the basic minimum salary of the cleaner is Rs. 110/- and the basic minimum salary of the Manager is 210/- p.m. Even in the Customs Office staff canteen no distinction is being made in the quantum of Dearness Allowance that is being paid to the Manager down to the Cleaner. Mr. Pai for the Railways says that the fact that the management supplies uniform to their workmen and also issues Railway passes to them from the place of work to their respective places of residence, after six months' of continuous service may also be taken into account in fixing the quantum of D.A. I do not see any justification for reducing the quantum of D.A. on this account. I therefore find that each of the employees of the canteen in question in all the categories is entitled to claim Rs. 85.50 p.m. by way of Dearness Allowance on the basis that the cost of living index in 1971 when the dispute was raised stood

at 800 points and by March and April, 1977 it stood at 1370 at the rate of Rs. 1.50 p.m. for every rise of 10 points in the Consumer Price Index number. Additional Dearness Allowance at the same rate should be paid to the above categories of workmen for every further rise of 10 points in the Consumer Price Index number. There will be a corresponding reduction in the Dearness Allowance at the same rate, when the consumer price index register abas.

The learned Advocate for the workmen pleaded that retrospective effect should be given to the payment of Dearness Allowance at the above rate from the date of demand at least viz. from June 1971. In the alternative he suggested that retrospective effect be given from the date on which this dispute was originally referred to the State Industrial Tribunal by the Government of Maharashtra. Mr. Pai for the Railways submits that this Tribunal is not competent to grant Dearness Allowance from a date prior to the date of reference of the dispute to it. This particular dispute is referred to this Tribunal by the order dated 4-2-1976. I feel that the interest of justice will be sufficiently met if this award is made effective from 1-3-1976. For the period 1-3-1975 to 31-3-1977 the workmen will get Dearness Allowance at the rate of Rs. 73.50 p.m. on the basis of Consumer Price Number standing at 1292 points. Thereafter i.e. from 1-4-1977 they will get Dearness Allowance at Rs. 85.50 p.m. as the Consumer Price Index number went up to 1370. The D.A. directed to be paid under this award is inclusive of the ad-ho Dearness Allowance of Rs. 20/- per month the management has been paying from 1974 onwards. From this amount a sum of Rs. 15/- per month is liable to be deducted as per the usual practice on account of lunch and snacks supplied to the workmen.

Points 2 and 3 are found accordingly.

Point 4 :

Regarding the demand for grant of casual leave and sick leave the Union has not given in the statement of claim the number of days of sick leave and casual leave they are now being given. The management in their written statement has stated that at present they are giving to their employees 21 days leave on full pay besides 15 days workshop holidays every year. This appears to be very fair and no revision in this regard is required. Nor is it asked for. This should amply cover the demand for sick leave and casual leave. It is sufficient if it is ordered that the workers be permitted to accumulate the leave upto 30 days. The statement that the workmen are not covered by the E.S.I. Scheme is not controverted.

In view of the fact that the permissible leave on full pay is 21 days in a year the demand for provision of Casual Leave is not pressed.

Point 4 found accordingly.

Point 5 :

The points referred to this Tribunal for adjudication are answered as indicated below :—

(1) The demand for Dearness Allowance is justified. The workers are granted Dearness Allowance at the rate of Rs. 1.50 p.m. for every rise of 10 points in the Consumer Price Index for Industrial Workers, for Bombay City. For the period 1-3-1976 to 31-3-1977 the workers are entitled to claim Dearness Allowance at the rate of Rs. 73.50 per month on the basis of the Cost of Living Index standing at 1292 points during the period. From 1-3-1977 onwards they are entitled to claim at the rate of Rs. 85.50 per month on the basis of Consumer Price Index standing at 1370 points. There will be a corresponding fall in the D.A. at the same rate of Rs. 1.50 for every fall of 10 points in the Consumer Price Index.

(2) Regarding grant of sick leave and casual leave the demand is not justified as 21 days leave with full pay and 15 workshop holidays is considered to be very fair and ought to cover the demand for casual leave also. The workmen are permitted to accu-

mulate leave with full pay upto 30 days as prayed for.

P. RAMAKRISHNA, Presiding Officer.

[No. L-41012(62)/72-LR/III/D.II(B)]

HARBANS BAHADUR, Desk Officer.

वाणिज्य मंत्रालय

आदेश

नई दिल्ली, 9 जुलाई, 1977

का० घ्रा० 2274.—भारत के निर्यात व्यापार के विकास के लिए शक्ति परिणामित्रों (ट्रामफार्मर) के निर्यात से पहले उन्हें क्वालिटी नियंत्रण और निरीक्षण के अधीन लाने के लिए कनिष्ठ प्रस्ताव निर्यात (क्वालिटी नियंत्रण और निरीक्षण) नियम, 1964 के नियम 11 के उपनियम (2) की अपेक्षानुसार, भारत सरकार के वाणिज्य मंत्रालय के आदेश सं० का० घ्रा० 2240, तारीख 3 जुलाई, 1976 के अन्तर्गत भारत के राजपत्र भाग-2 खंड-3 उप-खंड-(22) में प्रकाशित किए गए थे:-

और उन सब व्यक्तियों से जिन के उससे प्रभावित होने की संभावना है 3 सितम्बर, 1976 तक आक्षेप और सुझाव मांगे गए थे :

और उक्त राजपत्र 3 जुलाई, 1976 को जनता को उपलब्ध करा दिया गया था और उक्त प्रस्तावों के संबंध में जनता से प्राप्त आक्षेपों और सुझावों पर केन्द्रीय सरकार ने विचार कर लिया है ।

अतः अब केन्द्रीय सरकार, निर्यात (क्वालिटी नियंत्रण और निरीक्षण) अधिनियम, 1963 (1963 का 22) की धारा 6 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करने हुए, और निर्यात निरीक्षण परिषद् से परामर्श करने के पश्चात् यह राय होने के कारण कि भारत के निर्यात व्यापार के विकास के लिए ऐसा करना आवश्यक और समीचीन है वह,

- (1) यह अधिसूचित करती है कि शक्ति परिणामित्रों के निर्यात से पहले क्वालिटी नियंत्रण और निरीक्षण किया जाएगा ।
- (2) शक्ति परिणामित्रों का निर्यात (क्वालिटी नियंत्रण और निरीक्षण) नियम, 1977 के अनुसार क्वालिटी नियंत्रण और निरीक्षण के उक्त प्रकार को विनिश्चित करती है जो ऐसा क्वालिटी नियंत्रण और निरीक्षण होगा जो निर्यात से पहले ऐसे शक्ति परिणामित्रों का लागू होगा :
- (3) ऐसे विनिर्देशों को मान्यता देती है जो भारतीय या अन्य राष्ट्रीय मानक, आई० ई० सी० सिफारिशों, या मानक संबंधी मान्यता प्राप्त संगठनों के मानक होंगे, या ऐसे मानक होंगे जो शक्ति परिणामित्रों के लिए मानक विनिर्देशों के रूप में किसी देश के मंत्रालय, या सरकारी विभाग या जन उपादेय संस्थाओं द्वारा अनुमोदित हों :
- (4) अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के दौरान ऐसे शक्ति परिणामित्रों के निर्यात को तब तक के लिए प्रतिबन्धित करती है जब तक कि उनके साथ निर्यात (क्वालिटी नियंत्रण और निरीक्षण) अधिनियम, 1963 (1963 का 22) की धारा 7 के अधीन स्थापित किसी अभिकरण द्वारा जारी किया गया इस आणय का प्रमाण-पत्र न हो कि शक्ति परिणामित्रों का परीक्षण, क्वालिटी नियंत्रण और निरीक्षण संबंधी शर्तों को पूरा करता है और निर्यात योग्य है ।

2. इस आदेश में 'शक्ति परिणामित्र' से लगातार चलने वाले पुंजों से रहित एक ऐसा उपकरण अभिप्रेत है जो एक या अधिक कुण्डलन में प्रत्यावर्ती बोल्टना एवं धारा को विद्युत-चुम्बकीय प्रेरणा द्वारा उसी आवृत्ति

पर सामान्यतः बोल्टता एवं धारा के विभिन्न मानों पर एक या अधिक कुण्डलों में परिवर्तित कर देता है। इसमें एकल फेज के लिए I के बी ए तथा अधिक के एवं बहुफेज प्रचालन के लिए 25 के बी ए तथा अधिक के परिणामित्र, और वितरण परिणामित्र सम्मिलित होंगे परन्तु निम्नलिखित सम्मिलित नहीं होंगे :

- (क) मोटर प्रवर्तक परिणामित्र
- (ख) खनन परिणामित्र
- (ग) वेल्डिंग परिणामित्र
- (घ) जांच परिणामित्र
- (ङ) भू-संपर्कित परिणामित्र
- (च) एक्स-रे परिणामित्र
- (छ) रिएक्टर
- (ज) भट्टी प्रकार के परिणामित्र
- (झ) बूस्टर परिणामित्र, तथा
- (ञ) परिणामित्रों के अन्य विशिष्ट प्रकार

3. ये नियम राजपत्र में प्रकाशन की तारीख को प्रवृत्त होंगे।

[सं० 6(12)/75-नि०नि० तथा नि०उ०]

MINISTRY OF COMMERCE

ORDER

New Delhi, the 9th July, 1977

S.O. 2274.—Whereas for the development of the export trade of India, certain proposals for subjecting Power Transformers to quality control and inspection prior to export, were published as required by sub-rule (2) of rule II of the Export (Quality Control and Inspection) Rules, 1964, in the Gazette of India, Part-II, Section 3, sub-section (ii), dated the 3rd July, 1976 under the Order of the Government of India in the Ministry of Commerce No. S.O. 2240, dated the 3rd July, 1976;

And whereas objections and suggestions were invited till the 3rd September, 1976, from all persons likely to be effected thereby;

And whereas the said Gazette was made available to the public on the 3rd July, 1976.

And whereas the objections and suggestions received from the public on the said proposals have been considered by the Central Government.

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by Section 6 of the Export (Quality Control and Inspection) Act, 1963 (22 of 1963), the Central Government, after consulting the Export Inspection Council, being of opinion that it is necessary and expedient so to do for the development of the export trade of India, hereby;

- (1) notifies that Power Transformers shall be subject to quality control and inspection prior to export;
- (2) specifies the type of quality control and inspection in accordance with the Export of Power Transformers (Quality Control and Inspection) Rules, 1977 as the type of quality control and inspection which shall be applied to such Power Transformers prior to export;
- (3) recognises the specifications which shall be Indian or other National Standards, IEC Recommendations or Standards Recognised Association Standards; or standards approved by a Ministry, or a Government Department or Public Utility of any country as the standard specifications for Power Transformers;
- (4) prohibits the export, in the course of international trade, of such Power Transformers unless the same are accompanied by a certificate issued by any of the agencies established under section 7 of the Export (Quality Control and Inspection) Act, 1963

(22 of 1963), to the effect that the consignment of Power Transformer satisfies the conditions relating to quality control and inspection and is export worthy.

2. In this order 'Power Transformers' shall mean a piece of apparatus, without continuously moving parts, which by electromagnetic induction transforms alternating Voltage and current in one or more windings usually into alternating voltage and current in one or more windings usually at different values of voltage and current and at the same frequency and shall include Transformers of IKVA and above for Single phase and 25KVA and above for Poly phase operation, and Distribution Transformers but shall not include :

- (a) Motor-Starting Transformers,
- (b) Mining Transformers,
- (c) Welding Transformers,
- (d) Testing Transformers,
- (e) Earthing Transformers,
- (f) X-ray Transformers,
- (g) Reactors,
- (h) Furnace type Transformers,
- (j) Booster Transformers, and
- (k) Other special types of transformers.

3. This Order shall come into force on the date of publication in the official Gazette.

[No. 6(12)/75-FI & EI

क्र० घा० 2275.—निर्यात (स्वालिटी नियंत्रण) अधिनियम, 1963 (1963 का 22) की धारा 17 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार निम्नलिखित नियम बनाती है :—

संक्षिप्त नाम तथा प्रारम्भ.—इन नियमों का संक्षिप्त नाम शक्ति परिणामित्र निर्यात (स्वालिटी नियंत्रण और निरीक्षण) नियम, 1977 है।

(2) ये नियम राजपत्र में प्रकाशन की तारीख को प्रवृत्त होंगे।

2. परिभाषाएं.—इन नियमों में, जब तक कि संदर्भ से अन्यथा अपेक्षित न हो—

(क) 'अधिनियम से निर्यात (स्वालिटी नियंत्रण और निरीक्षण) अधिनियम, 1963 (1963 का 22) अभिप्रेत है :

(ख) 'अधिकरण' से अधिनियम की धारा 7 के अधीन कोषीन, मद्रास, कलकत्ता, मुम्बई और दिल्ली में स्थापित अधिकरणों में से कोई एक अधिकरण अभिप्रेत है :

(ग) इस आदेश में 'शक्ति परिणामित्र से लगातार चलने वाले पुर्जों से रहित एक ऐसा उपकरण अभिप्रेत है जो एक या अधिक कुण्डलन में प्रत्यावर्ती बोल्टता एवं धारा को विद्युत-चुम्बकीय परेणा द्वारा उम्मी आवृत्ति पर सामान्यतः बोल्टता एवं धारा के विभिन्न मानों पर एक या अधिक कुण्डलों में परिवर्तित कर देती है। इसमें एकल फेज के लिए के०बी०ए० तथा अधिक के परिणामित्र और वितरण परिणामित्र सम्मिलित होंगे, परन्तु निम्नलिखित सम्मिलित नहीं होंगे :

- (क) मोटर प्रवर्तक परिणामित्र
- (ख) खनन परिणामित्र
- (ग) वेल्डिंग परिणामित्र
- (घ) जांच परिणामित्र
- (ङ) भू-संपर्कित परिणामित्र
- (च) एक्स-रे परिणामित्र
- (छ) रिएक्टर

- (ज) भट्टी प्रकार के परिणामित्र
(झ) बुस्टर परिणामित्र और
(ञ) परिणामित्रों के अन्य विशिष्ट प्रकार।

3. क्वालिटी नियंत्रण और निरीक्षण:—(1) विनिर्माता द्वारा शक्ति परिणामित्रों की क्वालिटी उप-नियम (2) में विनिर्दिष्ट विनिर्माण के विभिन्न स्तरों पर नियंत्रणों का प्रयोग करके एवं इन नियमों से उपबन्ध सारणी में नियंत्रणों के स्तरों पर जांच करके सुनिश्चित की जाएगी।

(2) उप-नियम (1) में वर्णित विनिर्माण के विभिन्न स्तरों पर नियंत्रण निम्नलिखित प्रकार के होंगे:—

(1) खरीदी गई सामग्री तथा घटकों का नियंत्रण:—(क) प्रयोग में लाई जाने वाली सामग्री या घटकों के गुणधर्मों और सहायताओं सहित उनके सविस्तर आयामों को समाविष्ट करते हुए, क्रय विनिर्देश, विनिर्माता द्वारा अधिकृत किए जाएंगे।

(ख) प्रदायकर्ता के जांच प्रमाण पत्र कच्ची सामग्री जैसे कोर शीट, लपेटन तार परिणामित्रों का तेल, और प्रेस बोर्ड, और बुशिंग, आयल टी०सी० पम्प, पंखे रेडिएटर, उपकरण या रिपे जैसे घटकों के लिए पेश किए जाएंगे। जब कच्ची सामग्री या घटकों के लिए प्रदायकर्ता के जांच प्रमाण पत्र प्राप्त हो जाएंगे जब प्रदायकर्ता जांच रिपोर्टों की प्रति जांच (काउंटर चैकिंग) की आवश्यकता नहीं होगी। प्रदायकर्ता की जांच रिपोर्ट न होने की दशा में, यह देखने के लिए कि प्रत्येक परेक्षण क्रय विनिर्देशों के अनुसार है या नहीं उसमें से लिए गए नमूनों की नियमित रूप से जांच की जाएगी।

(ग) खण्ड (ख) में वर्णित से भिन्न आवश्यक घटकों का यह सुनिश्चित करने के लिए निरीक्षण एवं जांच की जाएगी कि वह संरक्षणीय नमूना योजना के अनुसार क्रय विनिर्देशों के अनुरूप है या नहीं।

(घ) निरीक्षण या जांच या दोनों के कर लिए जाने के पश्चात् दोष पूर्ण नमूनों के उचित वृत्तकरण और निपटान के लिए व्यवस्थित पद्धति अपनाई जाएगी।

(ङ) विनिर्माता द्वारा उपर्युक्त नियंत्रणों के सम्बन्ध में पर्याप्त अभिलेख व्यवस्थित रूप से रखे जाएंगे।

(2) प्रक्रिया नियंत्रण:—(क) विनिर्माण की विभिन्न प्रक्रियाओं के लिए विनिर्माता द्वारा विस्तृत प्रक्रिया विनिर्देश अधिकृत किए जाएंगे।

(ख) प्रक्रिया विनिर्देशों से अधिकृत प्रक्रिया के नियंत्रण के लिए उपकरणों या उपकरणों की प्रयोज्य सुविधाएं रहेंगी।

(ग) विनिर्माण की प्रक्रिया के दौरान प्रयुक्त नियंत्रणों के स्थापन के पुनः बर्तन के लिए निर्माता द्वारा पर्याप्त अभिलेख रखे जाएंगे।

(3) उत्पादन नियंत्रण:—(क) विनिर्माण के विनिर्देशों के अनुसार उत्पादन की जांच करने के लिए विनिर्माता के पास या तो स्वयं जांच सुविधाएं होंगी या जहां ऐसी जांच सुविधाएं विद्यमान हों वहां तक उसकी पहुंच होगी विनिर्माता द्वारा उसके पर्याप्त अभिलेख रख जाएंगे।

(ख) परेक्षण से पहले प्रत्येक समुच्चय की अधिकृत निरीक्षण जांच सूची के अनुसार जांच की जाएगी।

(iv) मौसम सम्बन्धी नियंत्रण:—जांच में प्रयोग किए जाने वाले विद्युत मापी उपकरणों और प्रक्रिया नियंत्रण के लिए प्रयोग में आने वाले तापक उपकरणों के समय पर जांच की जाएगी या उनका अंश शोधन किया जाएगा और वृत्त कांड के रूप में विनिर्माता द्वारा अभिलेख रखे जाएंगे।

4. निरीक्षण का आधार:—निर्यात के लिए आशयित शक्ति परिणामित्रों का निरीक्षण यह देखने की दृष्टि से किया जाएगा कि नियम 3 में विनिर्दिष्ट नियंत्रणों का प्रयोग सूसगत स्तरों पर समाधानप्रद रूप में किया गया है और शक्ति परिणामित्र मानक विनिर्देशों के अनुरूप है।

5 निरीक्षण की प्रक्रिया:—(1) शक्ति परिणामित्रों का निर्यात करने का दृष्टिकोण निर्यात कर्ता, संबंधित विनिर्देशों के द्यौरे उपदेशित करते हुए, अधिकरण को लिखित रूप में सूचित करेगा और सूचना के साथ इस आशय का घोषणा पत्र भी देगा कि निर्यात के लिए आशयित शक्ति परिणामित्रों का परेक्षण नियम 3 में अधिकृत क्वालिटी नियंत्रणों का प्रयोग करके विनिर्देश किया गया है और वह परेक्षण इस प्रयोजन के लिए मान्यता प्राप्त विनिर्देश की अपेक्षाओं के अनुरूप है। साथ ही निर्यातकर्ता उस सूचना की एक प्रति निर्यात निरीक्षण परिषद् के निकटतम कार्यालय को भी पृष्ठांकित करेगा। परिषद् कार्यालयों के पते निम्नानुसार हैं:—

मुख्य कार्यालय: निर्यात निरीक्षण परिषद्,

ब्लॉक ट्रेड सेंटर, 14/1-बी, एजरा स्ट्रीट,
(आठवीं मंजिल) कलकत्ता-700001

क्षेत्रीय कार्यालय:

निर्यात निरीक्षण परिषद्,

अमन चौक, पांचवीं मंजिल,

1/13, महर्षि कर्बे रोड,

मुम्बई-400004

निर्यात निरीक्षण परिषद्,

मनोहर बिल्डिंग, महारमा गांधी रोड,

एनकुलम, कोचीन-682011

निर्यात निरीक्षण परिषद्,

3, मरुस्वती मार्ग, म्युनिसिपल मार्केट बिल्डिंग,
(पांचवीं मंजिल) कोरल बाग, नई दिल्ली-110005

(2) निर्यात कर्ता परेक्षण पर लगाया गया पहचान-चिह्न भी अधिकरण को देगा।

(3) उप-नियम (1) के अधीन प्रत्येक सूचना तथा घोषणा, विनिर्माता के परिसर में परेक्षण के भेजे जाने के कम से कम दस दिन पहले अधिकरण के कार्यालय तथा निर्यात निरीक्षण परिषद् में पहुंच जानी चाहिए।

(4) उप-नियम (3) के अधीन सूचना तथा घोषणा प्राप्त हो जाने पर, अधिकरण, अपना यह समाधान कर लेने पर कि नियम 3 में दिए गए पर्याप्त क्वालिटी नियंत्रणों का प्रयोग विनिर्माण की प्रक्रिया के दौरान किया गया है तथा इस संबंध में निर्यात निरीक्षण परिषद् द्वारा जारी किए गए अनुदेशों का, यदि कोई हो, पालन किया गया है, परेक्षण को मान्य विनिर्देशों से अनुरूपता सुनिश्चित करने के लिए शक्ति परिणामित्रों का निरीक्षण करेगा तथा निर्यातकर्ता अधिकरण को ऐसा निरीक्षण करने के लिए सभी आवश्यक सुविधाएं देगा।

(5) निरीक्षण पूरा कर लेने के पश्चात्, अधिकरण परिणामित्रों की, जब वे लकड़ी के केसों में पैक हों, प्रत्येक गेटिंग प्लेट पर शक्ति परिणामित्रों के परेक्षण संबंधी अनुमोदन को तत्काल पंच कर देगा: तथा केसों की, यह सुनिश्चित करने के लिए कि मान के साथ कोई छेड़छाड़ न की जा सके मुहरबन्द किया जा सकता है। परेक्षण की अस्वीकृति की दशा में यदि निर्यात कर्ता चाहे तो परेक्षण अधिकरण द्वारा पंच या मोहर बन्द नहीं किया जाएगा। किन्तु ऐसे मामलों में निर्यात कर्ता अस्वीकृति के विरुद्ध अपील करने का हकदार नहीं होगा।

(6) यदि अधिकरण ने अपना यह समाधान कर लिया है कि शक्ति परिणामित्रों का परेक्षण मान्यता प्राप्त विनिर्देशों की अपेक्षाओं के अनुरूप है तो वह निरीक्षण हो जाने के बाद तीन दिन के भीतर यह घोषित करने हुए निर्यात कर्ता को प्रमाणपत्र देगा कि परेक्षण इस संबंध में क्वालिटी नियंत्रण और निरीक्षण संबंधी शर्तों को पूरा करता है और वह निर्यात-योग्य है:

परन्तु जहां अधिकरण का इस प्रकार का समाधान नहीं होता, वहां वह एक तीन दिनों की अवधि के भीतर, ऐसा प्रमाणपत्र देने से इंकार कर देगा तथा ऐसे इंकार किए जाने की सूचना, उसके कारणों सहित, निर्यात-कर्ता को देगा।

6. निरीक्षण का स्थान : इन नियमों के अधीन निरीक्षण केवल विनिर्माता के परिसर में ही किया जाएगा।

7. निरीक्षण फीस :—वोट पर्यन्त निःशुल्क मूल्य के 0.2 प्रतिशत की दर से फीस, जो प्रति परिणामित कम से कम 100 रु० (एक सौ रुपये) और अधिक से अधिक 2000 रु० (दो हजार रुपये) होगी, नियमित कर्ता द्वारा अभिकरण को निरीक्षण फीस के रूप में संवत् की जाएगी।

8. अपील :—(1) नियम 5 के उप-नियम (6) के अधीन अभिकरण द्वारा प्रमाणपत्र देने से इंकार करने से व्यथित कोई व्यक्ति, इस प्रकार इंकार की उसके द्वारा सूचना प्राप्त होने से दस दिन के भीतर, केन्द्रीय सरकार द्वारा इस प्रयोजन के लिए नियुक्त कम से कम तीन और अधिक से अधिक सात व्यक्तियों के विशेषज्ञों के पैनल को अपील कर सकेगा।

(2) पैनल में, विशेषज्ञों के पैनल की कुल सदस्यता के कम से कम दो सिद्धाई सदस्य गैर-सरकारी होंगे।

(3) पैनल की गणपूर्ति तीन की होगी।

(4) अपील, उसके प्राप्त होने के पन्द्रह दिन के भीतर निपटा दी जाएगी।

सारणी

नियन्त्रण के स्तर

(नियम 3 देखिए)

क्रम सं०	निरीक्षण/जांच की विशिष्टताएं	अपेक्षाएं	नमूने का प्रकार	साट का प्रकार
1	2	3	4	5
I. खरीदी गई सामग्री तथा घटक :	उस प्रयोजन के लिए माध्यता प्राप्त विनिर्देशों के अनुसार	प्रत्येक	प्राप्त हुआ	प्रत्येक परेक्षण
(क) वृक्ष निरीक्षण (कारीगरी तथा फिनिश सहित)				
(ख) सहायता सहित आयाम :				
(1) सबसे मुख्य	यथोक्त	प्रत्येक	यथोक्त	
(2) अन्य	यथोक्त	अभिलिखित अन्वेषण के आधार पर निश्चित किया जाएगा।		
(ग) कोई अन्य अपेक्षा	यथोक्त	यथोक्त	यथोक्त	
II. पूर्ण समुच्चय :				
(क) कुण्डलन प्रतिरोधक के माप	यथोक्त	प्रति एक	—	
(ख) अनुपात, ध्रुवीयता तथा फेज संबंध	यथोक्त	प्रत्येक	—	
(ग) प्रतिबाधा वोल्टता	यथोक्त	प्रत्येक	—	
(घ) भार हानि	यथोक्त	प्रत्येक	—	
(ङ) शून्य भार के समय हानि तथा शून्य भार के समय द्वारा	यथोक्त	प्रत्येक	—	

1	2	3	4	5
(ख) विद्युत रोधन प्रतिरोध	यथोक्त	प्रत्येक	—	
(छ) प्रति वोल्टता प्रेरित करने पर जांच की सहायता	यथोक्त	प्रत्येक	—	
(ज) अलग ओट से आने वाली वोल्टता की जांच सहायता	यथोक्त	प्रत्येक	—	
(झ) ताप वृद्धि की जांच	यदि उपभोक्ता विनिर्दिष्ट करे			
(ट) आवेग वोल्टता की जांच सहायता				
(ड) अन्य कोई जांच				

[सं० 6(12)/75-नि०नि० तथा नि०उ०]

के० बी० बालसुब्रह्मण्यम, उपनिदेशक

S.O. 2275.—In exercise of the powers conferred by section 17 of the Export (Quality Control and Inspection) Act, 1963 (22 of 1963), the Central Government hereby makes the following rules, namely :—

1. Short title and commencement.—(1) These rules may be called the Export of Power Transformers (Quality Control and Inspection) Rules, 1977.

(2) They shall come into force on the date of publication in the official Gazette.

2. Definitions.—In these rules, unless the context otherwise requires,—

(a) "Act" means the Export (Quality Control and Inspection) Act, 1963 (22 of 1963);

(b) "agency" means any one of the agencies established at Cochin, Madras, Calcutta, Bombay and Delhi under section 7 of the Act;

(c) "Power Transformers" means a piece of apparatus without continuously moving parts, which by electro-magnetic induction transforms alternating Voltage and current in one winding into alternating Voltage and current in one or more windings usually at different values of voltage and current and at the same frequency and includes Transformers of 1 KVA and above for single phase and 25 KVA and above for Poly phase operation, and Distribution Transformers but shall not include :

- Motor-Starting Transformers,
- Mining Transformers,
- Welding Transformers,
- Testing Transformers,
- Earthing Transformers,
- X-ray Transformers,
- Reactors,
- Furnace type Transformers,
- Booster Transformers, and
- Other special types of transformers.

3. Quality Control and Inspection.—(1) The quality of Power Transformers shall be ensured by the manufacturer by exercising the controls at different stages of manufacture specified in sub-rule (2) together with the levels of controls specified in the Table annexed to these rules.

(2) The controls at different stages of manufacture mentioned in sub-rule (1) are as follow :—

(i) Bought out materials and components control :

(a) Purchase specifications shall be laid down by the manufacturer incorporating the properties of materials or components to be used and the detailed dimensions thereof with tolerances.

(b) Supplier's test certificates shall be produced for ray material like core Sheets, Winding Wires, Transformers Oil, and Press Board, and for components like Bushings, Oil T. C., Pumps, Fans, Radiators, Instruments/or Relays. When supplier's test certificates are obtained for raw materials or components, no counter checking of the supplier's test reports shall be required. In the absence of supplier's test report, samples from each consignment shall be regularly tested to check up its conformity to the purchase specifications.

(c) The incoming components other than those mentioned in clause (b) shall be inspected and tested for ensuring conformity to purchase specifications against statistical sampling plan.

(d) After the inspection or tests or both are carried out, systematic methods shall be adopted for proper segregation disposal of defectives.

(e) Adequate records in respect of the above mentioned controls shall be systematically maintained by the manufacturer.

(ii) Process Control :

(a) Detailed process specifications shall be laid down by the manufacturer for various process of manufacture.

(b) Equipment or instrumentation facilities shall be adequate to control the process as laid down in the process specifications.

(c) Adequate records shall be maintained by the manufacturer to enable the verification of the controls, exercised during the process of manufacture.

(iii) Product Control :

(a) The manufacturer shall either have his own testing facilities or shall have access to such testing facilities existing elsewhere to test the product as per the standard specifications. Adequate records thereof shall be maintained by the manufacturer.

(b) Each and every assembly shall be checked against a laid down inspection check list prior to despatch.

(iv) Metrological Control.—Electrical measuring instruments used in testing, and critical instruments used for process controls shall be periodically checked or calibrated and records shall be maintained by the manufacturer in the form of history cards.

4. Basis of Inspection.—The inspection of Power Transformers intended for export shall be carried out with a view to seeing that the controls specified in rule 3 have been exercised at the relevant levels satisfactorily and the Power Transformers conform to the standard specifications.

5. Procedure of Inspection.—(1) The exporter intending to export consignments of Power Transformers shall give intimation in writing to the agency indicating the details of the contractual specification and submit along with such intimation a declaration that the consignment of Power Transformers intended for export has been manufactured by exercising the quality controls as laid down in rule 3, and that the consignment conform to the requirements of the specification recognised for this purpose. The exporter shall at the same time endorse a copy of such intimation to the nearest office of the Export Inspection Council. The addresses of the Council offices are as under :—

Head Office —

Export Inspection Council
'World Trade Centre'
14/1B, Ezra Street, 7th Floor,
Calcutta-700001.

Regional Offices —

Export Inspection Council
'Aman Chambers' 4th Floor,
113, M. Karve Road,
Bombay-400004.

Export Inspection Council
Manohar Buildings,
Mahatma Gandhi Road,
Ernakulam,
Cochin-682011.

Export Inspection Council,
3, Sarswati Marg,
Munkpal Building,
4th Floor, Karol Bagh,
New Delhi-110005.

(2) The exporter shall also furnish to the agency the identification marks applied on the consignment.

(3) Every intimation and declaration under sub-rule (i) shall reach the office of the agency and the Export Inspection Council not less than ten days prior to despatch of the consignment from the premises of the manufacturer.

(4) On receipt of the intimation and declaration under sub-rule (3), the agency, on satisfying itself that during the process of manufacture, adequate quality control as provided in rule 3 have been exercised and the instructions if any, issued by the Export Inspection Council in this regard have been observed, shall carry out the inspection of Power Transformers to ensure conformity of the consignment to the recognised specification and the exporter shall provide all necessary facilities to the agency to enable it to carry out such inspection.

(5) After completion of inspection, the agency shall immediately punch their approval of the consignment of Power Transformers on each rating plate of the Transformers when packed in wooden cases, the cases may be sealed so as to ensure that the goods cannot be tampered with. In case of rejection of a consignment if the exporter so desires, the consignment may not be punched or sealed by the agency. In such cases however, the exporter shall not be entitled to prefer any appeal against the rejection.

(6) When the agency is satisfied that the consignment of Power Transformers complies with the requirements of the recognised specifications, it shall issue within three days, after the completion of inspection, a certificate to the exporter declaring that the consignment satisfies the conditions relating to quality control and inspection in this regard and is export-worthy.

Provided that where the agency is not satisfied, it shall within the said period of three days refuse to issue such certificate and communicate such refusal to the exporter along with the reasons therefor.

6. Place of Inspection.—Inspection under these rules shall be carried out at the premises of the manufacturer only.

7. Inspection Fee.—A fee at the rate of 0.2 per cent of f.o.b. value subject to a minimum of Rs. 100 (Rupees one hundred) and a maximum of Rs. 2000 (Rupees two thousand) per transformer shall be paid by the exporter to the agency as inspection fee.

8. Appeal.—(1) Any person aggrieved by the refusal of the agency to issue a certificate under sub-rule (6) of rule 5, may, within ten days of the receipt of the communication of such refusal by him prefer an appeal to a Panel of Experts consisting of not less than three but not more than seven persons appointed for the purpose by the Central Government.

(2) The Panel shall consist of at least two thirds of non-officials of the total membership of the panel of experts.

(3) The quorum for the Panel shall be three.

(4) The appeal shall be disposed of within fifteen days of its receipt.

THE TABLE
LEVELS OF CONTROL
(See rule 3)

Sl. No.	Particulars of inspection/test	Requirements	Sample size	Lot size
1	2	3	4	5
I	Brought out materials and components :	As per standard specification recognised for the purpose.	Each	Each consignment received
	(a) visual inspection (including workmanship and finish)			
	(b) Dimensions with tolerances :			
	(i) Critical	—do—	Each	—do—
	(ii) Others	—do—	To be fixed on the basis or recorded investigation	—do—
	(c) Any other requirements	—do—	—do—	—do—

1	2	3	4	5
II.	Complete Assembly :			
(a)	Measurements of winding resistance	—do—	Each	—
(b)	Ratio, Polarity and phase relationship	—do—	Each	—
(c)	Impedance voltage	—do—	Each	—
(d)	Load Losses	—do—	Each	—
(e)	No-load losses and no-load current	—do—	Each	—
(f)	Insulation resistance	—do—	Each	—
(g)	Induced over voltage withstand test	—do—	Each	—
(h)	Separate source voltage withstand test	—do—	Each	—
(j)	Temperature rise test	If specified by the customer.		
(k)	Impulse Voltage withstand test			
(m)	Any other test			

[No. 6(12)/75—EI & EP]

K.V. BALASUBRAMANIAM, Dy. Director

